श्री अमरापुर वाणी

प्रथम भाग

श्री श्री १००८ सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज

❀ ॐ ❀

।। श्री सत्नाम साक्षी ।।

श्री अमरापुर वाणी

प्रथम भाग

★

रचयिता :—

श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदायाचार्य पूज्यपाद

ब्रह्मनिष्ठ ब्रह्मश्रोत्रिय

श्री श्री १००८ सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज

★

प्रकाशक :—

श्रीमान् १०८ महा मण्डलेश्वर स्वामी सर्वानन्दजी महाराज

और प्रेम प्रकाश मण्डल

अमरापुर स्थान, जयपुर

प्रथम आवृत्ति	सजिल्द	सर्वाधिकार सुरक्षित
कापी ३०००	मूल्य १-२०	संवत - २०२४

प्राक्कथन

सहृदय सज्जनवृन्द !

मानव के इतिहास से यह विदित हुआ है कि जब यह जीव विषय विकार के दावानल में जलते हुए किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाता है उस समय परमपिता परमेश्वर स्वयं अथवा महात्मा के रूप में इस भूमण्डल पर अवतरित होता है। उसी प्रकार सिन्धु प्रान्त में जब यवनों के सहवास से हमारे भारत पुत्रों सिन्धियों का जीवन अपने धर्म में भ्रान्त-सा हो गया, उस समय हैदराबाद जिले के खण्डू नामक गांव में परम त्याग मूर्ति श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने भगवद्भक्त श्री चेलाराम के घर माता कृष्णादेवी को गोद में जन्म लिया।

श्री सद्गुरुदेवजी ने बचपन में ही ईश्वर भक्ति के रहस्य को जान लिया। उन्होंने परमात्मा की एक अखण्ड ज्योति जगत् के स्थावर तथा जंगम जीवों में देखी। उसी धार्मिक तथा सांस्कृतिक एकता तथा अखण्डता को लाने के लिये स्वामीजी ने अपने अनुभव से मनोमुग्ध करने वाले भजन गाये। स्वामीजी के भजनों में एक ओर तो परमात्मा के मिलन विषयक विरह हैं तो दूसरी ओर परमात्मा के दर्शन जन्य आनन्द तथा हृदयगत बेपरवाही का समुचित वर्णन है। श्री गुरुदेव की वाणी में सरसता तथा गंभीरता है। स्वामीजी की वाणी श्री कृष्ण की मुरली सी है। जिसने अनन्त प्रेमियों को भगवद्भक्ति से आकर्षित कर दिया। हमारे अध्यात्म सिन्धु देश के श्री कृष्ण स्वामी जी ही थे। जिनको शिक्षा आधुनिक

स्कूलों तथा कालेजों में नहीं मिली वरन् निर्जन गुफाओं में बहुत दिनों तक योगाभ्यास करने से प्राप्त हुई। यही कारण है कि उनकी अनुभव वाणी में रूक्षता नहीं है किन्तु मधुरता है। स्वामीजी ने अपने आत्मानुभव की मुरली से कितने ही मोह जाल में फंसे हुए अर्जुन की तरह प्रेमियों को छुड़ाया। स्वामीजी धार्मिक पाखण्ड का खण्डन करते समय कोई भी अप्रिय अक्षर नहीं कहते। वे सब जीवों में परमात्मा की अखण्ड ज्योति का दिव्य दर्शन पाते थे। अतः उनकी वाणी में एक शाश्वत सत्य का दर्शन होता है कारण कि उसमें सन्मार्ग की ओर अग्रेसर करने की एक आकर्षण शक्ति समाई हुई है। जहां स्वामीजी ने इस अमर वाणी का गान किया वह सिन्धु प्रदेश के टण्डाआदम शहर में अमरापुर स्थान के नाम से विख्यात है। अतः स्वामीजी की वाणी और स्थान दोनों अमर हैं। उनकी अमर वाणी अमरापुर स्थान के कण कण में आज भी गुञ्जरित होती है। उनकी अमर वाणी के सुवासबू को जिन प्रेमी भ्रमरों ने संसार के समस्त रसों से विरक्त होकर पान किया वे आज भारत के कोने कोने में एक प्रेम की वाटिका को लगाकर स्वामी जी के दिव्य सन्देश का प्रचार करते हैं।

श्री सद्गुरुदेव जी सर्वदा परोपकारी थे। उन्होंने अपनी पावन यात्रा से कितने ही दुःखियों के शारीरिक तथा मानसिक समस्त दुःखों को दूर किये। स्वामी जी समाज सेवा को प्रभु की सेवा मानते थे। अतः उनकी वाणी में समाज सेवा के काफी पद मिलते हैं। स्वामी जी ने व्यवहार तथा परमार्थ उभय का उपदेश दिया है। व्यवहार, परमार्थ का एक स्थूल दर्शन है जैसे ब्रह्म का विराट स्वरूप। परमार्थ को सिद्ध करने के लिये व्यवहारिक कर्तव्यों तथा नीतियों का पालन करना नितान्त आवश्यक है। अतः स्वामी जी के पदों में एक ओर परम सत्यस्वरूप ब्रह्म के रहस्य की अनुपम झांकी अनुभव करने

को मिलती है, तो दूसरी ओर पातिवृत्य, माता पिता की सेवा. साधु सेवा, गरीबों और अनाथों की सेवा करने का मधुर उपदेश श्रवण करने को मिलता है। यही है स्वामी जो की विद्वता था पांडित्य जिससे व्यवहार और परमार्थ दोनों सिद्ध हो जाते हैं।

श्री सद्गुरुदेवजी की अमर वाणी से कुछ अंश निकाल कर इस रचना में संकलित किया जा रहा है। यह अमर वाणो अमरापूर वाणो से विख्यात है। उसका कारण यह है कि स्वामी जो ने यह वाणो प्रथम अमरापुर स्थान में गायो। अतः अमर वाणो ही अमरापुर वाणो बन गयी थी।

अतः प्रिय पाठकों से निवेदन है कि इस अमरापुर वाणी को एक कागजों की छोटी पुस्तिका ही नहीं समझें किन्तु हृदय के मनोमालिन्य को दूर करने वाली उपदेश माला। यह शरीर का हार नहीं किन्तु हृदय का हार है जिसको पहनने से शारीरिक और मानसिक बल बढ़ेगा तथा अनुपम यशः का प्रचार होगा। जिससे यह एक महान् विभूति बन सकता है।

सेवा में—प्रेम प्रकाश मंडल

श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदायाचार्य पूज्यपाद

श्री श्री १००८ सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज

विषय सूची

राग विहाग

राग धनाश्री

राग टोड़ी

भजन	पृष्ठ

राग सोरठ

राग खम्भाट

राग मारू

भजन	पृष्ठ

राग सारंग

राग पूरब

राग कामोल

भजन	पृष्ठ

राग कल्याण

राग कंसो

राग पहाड़ी

राग पीला

राग मांझ

राग जोग

श्री १०८ स्वामी सर्वानन्दजी महाराज

॥ श्री सत् नाम साक्षी श्री गुरुपरमात्मने नमः ॥

अमरापुर वाणी भाग पहला

❀ राग भैरव भजन ❀

गुर दयाल प्रतिपाल प्रभु पार तारो ।
प्रभु पार तारो हरिदास मैं तुम्हारो ॥ टेक ॥

तूं अडोल तूं अबोल तूं अमोल सारो ।
तूं अकाल सर्वकाल कठिन काल टारो ॥ १ ॥

सर्वसार तूं सतार, अगम तूं अपारो ।
निरहकार निर्विकार नामदे उबारो ॥ २ ॥

जीवपिंड ब्रह्मण्ड, सर्व तब पसारो ।
परम चण्ड ले अखण्ड नाथ मोहि सुधारो ॥ ३ ॥

विश्वपाल तुम गोपाल, मैं हूँ बाल थारो ।
कहे टेऊँ ताप तीन, पाप सब निवारो ॥ ४ ॥

राग भैरव

भक्ति ज्ञान दान देहि, दीन के दयाल जी ।
दीन के दयाल मोहि, जानि अबुद्ध बालजी ॥टेक॥

वाम धाम सुत न मांगू, नहीं रत्न लाल जी ।
अखण्ड अभय दान मांगू, हरो कठिन काल जी ॥ १ ॥
ऋद्धि न मंगू सिद्धि न मंगू, नहीं मंगू माल जी ।
साध संगत सेव मंगू, तोड़ जगत जाल जी ॥ २ ॥
राज ताज नहीं मंगू, विषय सुख विशाल जी ।
धर्म दया धीर मंगू, करो उर उजाल जी ॥ ३ ॥
स्वर्ग सुख नाहिं मंगू, मंगू पद अकाल जी ।
कहत टेऊँ नजर धरे, नाथ कर निहाल जी ॥ ४ ॥

राग भैरव

क्यों करते हो मेरा मेरा जग में कोई नहीं है तेरा ॥टेक॥

सब जूठे जगत के हैं नाते, क्यों तां पर तुम इतराते ।
जानो पंछी ज्यों वृक्ष बसेरा, जाको अपना कहत है प्यारे ॥१॥
अन्त छोड़ जायेंगे सारे, जब काल ने आयके घेरा ।
मैं मेरा जिसी ने है कीना, जम फास तिसे गल–दीना ॥२॥

यह सन्त—जनों ने टेरा, कहे टेऊँ अबी भी सम्हालो ।
मैं मेरे को मन से निकालो, मिटे जन्म मरण का फेरा ॥३॥

राग भैरव

रे नर जागो गुरु—पद लागो, पकड़ो चोर विकार ॥ टेक ॥

यह जगत मुसाफिर खाना, तुम दो दिन का महमान ।
है आखिर तुझ को है जाना, करिये वेग सम्भार ॥१॥
जप राम नाम दिन राती, पावो उर अन्तर झाती ।
तुम देखो अपनी जाती, गुरु का शब्द उच्चार ॥२॥
कर साध संगति निरधारा, पावो सम दम विचारा ।
तुम धारे धर्म अचारा, देखो हरि दीदार ॥३॥
तुम पांच पांच को हरिले, उर चार चार को धरिले ।
कहे टेऊँ हरि सुमिरले, जासे होय उधार ॥४॥

राग भैरव

गुरूजी मुझको दर्शन देवो जी ! !

तुम हो सद्‌गुरू सागर के सम, मैं हूँ सदृश मीना ।
एक पलक भी तुम बिन मेरा, जग में होत न जीना ॥१॥
तुम हो सद्‌गुरू बादल के सम, मेरा मन है मोरा ।
तुझ को मैं नित ऐसे चाहत, जैसे चान्द चकोरा ॥२॥
तुम हो सद्‌गुरु बूंद स्वांती, चात्रक सा मन मेरा ।

भँवरे को ज्यों फूल भावता, त्यों मुझ दर्शन तेरा ॥३॥
कहता टेऊँ तुझ बिन सद्गुरु, कबहूँ धीर न आवे ।
रैन दिवस तेरे दर्शकी, मुझ को प्यास सतावे ॥४॥

❁ राग रामकली ❁

जगत पति पूरण परमेश्वर, दे यह मुझ को दाना जी ॥टेक॥
कथा श्रवण कर सन्तन संग में, करूं प्रेम रस पाना जी ।
मञ्जुल रूप मनोहर स्वामी, आप करो उर थाना जी ॥१॥
शील शोच शुच सयंम सेवा, करूं प्राप्त स्नाना जी ।
सम दम श्रद्धा धीरज धारे, करू हरिगुन गाना जी ॥२॥
उप सम ज्ञान विवेक विज्ञाना, देके भ्रम भुलाना जी ।
मुक्ति युक्ति आत्म शक्ति, भक्ति दे प्रधाना जी ॥३॥
कहे टेऊँ कर जोड़ पुकारे, मेटे गर्व गुमाना जी ।
अहं ब्रह्म की निष्ठा देके, देवो पद निर्वाणा जी ॥४॥

राग रामकली

सोवत जागत नाम जपीजे, गुरु चरणे चित दीजेरे ॥टेक॥
पहला साधन कर गुरु मूरत का, अन्तः २ करण मलीजे रे ।
विषया त्याग होय वैरागी, पावन पाठ पढीजे रे ॥१॥
दूजा साधन कर गुरुके वचने, ज्ञान गघन में कीजे रे ।
सत्य असत्य का कर वीचारा, सार उसीसे लीजे रे ॥२॥

तीजा साधन कर गुरु दीपक का, ता में ध्यान धरीजे रे ।
सम दम श्रद्धा समाधान से, इन्द्रियां दमन करीजे रे ।।३।।
चोथा साधन कर गुरु कुदरत का, किस को नाहिं कहीजे रे ।
ब्रह्म प्राप्ति बन्ध हानि कर, ऐसा मोक्ष गहीजे रे ।।४।।
कहता टेऊँ तीन लोक में, निर्भय होय रहीजे रे ।
अकड़कला में अमृत बरसे, अमर प्याला पीजे रे ।।५।।

राग रामकली

अमृत वेले ऊठ जिज्ञासू, फेर स्वास की माला रे ।।टेक।।
सद्गुरू के मूरत का मन में, धरिये ध्यान विशाला रे ।
गुरु मन्त्र में सुरति समाओ, जग से होय निराला रे ।।१।।
नाभ कंवल से प्राण उठाए, दसम द्वार कर आला रे ।
नाद अनाहत बाजत तांही, सुनिये शब्द रसाला रे ।।२।।
नाड़ी कुण्डलनि को जागाए, खोलो अनुभव ताला रे ।
कोट रवि शशि आदि ज्योतिका, तहां प्रचंड उजियाला रे ।३।
पाप ताप नहीं हर्ष शोक पुनि, जहां न काल कराला रे ।
कहे टेऊँ तहिं चल कर देखो, आत्म पुरुष अकाला रे ।।४।।

राग रामकली

सद्गुरु के संग गुरु मुख जागी, हरदम हरिगुन गाओ रे ।।टेक।।
सद्गुरु को नित सेवा करके, दिलको साफ बनाओ रे ।
पूरण श्रद्धा से उर अन्तर, गुरु के चरण ध्याओ रे ।।१।।

सत्संग सम सन्तोष विचारा, इन से प्रीति लगाओ रे ।
चलकर मोक्ष मन्दिर के माहीं, आत्म दर्शन पाओ रे ॥२॥
बैठ अकेला आसन मारे, सुरति शब्द मिलाओ रे ।
अनन्य अभ्यास करे विश्वासा, अनुभव ज्योति जगाओ रे ॥३॥
कहत टेऊँ गुरु प्रसादे, सुनिमें सहज समाओ रे ।
मन के फुरने सर्वं मिटाए, अपने घर में आओ रे ॥४॥

राग रामकली

हरदम हृदय में हरि ध्याओ, झूठा सकल जहाना रे ॥टेक॥
स्वार्थ के ये साथी सारे, अन्त काम नहीं आना रे ।
मगपन्थी सभ जान कुटम्ब यह, वृथा नेह लगाना रे ॥१॥
तेरे देखत केते चल गये, रहा न को सुलताना रे ।
इक दिन तुझ को भी है जाना, किस का यह ना ठिकाना रे ।२।
साथ नहीं कच्छु ले आया, तुम नहीं साथ ले जाना रे ।
मेरा मेरा कहके मूर्ख, काहि करत अभिमाना रे ॥३॥
कह टेऊँ जा सन्तनि शरने, चाहत जे कल्याना रे ।
साध संगति बिन कोई न तरिया, भाषत वेद पुराना रे ॥४॥

राग रामकली

सन्तों के सत्संग में जाकर, गोविन्द के गुन गाओ रे ॥टेक॥
साध संगति की सेवा कर के, हरि से हेत लगाओ रे ।
राम नाम को पल पल सुमरे, सकल पाप मिटाओ रे ॥१॥

और भवन सब दुःख मय त्यागे, अपने घर में आओ रे ।
पांच कोश का खोलि किवाड़ा, आत्म दर्शन पाओ रे ॥२॥
जीव ईश की टूटे उपाधी, वृति ब्रह्म समाओ रे ।
कहता टेऊँ बन्धन तोड़े, निर्भय नगर बसाओ रे ॥३॥

राग रामकली

सद्गुरु कृपा करके, मुझ को साची सीख सुनाई रे ॥टेक॥
स्वाँस स्वास सिमरन कर मैं, आठ पहिर लिवलाई रे ।
आशा तृष्णा ममता त्यागे, मन की मैल मिटाई रे ॥१॥
गुरु मन्त्र से प्रीति लगाई, और बात बिसराई रे ।
आतम पद में स्थित होकर, सहज समाधी लगाई रे ॥२॥
जागृत स्वप्न सुषोप्ति छोड़े, तुरिया ताड़ी लाई रे ।
निरभय घर में बासा करके, जम को चिन्त चुकाई रे ॥३॥
कहता टेऊँ हृदय भीतर, अनुभव ज्योति जगाई रे ।
अन्तर बाहिर भया उजियाला, अविद्या रहो न राई रे ॥४॥

राग रामकली

यह शिक्षा उर धरनारे, मन यह शिक्षा उर धरना रे ॥टेक॥
धीरज धर्म दया को धारे, सत्कर्मों को करना रे ।
सत्पुरुषों का सत्संग करके, आज्ञा माँहि विचरना रे ॥१॥
काम क्रोध मद लोभ मोह पुनि, पांच विषय को हरना रे ।
कूड़ कपट छल चोरी यारी, डाका पन से डरना रे ॥२॥

देह गेह की ममता त्यागे, शरण राम की पड़ना रे ।
हरि नाम का सिमरण करके, भवसागर से तरना रे ॥३॥
सद्गुरु सेनिज ज्ञान पायके, ब्रह्म-आनन्द मन भरना रे ।
कहै टेऊँ उस आनन्द माहि, मन बुद्धि अर्पण करना रे ॥४॥

राग रामकली

वृथा जन्म गवांया क्यों तुम, वृथा जन्म गवांया रे ॥टेक॥
सेवा सिमरण यज्ञ दान से, मानुष तन यह पाया रे ।
साध सगन्ति नहीं कबहुं कीनी, दुर्जन का संग भाया रे ॥१॥
पाप कर्म बहु छल बल करके, धन को बहुत कमाया रे ।
दीनजनों को दान न दीना, नहीं खर्चा नहीं खाया रे ॥२॥
गंगा आदि तीर्थ-निमें जा, फिर फिर जन्म बिताया रे ।
आत्म तीर्थ को नहीं परसिया, ज्ञान गंग नहीं नाया रे ॥३॥
भाव भक्ति निष्काम कर्म तजि, काम्य कर्म कमाया रे ।
कहता टेऊँ भोग विषय में, स्वास अमोल लुटाया रे ॥४॥

राग रामकली

साहिब तेरे दर पर मेरी, हर दम तोबह जारी रे ॥टेक॥
साध संगत में सुनिया जब मैं, प्रभु न्यायकारी है ।
तब से मेरे हृदय भीतर, भय उपजी अतिभारी है ॥१॥
काम क्रोध मद मोह ममत में, मैंने उम्र गुजारी है ।

ना जानों क्या होगा मुझ पर, यह चिन्ता हरबारी है ॥२॥
दामनपालक पापहरण तुम, महिमा वेद उचारी है ।
ऐसा सुनकर शीघ्र मैंने, तेरी ओट निहारी है ॥३॥
पहिले के अघ क्षमा कीजिये, तुम हरि परम उदारी है ।
कहे टेऊँ अब सुमति दीजे, यही विनय हमारी है ॥४॥

राग रामकली

श्रवण देके सनिये साधो, अद्भूत यह इसरारा जी ॥टेक॥
इक चीटी ससुराल चली, ले संग में सखी अपारा जी ।
फूंक मार उस रस्ते के सब, दिया उड़ाय पहाड़ा जी ॥१॥
उस चींटीने नवमन अञ्जन, पाया नयन मंझारा जी ।
ऊँची मन्ज़िल चढ़ि कर देखा, नजर पड़े न अकारा जी ॥२॥
उस चींटी ने कोटी कूञ्चर, बान्धा निज चरनारा जी ।
उन हाथयुनि को फेक दिया, ले सागर के उस पारा जी ॥३॥
कहे टेऊँ उस चींटी संग मैं, पाया आनन्द भारा जी ।
इस चींटी को सो जन पावे, जो है गुरु का प्यारा जी ॥४॥

❁ राग प्रभाती ❁

पार ब्रह्म है अगम अगोचर, साक्षी स्वयं प्रकाशी ॥टेक॥
नाना विधि जग मांहि रचाई, अद्भूत जूनि चौरासी ।
तामें रहता आप व्यापक, अलख पुरुष अविनासी ॥१॥

ब्रह्मा विष्णु शंकर गणपति, यति सति सन्यासी ।
गाय २ कहिं पार न पावत, सर्व मौन रह जासी ॥२॥
कहे टेऊँ सो मंगल दाता, दुःख भञ्जन सुखरासी ।
जो तिसि ध्यावे मुक्ति पावे, टूटे तां यम फासी ॥३॥

राग प्रभाती

रे मन हरि का स्मरण करले, श्रद्धा मन में धारे ॥टेक॥
हरि सिमरण बिन और साधन, जन्म मरण नहीं टारे ।
हरि सिमरण ही तत् क्षण तुझ को, भवसागर से तारे ॥१॥
हरि सिमरण की महिमा भारी, वेद पुराण उचारे ।
हरि का सिमरण निस्वासर करू, जे सुख चाहों प्यारे ॥२॥
हरि सिमरण से हेत करो तुम, फुर्णा सर्व निवारे ।
हरि सिमरण का अमृत पी कर, पावो मोक्ष द्वारे ॥३॥
हरि सिमरण को बेला है यह, कहते सन्त पुकारे ।
कहे टेऊँ हरि सिमरो तांते, मानुष देह मंझारे ॥४॥

राग प्रभाती

अमृत बेले गुरु मुख जागी, गुरु का शब्द कमाओ रे ॥टेक॥
पहिला पद पूरक से मेले, दूजा मेलो रेचक से ।
कुम्भक से फिर हृदय अन्तर, सारा शब्द चलाओ रे ॥१॥
पहिला पद तुम ब्रह्म पछानो, दूजा मानो आतम को ।

उलट सुलट कर सिमरण तांका, पांचो भेद मिटाओ रे ॥२॥
शब्द गुरु का सीप समाना, दो पद दो पुड़ जान तिसे ।
अभेद रूपी मोती तामें, अपनी वृति लगाओ रे ॥३॥
कहता टेऊँ पूर्ण गुरु से, सिमरण की विधि ले करके ।
अजपा जाप जपे निस्बासर, निर्भय नगर बसाओ रे ॥४॥

राग प्रभाती

अमृत वेले अमृत बरसे, पीवो भर कर पियाला रे ॥टेक॥
योगी पूर्ण योग कल से, इसमें ध्यान लगाते हैं ।
योगानन्द मय अमृत पीवत, होय मग्न मत वाला रे ॥१॥
ज्ञानी पूर्ण ज्ञान कला से, आत्म ध्यान लगाते हैं ।
ब्रह्मानन्द मय अमृत पीवत, मार भरम को भाला रे ॥२॥
प्रेमी पूर्ण प्रेम कला से, गोविन्द के गुण गाते हैं ।
राम नाम मय अमृत पीवत, मन करे उजाला रे ॥३॥
प्रातः काल उठ जैसे ये, सब अमृत रस को पीते हैं ।
कहे टेऊँ त्यों तुम भी पीवो, जग से होय निराला रे ॥४॥

राग प्रभाती

स्वास स्वास में गुरु मुख हरदम, गुरु का शब्द कमावो रे ॥टेक॥
लाल अमुल है उर कोठी में, लगा भरम का ताला है ।
शब्द कुञ्जी से खोले तांकी, देखो और दिखावो रे ॥१॥

देह धरणी में है इक कूआँ, आनन्द अमृत तामें है ।
शब्द रस्सी से मन घट भर कर, पीवो और पिलावो रे ॥२॥
वदन बगीचा इन्द्रिय तरूवर, ग्यान ध्यान फल फूला है ।
शब्द लकुट से तांको लेकर, खावो और खिलावो रे ॥३॥
जिन जिन गुरु का शब्द सुमरिया, सरिया तिन का काजा है ।
कहे टेऊँ तुम गुरु कृपा से, गुरु के शब्द समावो रे ॥४॥

राग प्रभाती

अमृवेले ऊठ जिज्ञासु आत्म का नित ध्यान धरो ॥टेक॥
गंगा यमुना काशी आदिक, जग में तीर्थ जेते हैं ।
आत्म सम ना तीर्थ कोई, तामें नित स्नान करो ॥१॥
इन्द्र लोक रवि चन्द्र लोक लौं, लोक ब्रह्मादि जेते हैं ।
आत्म जैसा लोक न कोई, तामें नित स्नान करो ॥२॥
शब्द रूप रस स्पर्ष आदि, विषयों के रस जेते हैं ।
आत्म के सम रस ना कोई, तांका नित ही पान करो ॥३॥
कहे टेऊँ ब्रह्मा शिव विष्णु, आदि देवता जेते हैं ।
आत्म जैसा देव न कोई, तांका नित गुन गान करो ॥४॥

राग प्रभाती

रे मन मिल तूं अलख पुरुष से, मिलने का यह वेला रे ॥टेक॥
जग के सारे बन्धन तोड़े, विषय वासना से मन मोड़े ।

जोग जुगति में मन को जोड़े, करले जन्म सुहेला रे ॥१॥
सदाचार में रह कर निस्दिन, वान्धो आसन पदम सिद्धासन ।
अन्तमुर्ख हो हृयद में सुन, नाद अनाहत हेला रे ॥२॥
एड़ा पिंगला उलट सुलट कर, सुष्मन अन्तर श्रुति शब्द धर ।
ध्यान लगाए त्रिकुटि भीतर, देखो अद्भूत खेला रे ॥३॥
कहे टेऊँ गुरु शब्द सहारे, वृति चढ़ावो दसम द्वारे ।
निज निर्बीज समाद्धि धारे, करो ब्रह्म से मेला रे ॥४॥

राग प्रभाती

अजब अजायब कुदरत हम को, सद्गुरु देव लखाई ।
इस कुदरत को जो जन जाने, सो मेरा गुरु भाई ॥टेक॥
स्वास मांस बिन पञ्छी पञ्जिरे, देखत रहत उदासी ।
फूटे पिञ्जर नहिं कहिं जावे, अचल रहे अबिनासी ॥१॥
एक बिरच्छ पर सम दो पंछी, नाम काम भिन्न जाके ।
ऊठत समय एक हो जाते, भेद मिटत सब तांके ॥२॥
ऊपर मूल डार है नीचे, तरुवर एक अनूपा ।
तामें नित इक पंछी खेलत, धरके तीन स्वरूपा ॥३॥
एक बाग में चार बिरच्छ, तां पर पंछी एक ।
बिरच्छ २ पर भिन्न २ वपु धर, करते केल अनेका ॥४॥
कहे टेऊँ बिन पर इक पंछी, आत जात नभ मांहीं ।
पाँच नाम धर पाँच काम कर, देखत नैन न तांही ॥५॥

राग प्रभाती

ब्रह्म ज्ञान बिन कबहुं मन का, संसा भरम न जावत है ।।टेक।।
चार वेद पुनि पुराण आठारह, आगम सर्व अध्ययन करें ।
भावें बहु विधि कथा सुनावे, तो मन ठौर न पावत है ।।१।।
केस बढाय बभूति लगावे, बहुते तन पर भेख धरे ।
भावें दर दर अलख जगावे, तो मन शान्ति न आवत है ।।२।।
वृत नेम कर मन्दिर पूजे, सन्ध्या सिमरण पाठ करे ।
भावें तीर्थ दान करे बहु, तो मन सुख ना पावत है ।।३।।
घर को तज कर बन में जाकर, भावें तपस्या कठिन करे ।
कहे टेऊँ बिन ब्रह्म ज्ञान के, सत्पद मन ना समावत है ।।४।।

राग प्रभाती

शब्द गुरु का है सुख दायी, सकले दुःख मिटावत है ।।टेक।।
अन्त काल में आकर जब ही, यम के दूत डरावत है ।
शब्द गुरु का याद करन से, निकट नहीं वे आवत है ।।१।।
सागर अपने लहरियों से, जब बेड़े को कंपावत है ।
शब्द गुरु का याद करन से, बेड़ा सो तर जावत है ।।२।।
घोर जंगल में मारन हित जब, दुश्मन घेरा लावत है ।
शब्द गुरु का याद करन से, वैरी सब क्षय पावत है ।।३।।
तांते गुरु का शब्द न भूलो, सन्त सभी समझावत है ।
कहता टेऊँ शब्द गुरु का, हर दम लाज बचावत है ।।४।।

राग प्रभाती

जे तुम हरि से मिलना चाहो, चार शिक्षा ये धारो रे ।।टेक।।
प्रथमे भोजन स्वल्प सादा, सात्विक चिकना पावन हो ।
नेम टेम से प्राण रक्षा हित, अपने मुख में डारो रे ।।१।।
दूजा अर्ध रात को उठके, नैन नीन्द से खोल जरा ।
सावधान हो यत्न करे तुम आलस्य गफलत टारो रे ।।२।।
तीजा बैठी जाय अकेला, जहां न कोई आय सके ।
बन पर्वत की कन्दिरा हो, वा होवे गंग किनारा रे ।।३।।
चोथों पूर्ण श्रद्धा धारे, सत्गुरु से तुम मन्त्र ले ।
कहता टेऊँ अर्थ सहित सो, स्वासों स्वांस उच्चारो रे ।।४।।

राग प्रभाती

जाग जज्ञासु जीत हरि जप, जाग जज्ञासु जीत ।।टेक।।
सत्य शब्द सुन श्रवण जागे, हऊँ में संसा दुर्मति भागे ।
भागे भरम की भीत ।।१।।
जागे नेत्र नाम के दर्शन, पेख पेख से होवन प्रसन्न ।
राचेंहि हरि रंग रीत ।।२।।
जागे रसना हरि गुण उच्चरे, विषय वासना विषरस विसरे ।
एक अमिरस पीत ।।३।।
जागे ईडा जागे पिंगला, जागे सुरतां गावे मंगला ।
गावे हरि गुन गीत ।।४।।

कहे टेऊँ जो ऐसा जागे, ताको यम का दडं न लागे ।
पाये गुरु से प्रीत ॥५॥

राग आशा

राम मिलन पढ पातिरे ।
तुम पावो भ्राति मन एकान्ति होवे शान्ति ॥टेक॥
ताप कलेशा पाप मिटावो, सुन कर सन्तन बाति ॥१॥
चारों साधन को तुम साधे, ध्यान धरो दिन राति ॥२॥
सद्गुरु से मिल सभ सुख पावो, भेद भरम हरे भ्रान्ति ॥३॥
कहे टेऊँ हरि स्मरण करके, लखिले अपनी जाति ॥४॥

राग आशा

गुरु मिलन को मैं जाता रे ! तुम सुन हो ताता ।
रहन न पाता प्रेम सताता ॥टेक॥
बहुत दिनों से बिछड़ा मुझ से, दिल को दरद दुखाता ॥१॥
गुरु दर्शन बिन तन मन मेरा, रैन दिवस तड़ फाता ॥२॥
जब जब याद पड़त सद्गुरु की, नैनों से नीर बहाता ॥३॥
कहता टेऊँ सद्गुरु के बिन, और न मोहि सुहाता ॥४॥

राग आशा

प्रभु मिलन का यह वेला रे ! तुम जागो चेला ।
जग है खेला, दो दिन मेला ॥टेंक॥

सुत दारा बान्धव परीवारा, अन्त समय को देन सहारा ।
जायेंगे आप अकेला ॥१॥
मिथ्या है सब माल खज़ाना, तामें ममता कर न दिवाना ।
साथ न चलहिं अधेला ॥२॥
साध संगति में बैठ सुजाना, नाम जपे कर निज कल्याना ।
काल न देवे ठेला ॥३॥
कहे टेऊँ अब कर होश्यारी, फेर मिले ना ऐसी वारी ।
सद्‌गुरु के चल गेला ॥४॥

राग आशा

सद्‌गुरु शरणे आयारे, मैं दर्शन पाया,
पाप मिटाया, आनन्द छाया ॥टेक॥

दर्शन करके प्रसन्न होया, तन मन के सब संकट खोया ।
सुख के माहिं समाया ॥१॥
सद्‌गुरु वचन सुना मैं जब हीं, भेद भरम सब मिटिया तब हीं ।
आत्म घर में आया ॥२॥
सद्‌गुरु का जब दर्शन देखा, धर्म राज का चूका लेखा ।
जन्म मरण दुःख जाया ॥३॥
कहे टेऊँ भै भाग विशाला, मिलिया सद्‌गुरु दीन दयाला ।
चरण कमल चितलाया ॥४॥

राग आशा

ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मानन्द माहीं भूलन्दे ।।टेक।।

नाम रूप मिथ्या सत्ब्रह्म जां नन्द,
अपना स्वरूप एक ब्रह्मानन्द ।
जगत माहीं स्वयं रूप देख फूलन्दे ।।१।।

शेर ज्यों जगत् माहीं अभय डोलते,
अहं ब्रह्म २ बात बोलते ।
ब्रह्म भाव को न कभी राह भूलन्दे ।।२।।

कमल फूल ज्यों जगत् बीच रहत हैं,
सदा तोष माहीं मग्न कुछ न चहत है ।
ज्ञान नशे माहीं मस्त होय घूलन्दे ।।३।।

भेद भरम छेद कर्म मेट बासना,
कहत टेऊँ धार सदा ब्रह्म भावना ।
राग द्वेष माहीं कभी नाहीं छूलन्दे ।।४।।

राग आशा

रामदा भजन करो मेरे प्यारे ।।टेक।।

रामदा भजन करे सोई बन्दिया,
रामदे भजन बिन जानो गन्दिया ।
रामदा भजन भव पार उतारे ।।१।।

फूल खुशबूइ बिना नहीं मोहन्दा,
मनुष्य त्यों भजन बिना नहीं सोहन्दा ।
राम भजन से ही यश होय अपारे ॥२॥
पापी कर पाप बहु माया जोड़न्दा,
आवे नहीं काम ताहीं अन्त लीड़न्दा ।
राम के भजन बिन नरक सिधारे ॥३॥
मनुष्य तन पाय भजन जो न करन्दा,
कहे टेऊँ अन्त दुःखी होय मरन्दा ।
तांते तुम राम भजो सन्त पुकारे ॥४॥

राग आशा

माया के अधीन से न होय बन्दगी ॥टेक॥

लोभ का अधीन नहीं साच बोलन्दा,
क्रोध का अधीन नहीं बात तोलन्दा ।
कामी करे नाहीं निज ऊच जिन्दगी ॥१॥
मोहके अधीन को न बोध आवन्दा,
मान का अधीन नहीं ठौर पावन्दा ।
अभिमानी नाहीं करे कभी बन्दगी ॥२॥
भेद का अधीन नहीं एक जोवन्दा,
भरम का अधीन नहीं सूख सोवन्दा ।
मूंढ कभी बोले नाहीं वाणी छन्दकी ॥३॥

मन का अधीन नहीं फर्ज जानन्दा,
गर्ज का अधीन नहीं अर्ज मानन्दा ।
कहे टेऊँ दम्भी ले ना राहे रिन्दगी ।।४।।

राग आशा

मन के मारन वाला विरला ज्ञानी ।।टेक।।

धातु के भारन वाले देखे बहुतिया,
बूटी के जारन वाले, देखे केतियां ।
पंछी के मारन वाले केते कमानी ।।१।।

कान के कटान वाले केते देखिया,
बेख के बनाने वाले केते भेखिया ।
ध्यान के धारन वाले बहुते ध्यानी ।।२।।

पवन के रोकन वाले बहुत जोगियां,
जग के ठगन वाले बहुत ठोगियां ।
वेद के विज्ञान वाले बहुत विज्ञानी ।।३।।

और सभी कर्म हैं सुगम धारना,
कहे टेऊँ कठिन इक मन मारना ।
जो रे मन मारे सोई वीर विज्ञानी ।।४।।

राग आशा

बन्दे हरिगुण क्यों नहीं गाते,
इकरार किया इकरार किया ।।टेक।।

जिह तुमको पैदा कीना, नित देवत खाना पीना ।
क्यों तांसे प्रेम न पाते ॥१॥
जिह देखन लिये नैना, दिये बोलन हित बैना ।
क्यों तांसे नेह न लाते ॥२॥
जिह दीना जीव पराना, मन बुद्धि में ज्ञान विज्ञाना ।
क्यों तांके रंग न राते ॥३॥
कहे टेऊँ निश्चय मानो, सब दाति हरी की जानो ।
क्यों सुरति न ताहिं समाते ॥४॥

राग आशा

जे चाहो कल्याण, धरो हरी का ध्यान ।
सुनो २ ऐ सुज्जान, प्रभु को भुलाना मत भूलके ॥टेक॥
हरि साथी तेरे आदि अन्त का,
मति नाम भुलावो भगवन्तका ।
जपो जपो भगवान पाओ सुख महान ॥१॥
क्यों जग के पड़े हो जजांल में,
कुच्छ चलते न तेरे नाल में ।
यह झूठा है जहां, सच्चा प्रभु पहचान ॥२॥
सदा साध संगति में जायके,
कहे टेऊँ बैठो चित्त लायके ।
तजे तन अभिमान करो हरिगुण गान ॥३॥

राग आशा

सुन पंडित ब्रह्म समाजी, तुम ले शिक्षा सद्‌गुरु की ॥टेक॥

प्रत्यक्ष आत्म को ना जानत, पारब्रह्म को दुर पछानत ।
बात न सूझत घर की ॥१॥
लहर तंरग चक्कर जल एका, मूर्ख मानत तांहि अनेका ।
ज्ञानी को गम जर को ॥२॥
सिंह अजा संग आप भुलाया, और सिंह निज रूप लखाया ।
जाति भुली तिस पर की ॥३॥
कहे टेऊँ जिस को ब्रह्म मानत, सोतू है यह वेद बखानत ।
छोड़ नजर नारी नर की ॥४॥

राग आशा

सुन शिष्य हमारी युक्ति,
करो इस विधि भगवंत भक्ति ॥टेक॥

सत्कर्मों का साबुन लाओ, पाप-कर्म की मैल मिटावो ।
ऊजल अन्तः करण बनाओ, गुरपद लाओ नृति ॥१॥
थिर कर बैठो आसन मारे, धारणा ध्यान समाधी धारे ।
मन का क्षेप विक्षेप निवारे, शब्द में लावो सुरति ॥२॥
ज्ञान दण्डे का मारे सटका, तोड़ो भेद भरम का मटका ।
मिट जाये सब यम का खटका, लावो आत्म वृति ॥३॥

जो जन करते ये अभ्यासा, अमरापुर सो पावत वासा ।
कहे टेँऊँ कर सब दुःख नासा, पावो जीवन मुक्ति ॥४॥

राग आशा

गुरु राखो चरन निवासा, यह मेरी है अर्दासा ॥टेक॥
पानी भर के लकड़ी लाऊँ, झाड़ूदे घर साफ बनाऊँ ।
सेवूं बारहा मासा ॥१॥
फूलों की मैं सेज सज्जा के, तां पर तुम को शयन करा के ।
चन्दन का दूं वासा ॥२॥
गंगा जर से चरण पखारूं, पान करे मैं पाप निवारूं ।
धारूं उर विश्वासा ॥३॥
कर जोड़े कर कहता टेऊँ, ज्यों तुम चाहो त्यों मैं सेवूं ।
देवो निकट निवासा ॥४॥

राग आशा

कर मन हरि चरननि की आशा,
इस जग से होय उदासा ॥टेक॥
और आसरे जेते जग के, झूठा जान दिलासा ॥१॥
जग झूठा जग के नर झूठे, झूठा तां भरवासा ॥२॥
जगत आसरा जिन जिन लीना, तांहि पड़ी जम फासा ॥३॥
कहे टेऊँ ले शरण हरि की, जाँते हो दुःख नासा ॥४॥

राग आशा

रे मन जपले हरि का नाम ।।टेक।।

अमृत वेले उठकर कीजे, राम भजन का काम ।।१।।

झूठे जग के काम के आगे, लेवो हरि की शाम ।।२।।

सन्तनि संग में निस्दिन रह के, प्रेम का पीले जाम ।।३।।

कहे टेऊँ हरि सिमरण कर के, पावो सुख विश्राम ।।४।।

राग आशा

कर ब्रह्म देश दीदारा, ले ज्ञान गुरु से प्यारा ।।टेक।।

कोटि भूमि जल अग्नि प्रकाशा,
कोटि पवन पुनि को अकाशा।
सब जिससे हो विस्तारा ।।१।।

कोटि ब्रह्मा विष्णु शङ्कर,
कोटि रवि शशि सुरपति सुरवर ।
ये जामें लय हो सारा ।।२।।

कहे टेऊँ ताहिं सो जन देखे,
जीव ब्रह्म जो इक कर पेखे ।
वो पावत आनन्द अपारा ।।३।।

राग आशा

जिह राम नाम गुण गाया, हरि तां का दुख मिटाया ।।टेक।।

राम नाम प्रहलाद सिमरिया,
ध्यान हरि का ध्रुव ने धरिया ।
हरि तिनको दरस दिखाया ॥१॥
अन्त अजामिल राम उच्चारा,
गज ने आधा राम पुकारा ।
हरि तांको मुक्ति कराया ॥२॥
राम नाम शवरीने लीना,
प्रेम जताऊ हरि से कीना ।
हरिचन्द को धाम पठाया ॥३॥
कहे टेऊँ तुम भी हरि ध्याओ,
हरि स्मरण से सब सुख पावो ।
यह करले सफली काया ॥४॥

राग आशा

निज आत्म राम पछान, मनुष्य करि काम तू यही ।
ले गुरु से आत्म ज्ञान, पावो पूर्णपद निर्वाण ॥
मनुष्य करि काम तू यही ॥टेक॥

दो दिन जग में तुम हो मुसाफिर, झूठा तजि अभिमाना ।
अन्त समे कोई काम न आवे, जाँ का करत गुमाना ॥
तजि मोह ममत नादान, धरो तुम दिल में हरि का ध्यान ॥१॥
पाँच तत्व की है यह देही, तामें पंछी पराना ।

उड़ जावे जब प्रान उसी से, तब ही जरत मसान ॥
तुम भजन करो भगवान, और दे हाथों से कुच्छ दान ॥२॥
कहे टेऊँ कर गुज़र ग़रीबी, त्यागे मान बड़ाई ।
दीन दुखियों की सेवा करले, किसी की कर न बुराई ॥
यह वेदो का फर्मान, धरले हृदय माहीं सुजान ॥३॥

राग आशा

करले बन्दगी करले बन्दगी करले, करले बन्दगी करले ॥टेक॥
जिस मनुष्य ने बन्दगी कीती, तिस हारी बाजी जीती ।
तुम ध्यान हरि का धरले, बन्दगी करले ॥१॥
बन्दा होय, करेना बन्दगी, तिस व्यर्थ जानो जिन्दगी ।
ना स्वास अमोलक हरले, बन्दगी करले ॥२॥
कहे टेऊँ अगर सुख चाहो, कर बन्दगी सब सुख पावो ।
भवसागर से तुम तरले, बन्दगी करले ॥३॥

राग आशा

शुभ कर्मों से प्रीति करले, पाप कर्मों से वृति हरले ॥टेक॥
शुभ कर्मों का फल सुख दायी, पाप कर्म का फल दुःख दायी ।
जो तुम पूर्ण सुख को चाहो, पुण्य कर्म से चित्त लगावो ॥
ध्यान धर्म का दिल में धरले ॥१॥
पापी पाप प्यार से करता, करने से वह नाहीं डरता ।

जब उसके फल को पावत है, दुःखी होय के पछतावत है ।।
तांते पापों से तुम डरले ।।२।।
शुभ कर्मों से शुद्ध मन होवे, शुद्ध मन से हरि दर्शन होवे ।
हरि दर्शन बिन शान्ति न आवे, कहे टेऊँ यह सन्त बतावे ।।
नेक कर्म कर भव से तरले ।।३।।

राग आशा

प्रेमा भक्ति दे दान, दान दान प्रभु ! अर्ज है ।।टेक।।

प्रेम भक्ति में मन यह फूले, तव गुन गावत तन यह भूले ।
धरू तुम्हारा ध्यान, ध्यान ध्यान प्रभु ! अर्ज है ।।१।।
प्रेम तेरे में निस्दिन रोवां, नैन नीर से तन मन धोवां ।
करूं प्रेम रस पान, पान पान प्रभु ! अर्ज है ।।२।।
कहे टेऊँ हरि कृपा कीजे, प्रेम भक्ति का प्याला दीजे ।
हरो क्रोध मद मान, मान मान प्रभु ! अर्ज है ।।३।।

राग आशा

गुरुमुख प्यारा गुरुमुख प्यारा, नाम उच्चारो रे ।
सन्तों का संग करके, अपना जन्म सुधारो रे ।।टेक।।

दुष्ट पुरुषों का संग त्यागो, सत्पुरुषों से कर अनुरागो ।
तांकी मानी श्रद्धा से तुम हृदय धारो रे ।।१।।
पांच ठगों से ना आप ठगावो, गुरु चरनों में चित्त लगावो ।

खोहे संकल्प विकल्पाप सारे, मन के टारो रे ॥२॥
कहे टेऊँ गुरु नाम सिमरिये, भव सागर से पार उतरिये।
जन्म मरण का भारी दुःख, जो तांहि निवारो रे ॥३॥

राग आशा

जीवन है दिन चारि प्राणी, जीवन है दिन चार ॥टेक॥
ऊठत बैठत हरि गुन गावो, साध संगति की टहल कमावो।
भूलि ना बुरी संगति में जावो, साच्ची करले कार ॥१॥
सर्व जनों से प्रेम बढ़ावो, भूलि ना वैर किसी से पावो।
रंचक किस की दिलि न दुःखावो, दया सर्व पर धार ॥२॥
सब जीवों का हित ही कीजे, अवगुन को तजि गुन को लीजे।
कटुक वचन किसी को ना कहिजे, मीठे वचन उच्चार ॥३॥
कहे टेऊँ कुच्छ मान ना करिये, पाप कर्म से हरदम डरिये।
पूरे गुरु की शरनी पड़िये, जासे होय उधार ॥४॥

राग आशा

दो दिन का मेहमान है तुम दो दिन का मेहमान ॥टेक॥
सैर करने हित तेरा आना, होया है फिर होगा जाना।
यह नहीं तेरा देश सुजाना, काहे करत गुमान ॥१॥
पंछी कर तरु रैन बसेरा, उड़ जाते ज्यों होत सवेरा।
त्यों छिन पल रहना है तेरा, जपले श्री भगवान ॥२॥

बात अल्प पर बहुता लड़ना, आयु अल्प में ममता धरना ।
दूर सफर नहीं तय्यारी करना, यह तेरा अज्ञान ।।३।।
कहे टेऊँ थिर रहना नाहीं, क्यों तुम ममत धरत मन माहीं ।
सन्तों की अब पकड़े बांही, अपना करे कल्याण ।।४।।

राग आशा

अपना आप पछान बन्दे, अपना आप पछान ।।टेक।।
अपने आप पछाने बाझूं कबहुं न हो कल्याण ।
आप पछाने से पावेगा, पूर्ण पद निरबान ।।१।।
ब्रह्म नेष्टी श्रोती से, गुरु पूछो आत्म ज्ञान ।
महा वाक्य ले मनन करे तुम, निश्चय करो सुजान ।।२।।
सद्गुरु बिन निज ज्ञान न होवे, कहे टेऊँ सत् मान ।
ज्ञान बिना नहिं मुक्ति होवे, कहते वेद पुरान ।।३।।

* राग विहाग *

प्रेम प्याला सद्गुरु वाला, राम रसाला पियाजी भरके ।।टेक।।
तन मन भेट धरा गुरु आगे, द्विधा दूरि भेद सब भागे ।
विषय वासना विष रस त्यागे, भया उजाला जिया जी भरके ।।१।।
पीवत पिंग भया मन मेरा, भूल गया सब मेरा तेरा ।
मिट गया सब काल का फेरा, खुल गया ताला पीयाजी घरके ।।२।।
जीव ईश की गयी उपाधी, हटि गयी सब वाद विवादी ।

लायी पूर्ण ब्रह्म समाधी, भया सुखाला सोऽहं स्मरके ॥३॥
कहे टेऊँ इस काया भीतर, लागी वृति आत्म अन्तर ।
ज्ञान नशे गुम हो मस्तीतर, भया निहाला नियाज़ करके ॥४॥

राग बिहाग

सत्संग जग में सारु प्यारे, सत्संग बिन नहिं हो निस्तारा॥टेक॥
सत्त्संग करके नीच सुधर गये, भवसागर से पार उतर गये ।
नाम तनीं निखार प्यारे, पाया हे निज पद निरधारा ॥१॥
सत्संग सुरतरु गंग पछानो, काम धेनु चिन्ता मणी जानो ।
कार्ज देत सवार प्यारे, पाप पुञ्ज को कर परहारा ॥२॥
सत्संग सूर्य सम प्रकाशत, ज्ञान किरणों से तिमर विनाशत ।
आनन्द देत अपार प्यारे, चन्दन चन्द ते शीतल भारा ॥३॥
कहत टेऊँ सत्संग करके, सन्त वचन को उरमें धर के ।
अपना करो उद्धार प्यारे, सत्संग हे मुक्ति का द्वारा ॥४॥

राग बिहाग

सुमरण में धरि ध्यान प्यारे, अन्तर मुख हो वृति लगावो ॥टेक।
स्मरण कर घट में दिन राती, प्राणायम से हो एकान्ती ।
योग की युक्ती जान प्यारे, मूल कमल को खूब दवावो ॥१॥
नाम कंवल से श्वास उठाये, तामें सोऽहं शब्द मिलाये ।
करि हृदे सावधान प्यारे, नाद अनाहत तांहि बजावो ॥२॥

कण्ठ कमल में कर विचारा, पावो सुशम्नि में सुख सारा ।
त्रिकुटि में कर थान प्यारे, ज्योति निरञ्जन तहाँ जमावो ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु युक्ति विचारे, गुरु मुख चलिये दसम द्वारे ।
पाये पद निरबाण प्यारे, जन्म मरण का दुःख मिटावो ।।४।।

राग विहाग

देखो आत्म राम मनुवा, अपने हृदय माहि प्यारा ।।टेक।।
सत्कर्मों से मैल मिटाये, विक्षेप हरि हरि भक्ति कमाये ।
ले गुर ज्ञान की माम, मनुवा दूर करो अज्ञान अन्धारा ।।१।।
जाग्रत स्वप्न सुष्पति तीनो, मिथ्या जड़ परिणामी चीनो ।
करि तुर्या विश्राम मनुवा, चेतन का जामें चिमकारा ।।२।।
आनन्द रूप सदा अविनाशी, साक्षी चेतन स्वयं प्रकाशी ।
पावो सोई धाम मनुवा, कहे टेऊँ जो सर्व अधारा ।।३।।

राग विहाग

खराब है सब खराब है सब खराब है संसार जी ।
झूठ है सब झूठ है सब झूठ है जिनसार जी ।।टेक।।
दुःखमय सब दुःखमय सब दुःखमय परिवार जी ।
कूच है सब कूच है सब कूच है घरबार जी ।।१।।
छोड़ दे नर ! छोड़ दे नर छोड़ दे दुःख दार जी ।
खोजले नर ! खोजले नर खोजले सुख सार जी ।।२।।

जावो तू नर ! जावो तू नर जावो सन्त द्वार जी ।
ज्ञान की सुन ज्ञान की सुन ज्ञान की गुफ्तार जी ।।३।।
पायले नर ! पायले नर पाय ले गुण हार जी ।
कहत टेऊँ कहत टेऊँ कहत टेऊँ पुकार जी ।।४।।

राग बिहाग

ए सियाना ! सोच देखो, नाहिं तव संसार जी ।
जगत में ममता करे, क्यों जन्म जाते हार जी ।।टेक।।
धरिन पानी अग्नि वायु, व्योम है करतार का ।
इन ततों से जो बना तन, सो किम होय तिहार जी ।।१।।
आप से पहले जगत था, है अभी होगा पिछे ।
ना बनाया आपने कुच्छ, क्यों बनत हकदार जी ।।२।।
पुत्र जाया महल माया, सब पदार्थ ईश के ।
गर्भ से कुच्छ ले न आया, क्यों ? करत अहंकार जी ।।३।।
कहत टेऊँ सोच ले नर, कच्छु न तेरा है यहां ।
चार दिन महिमान हो तुम, क्यों ? करत तकरार जी ।।४।।

राग बिहाग

ऐ प्यारा नाहिं तेरा को संगी संसार में ।
जन्म वृथा क्यों गंवाते मोह माया जार में ।।टेक।।

धन कमावन हेत, जो तुम दूर देशनि जात हो ।
सो जहां का तहां रहे, न चलत चलती वार में ॥१॥
रैन दिन जिस नारी को तुम, प्यार करते बहुत हो ।
मरन पीछे ना चले संग, बैठ रोवत द्वार में ॥२॥
मोहकर जिस कुटुम्ब को तुम, जन्म सारा पालते ।
मरण पीछे आग दे, वो छोड़ देत उजार में ॥३॥
कहत टेऊँ सोच देखो, कुच्छ चले ना साथ तो ।
धर्म धरि हरि नाम जप, जो नाव हो भव धार में ॥४॥

राग त्रिहाग

ऐ सज्जन ! मैं सोच देखा, मतलबी परिवार है ।
साफ़ तुझ को कहत हूँ यह कपट का व्यवहार है ॥टेक॥

भजन सत्संग से हटाय, काम घर के लावते ।
अन्त वेले यों कहें, सब राम तव रखवार है ॥१॥
सूख सम्पति के समय में, प्यार जे तुझ से करें ।
विपत्ति में वे मित्र तुम को, देत ना आधार है ॥२॥
प्यार जो मन में करत है, पुत्र दारा मित्र जे ।
वृद्धपन को देख घर से, तुरन्त तोहि निकार है ॥३॥
कहत टेऊँ तोड़ नाता, कपट वाले कुटुब का ।
प्रीति कर करतार से, आधार जो हरिबार है ॥४॥

❀ राग धनाश्री ❀

मन मोहन के मुरली ऊपर, जाऊँ मैं बलिहार सखीरी ।।टेक।।

सुन सुन सुरतां भई सुहागन,
पाया अनन्द अपार सखीरी ।।१।।

मात पिता धन धाम कुटुम्ब को,
भूल गयी सब सार सखीरी ।।२।।

देवीं देव सब सेव करत है,
सन्तन का आधार सखीरी ।।३।।

कहे टेऊँ मन मोहन मुरली,
बाज रही निरधार सखीरी ।।४।।

राग धनाश्री

मोहे मिलिया सुखधाम हरिजन,
निर्वैरी निश्काम हरिजन ।।टेक।।

गंगा समजे निर्मल रहते,
पाप ताप सब मन के दहते ।
सिमरे हरि का नाम हरिजन ।।१।।

तरुवर जैसे सह कर तितिक्षा,
सब जीवन की करहिं रक्षा ।
करते पूरन काम हरिजन ।।२।।

अन्तर वाहिर रहत चन्दन ज्यों,
निशिदन गर्जत बर्सत घन ज्यों ।
हरत हृदय की धाम हरिजन ॥३॥

कहता टेऊँ सम विचारी,
शील सन्तोषी परम उधारी ।
सूरत सुन्दर श्याम हरिजन ॥४॥

राग धनाश्री

राम सुमर सुख धाम मेरे मन,
होवे पूरन काम मेरे मन ॥टेक॥

मात पिता सुत मित अर्धांगी
अन्त काल में होये ना संगी ।
सब कहते जप राम मेरे मन ॥१॥

राम नाम जपि केते उधरे,
नामा सदना साईना सुधरे ।
पाया उर आराम मेरे मन ॥२॥

राम नाम रसना से रटिले,
जम की फांसी ज्ञान से कटिले ।
रहिये नित निश्काम मेरे मन ॥३॥

कहे टेऊँ सो है त्रिकाली,

हरता करता अगम अकाली ।
सब घट देखो श्याम मेरे मन ॥४॥

राग धनाश्री

सन्तों का कर संग मेरे मन, सन्तों का कर संग ॥टेक॥
सन्तनि के संग करि विचारा,
जानि जगत का झूठ पसारा ।
आत्म ब्रह्म अभंग मेरे मन ॥१॥
सन्तन संग पी प्रेम प्याला,
आठों याम रहो मतवाला ।
निर्भय होय निःसंग मेरे मन ॥२॥
सन्तन संग हरि नाम उच्चारो,
पाप ताप सन्ताप निवारो ।
लगे न जम का डंग मेरे मन ॥३॥
सन्तनि से ले ज्ञान विज्ञाना,
कहे टेऊँ कटि भ्रम अज्ञाना ।
लावो आत्म रंग मेरे मन ॥४॥

राग धनाश्री

जागी जप गुरनाम मेरे मन ! जागी जप गुर नाम ॥टेक॥
गफलत को तज नाम स्मरले,

गुरु मूर्ति को हृदय धरले ।
छोड़ कल्पना काम मेरे मन ॥१॥

स्वास स्वास से सुमरण करिये,
जन्म मरण के दुःख को हरिये ।
पावो आदी धाम मेरे मन ॥२॥

काल व्याल का डर नहीं जामें,
स्मरण कर तुम पहुंचो तामें ।
जो है सुन्दर गाम मेरे मन ॥३॥

आदि पुरुष से सुरति मिलावो,
कहता टेऊँ आप भुलावो ।
पावो नित विश्राम मेरे मन ॥४॥

❀ राग टोड़ी ❀

मन राम शरण नहीं आया रे,
तुम वृथा जन्म गवाया रे ॥टेक॥

मात गर्भ इकरार किया जो,
मूर्ख वचन विसार दिया सो ।
नाम हरिका नांहिं लिया तो,
माया भ्रम भुलाया रे ॥१॥

यौवन मांहि बहुत मद कीना,
दीननि को तुमने दुःख दीना ।

भोग विषय के रस में भीना,
नारी संग लपटाया रे ॥२॥
बुढ़ापन में तृष्णा जागी,
माया की मन ममता लागी।
जारे तुम को चिन्ता ग्रागी,
कम्पन लागी काया रे ॥३॥
कहता टेऊँ सुन मन मेरा,
जग में साथी ना को तेरा।
पूर्ण गुरु का होकर चेरा,
करले स्वास सजाया रे ॥४॥

राग टोड़ी

तव जीवन को धिकारा। हरि के भजन बिना ॥टेक॥

बालापन खेलन में खोया, कब हँस के कब रोयके।
सार ग्रसार की समझ गंवायी, मूढमति तुम होय के।
योवन में सुन्दर नारी, ग्रति लागी तुझको प्यारी।
दु:ख मात पिता को दीना, पुनि कीना पाप ग्रपारा ॥१॥
बूढ़ापन के मांहि तेरा, भया निर्बल शरीर जी।
ग्रांखें न देखे कान सुने नहीं, दांत गये ग्रकसीर जी।
तब तृष्णा लागी धन की, नहिं ममता मेटी मन की।
ग्राय चिन्ता रोग सताया, मन मोह लगा ग्रति भारा ॥२॥

तीन श्रवस्था वृथा हारी, किया न कच्छु विचार जी ।
झूठ कपट दोखेबाज़ी का, सिर पर धारा भार जी ।
श्रब काल निकट हे श्राया, कहे टेऊँ ना हरि ध्याया ।
कच्छु पुरुषार्थ नहिं कीना, यह जन्म गंवाया सारा ।।३।।

राग टोड़ी

ऐ ! जज्ञासू नाम का कर जाप तू ।
पाय मन श्राराम मेटे ताप तू ।।टेक।।

त्याग माया मोह ममता मान को ।
दान तीर्थ वृत्त से हर पाप तू ।।१।।
ना बढाश्रो वैर विरोध विषाद को ।
इस जगत में है मुसाफिर श्राप तू ।।२।।
को नहीं किसका संगी संसार में ।
जान झूठे सुत त्रिया मां बाप तू ।।३।।
कहत टेऊँ पाय श्रात्म ज्ञान को ।
मेट भ्रान्ति भेद संशय सांप तू ।।४।।

राग टोड़ी

सन्तों से ले ज्ञान श्रात्म का धरले ध्यान ।
तब तेरा होवे कल्याण ।।टेक।।

श्रद्धा से जा सन्त द्वारे, सेवा करिये प्रेम से प्यारे ।

मान तजे होजा निर्भरण ॥१॥
सन्तनि जैसा और न दाता, सन्त जगत् के है पित–माता ।
दुःख कटै दे सुख महान् ॥२॥
सन्त हरि इक रूप पछानो, तां में भेद ना रञ्चक मानो ।
वो निर्गुण ये सगुण पछाण ॥३॥
सन्तों का संग है सुख दायी, कहे टेऊँ हो अन्त सहाई ।
तां से मिल करो हरि गुनगान ॥४॥

राग टोड़ी

विपद्र मेरी दूर करो महाराज ॥टेक॥
भूप हरिश्चन्द्र धर्म के कारण, दीना सर्व समाज ।
काटे कष्ट तिहं दर्शन दीया, होया जय आवाज़ ॥१॥
दुर्योधन जब द्रोपदा को, करत नग्न मध्यराज ।
सहस्र वस्त्र दे तब तांकी, राक्खी सभा में लाज ॥२॥
बच्चे बिल्ली के रक्खे, आंव में कुम्भारी के काज़ ।
नरसिंह हो हरणाकस मारा, पति राक्खी पहलाज ॥३॥
कहे टेऊँ करजोड़ पुकारे, सुनो ग़रीब निवाज ।
प्रत्यक्ष अपना दर्शन दीजे, पाऊँ सुख स्वराज ॥४॥

राग टोड़ी

मेरे मन मत कर तन अभिमान,
पाञ्च तत्व का तन यह क्षरण भंग ।

इक दिन जरत मसान ।।टेक।।

तन अभिमान हरिनाकस कीना, कहलाया भगवान ।
नरसिंह रुप धरे हरि तिसका, तुरन्त निकाला प्राण ।।१।।
तन अभिमान लंक पति कीना, कहलाया बलवान ।
राम उसी का सीस उडाया, रहा ना नाम निशान ।।२।।
तन अभिमान दुर्योधन कीना, कहलाया सुलतान ।
भीम गदा से मारा तांको, टूटा सब मद-मान ।।३।।
हस्ति उनकी नाहीं रही, जिन किया गर्व गुमान ।
कहे टेऊँ तुम तांते उर में, धार गीरीबी ज्ञान ।।४।।

राग टोड़ी

जगत में कीना नहीं उपकार, निश्दिन पेट भरन हित तुमने ।
कर्म किये बदकार ।।टेक।।

आशा तृष्णा के वश होके, कीने पाप अपार ।
नेक कर्म तुम एक न कीना, पड़ा लोभ के लार ।।१।।
मानुष तन दुर्लभ यह तुमने, दिया भोग में डार ।
दीन जनों को सुख न दिया, तांते तोहि धिकार ।।२।।
दया धर्म विन तेरा ज़ीवन, सारा है बेकार ।
कहे टेऊँ अब भी कुच्छ करले, जांते होय उधार ।।३।।

राग टोड़ी

मेरे मन मत कर तूं अहंकार ।
सुन्दर देही देख न भूलो, इक दिन होवे छार ॥टेक॥
नर अभिमानी महा अज्ञानी, रहत सदा गंवार ।
अपने को अति ऊँचा मानत, करते पाप अपार ॥१॥
धन जोबन का मान त्यागे, क्षमा गरीबी धार ।
कहे टेऊँ सुख माहिं गरीबी, कहते सन्त पुकार ॥२॥

राग टोड़ी

प्रेम बिन जीवन निष्फल जान ।
ऋषि मुनि सब सन्त कहत यह, शास्त्र वेद पुरान ॥टेक॥
प्रेम बिना है निष्फल जप तप, तीर्थ वृत स्नान ।
कर्म धर्म यज्ञ योग प्रेम बिन, वृथा सँयम दान ॥१॥
प्रेम बिना है निष्फल जग में, खान पान पहरान ।
जाति पाति कुल भेष पन्थ सब, वृथा महल मकान ॥२॥
प्रेम बिना है निष्फल पढ़ना, पूजा अर्चन ध्यान ।
श्रवण स्मरण कथा कीर्तन, वृथा सब गुण ज्ञान ॥३॥
प्रेम बिना सब साधन फीके, जीना मृतक समान ।
कहे टेऊँ ताँते मन में, इक प्रेम धार प्रधान ॥४॥

राग टोड़ी

मेरे मन सन्तनि का कर संग, सन्त स्वरूप हरिका जानो ।
निर्मल जांके अंग ॥टेक॥

सन्त सज्जन दे सत् उपदेशा, करते कुमति को भंग ।
सम दम आदि साधन देके, लावत आतम रंग ॥१॥
सन्त जनों के मुख से हरदम, सुनो प्रेम प्रसङ्ग ।
तांका मनन निदध्यासन, करते पावो दान उतङ्ग ॥२॥
सन्तनि का सत्संग जगत में, करत कीट को भङ्ग ।
मेले मन को निर्मल करते, जैसे पावन गङ्ग ॥३॥
कहे टेऊँ कर संग सन्तों का, उरमें धार उमंग ।
सन्तनि की कृपा से कबहुं, काल न मारे डङ्ग ॥४॥

❀ राग भैरवी ❀

मेरी दिल देवानी, दर्शन गुर प्यासी ।
बिना देख दीपक, पंतग ज्यों उदासी ॥टेक॥

ज्यों वाम कामी, चहत दाम दामी ।
अनल गगन ठामी, मच्छी नीर वासी ॥१॥
संसारी ज्यों सुत कर, कर आस दर दर ।
भँवर फूल ऊपर, गऊ बछड़े पासी ॥२॥
ज्यों कन्त नारी, शस्त्र सूर धारी ।

दवा दोख्य प्यारी, चन्दन अहि निवासी ॥३॥
चकवी पीव पावे, सिपी स्वाँत धावे ।
मुक्ता हंस खावे, जोगी जन अभ्यासी ॥४॥
ज्यों धन को मोरा, प्रिय चन्द चकोरा ।
ज्यों गुरु की लोरा, टेऊँ गुर में आसी ॥५॥

राग भैरवी

लगी है जिस को ब्रिह की कटारी ।
दई काटि तिसने ममत मोह जारी ॥टेक॥

हरे भोग आशा, रहत सो उदासा ।
करे ब्रह्म वासा, पावे शान्ति भारी ॥१॥
तजे सर्व नाता, हरि रंग राता ।
मधुर गीत गाता, मग्न खुद खुमारी ॥२॥
कभी रोय हँसता, कभी जंगल बसता ।
कहुं नाहिं फसता, चले चाल नियारी ॥३॥
जगत झूठ जानी, तजे लाभ हानी ।
टेऊँ सो सैलानी, रहे उम्र सारी ॥४॥

राग भैरवी

शिवोऽहम शिवोऽहम्, शिवोऽहम् बोलो ।
सदा तुम जिज्ञासू, शिवोऽहम् बोलो ॥टेक॥

विश्व में व्यापक परम रूप तूं,
इन्द्रियों से अगोचर अगम रूप तूं ।
सही सत् चिदानन्द ब्रह्मरूप तूं,
भ्रम में भुली ना जीवोऽहम् बोलो ॥१॥
अग्नि ना जरावे, अजर रूप तूं,
पवन ना उड़ावे, अचर रूप तूं ।
मृत्यु ना नसावे, अमर रूप तूं
मिली देह से ना, देहोऽहम् बोलो ॥२॥
सर्व से परे सर्व आधार तूं,
सर्व रूप निर्गुन निराकार तूं ।
कहे टेऊँ निश्चय निरऽहंकार तूं,
द्वन्द में पड़ो ना दासोऽहम् बोलो ॥३॥

राग भैरवी

साजन के विरह मांहो, लूटा मैं बाग़ सारा ।।टेक।।
आशा का त्याग किया, तृष्णा को तर्क दिया ।
खोजन लगा सो पीया, गुरु शब्द ले सहारा ॥१॥
दिन रात इन्तज़ारी, दिल को नहीं करारी ।
दुनियां लगे न प्यारी, नैंने वहाऊँ धारा ॥२॥
विरहा अग्नि में जर के, संसाविकार हर के ।
पावन अक्षर सुमर के, पावूं परम प्यारा ॥३॥

ज्यों नीर विगर मीना, तैसे हमारा जीना ।
भावे न खाना पीना, कहे टेऊँ कर पुकारा ॥४॥

राग भैरवी

सद्गुरु का साज सुन्दर, मैंने अन्दर वजाया ।
आवाज वो अलस्ती, सुनके बदन भुलाया ॥टेक॥
नाभि बजे नगारा, फैला जिसम मझांरा ।
हृदय कमल विचारा, फिर कण्ठ माहीं आया ॥१॥
पिङ्गला इड़ा चलाये, सुषम्न सहज समाये ।
तृभरा में ध्यान लाये, दीपक तहां जगाया ॥२॥
अनहद नाद बाजे, गघन मन्डल में गाजे ।
सुनकर सुन्दर आवाजे, डर काल का मिटाया ॥३॥
कहे टेऊँ डुबकी मारे, पहुँचा दसम द्वारे ।
रमके सो ऋणुकारे, वेगम नगर समाया ॥४॥

राग भैरवी

करले अब हरि का सुमरण करले तू ।
धरले मन ध्यान प्रभु का धरले तू ॥टेक॥
ये वेला जान सुहेला, फिर होय ना ऐसा वेला ।
कर सन्त गुरुजी की सेवा, श्रद्धा से बन कर चेला ।
भक्ति भाव भरले तू ॥१॥

माया की ममता छोड़ो, तुम मोह कुटुम्ब का तोड़ो ।
सब जग के भोग त्यागे, जीव जगतपति से जोड़ो ।
पाप को हरले तू ॥२॥
उठ गाफल गफ्लत तजिले, कहे टेऊँ हरि को भजले ।
तृष्णा और तमन्ना टारे, मनको सन्तोष से रजले ।
इसी विधि तरले तू ॥३॥

राग भैरवी

देख देख प्रभु लीला तेरी, डरती जान हमारी है ॥टेक॥
काल जो ये नर राजा बन कर,
राज करत था मुलिकों का ।
आज वही नर बान्दी बन कर,
रोता जारों जारी है ॥१॥
काल जो ये नर दाता बन कर,
दान देत था दीनों को ।
आज वही नर इक दाने हित,
दर दर फिरत बिखारी है ॥२॥
काल जो ये नर सैर करन हित,
हाथी घोड़े चढ़ते थे ।
आज वही नर नंगे पावों,
चलता धूप मझारी है ॥३॥

कहे टेऊँ हरि तेरे आगे,
किस का जोर न चलता है ।
दीन दयाल दया करो तुम,
मैं ली शरण तुम्हारी है ।।४।।

राग भैरवी

कृपा कर यह मोहि सुनावो, सद्गुरु देव स्वामी ।
कहाँ रहता है कैसे मिलता, प्रभु अन्तरयामी ।।टेक।।
उत्तर इसीका सावधान हो, सुन हे शिष्य सुचाली ।
ज्यों मैंदी के पात पात में रहती है नित लाली ।।
तैल तिलों में घृत दूध में, मीठा ईख रसाली ।
त्यों घट घट में रम रहिया है, पूर्ण पारिग्रामी ।।१।।
कहे टेऊँ जो प्रेम सच्चे से, जहाँ जहाँ सुमरण करता ।
तहाँ तहाँ प्रकट हो कर, तिसको दर्शन दे दुःख हरता ।।
भाव भक्ति का भगवत् भूखा, और न मन में धरता ।
तांते प्रेम करो तुम हरि से, जग की छोड़ गुलामी ।।२।।

राग भैरवी

पूर्ण गुरु की पूजा कीजे, श्रद्धा मन में धारे ।
गुरु पूजा का उत्तम दिवस ये, आज समझ ले प्यारे ।।टेक।।
कञ्चन का इक उत्तम सिहाँसन, मोती जटित बनाये ।

अपने गुरु को भाव भक्ति से, ताँ पर तुम बैठाये ।
माणक मोती कञ्चन रूपा, वस्त्र भेट चढ़ाये ।
चन्दन चरचे फूल चढ़ावो, आरती तांहि उत्तारे ।।१।।
पार ब्रह्म का रूप जानके, सद्गुरु को नित पूजो ।
माता पिता आदि सब जग से, सद्गुरु उत्तम सूझो ।
मन बुद्धि पाँचो इन्द्रियों से तुम, गुरु बिन और ना बूझो ।
हाथ जोड़ के सीस नवाओ, सद्गुरु के चरना रे ।।२।।
ब्रह्मा विष्णु शङ्कर रवि शशि, देव गुरु गुन जाने ।
भूत प्रेत पशु पंछी दानव, मानव गुरु को माने ।
पर्वत लोहा सर्प बिच्छुहा, चलत गुरु प्रमाने ।
मन्त्र यन्त्र तन्त्र जग में, गुरु को मानत सारे ।।३।।
कहे टेऊँ जो सद्गुरु पूजे, तां पर मैं बलिहारी ।
जहि गुरु पूजा तहि सब पूजे, गुरु में सृष्टि सारी ।
चार पादार्थ पावत सहजे, सद्गुरु का पूजारी ।
गुरु कृपा से गुरु मुख पावत, आनन्द जगत मझारे ।।४।।

राग भैरवी

शंकर बोले पार्वती सुन, अमर कथा सुख दानी ।
जाके श्रवण से कट जावे, कठिन काल की कानी ।।टेक।।

चन्द्र कला के विमल छटा से, शोभत था बन सारा ।
शान्ति धुनि से गूंज रहा था, अद्भुत रैन निज़ारा ।

हिमाचल की कन्द्रा बैठे, गोरी शंकर प्यारा ।
अमर कथा अब मोहि सुनावो, कहने लगी भवानी ॥१॥

धन्य धन्य मति गिरजा तेरी, अमर कथा रूचिधारी ।
देवन को भी दुर्लभ मिलती, अमर कथा यह प्यारी ।
अमर कथा यह अमर बनावे, काटे ममता जारी ।
अमर कथा के कहने वाला, जग में को गुरु ज्ञानी ॥२॥

अमर आत्मा देह अनातम, आत्म रूप तुम्हारा ।
आत्म दृष्टा देह दृश्य है, आत्म सबसे नियारा ।
जाग्रत स्वप्न सुषोप्त का, इक आत्म है आधारा ।
इन्द्रिय अगोचर आत्म है, जहिं मन बुद्धि लखे न बानी ॥३॥

ब्रह्म आत्मा स्थित है नित, अपने महिमा मांही ।
वन्ध मोक्षते असंग आत्मा, आत जात कहिं नाहीं ।
पाञ्च भूत प्रकृति सारी, स्पर्श करत ना तांहीं ।
अगम अरूप अनूप अनादि, वेदनि गति नहीं जानो ॥४॥

गात्था सुनते पार्वती को, आगयी निन्द्रा वांहीं ।
सावधान हो हूं हूं करते, तोते सुन ली तांहीं ।
मर्म ना जाना महादेव था, मस्त मौज के माहीं ।
शंकर पूछा गिरजा बोली, मैं निन्द्रा उरझानी ॥५॥

कहे टेऊँ शुकः गात्था सुन ली, भेद शम्भु ने पाया ।
तोते के तव मारन कारण, दण्डा ले उठ धाया ।

उड़के तोता वेद व्यांस के, त्रिया वदन समाया ।
व्यांस वचन सुन तोते को तज, चले शम्भु सैलानी ।।६।।

राग भैरवी

सर्व व्यापक सच्चिदानन्द साक्षी रूप तुम्हारा ।
घट घट वासी स्वयं प्रकाशो तुम हो अगम अपारा ।।टेक।।
तीन देह है महल तुम्हारा, तुम हो इनका स्वामी ।
पाञ्च कोष का प्रेरक तुम हो, असङ्ग अन्तर्यामी ।
नाम रूप का तुम आधारा अखण्ड अरूप अनामी ।
सब घट मांहि खेलत हो, तुम सब से होय नियारा ।।१।।
जैसे सिंह अजा के संग से, अपना आप भुलाया ।
तैसे इन्द्रियों के संग से, तुम निज स्वरूप गवांया ।
अब तो अपना रूप निहारो, छूट भ्रम सवाया ।
वचन हमारा सुनकर करले, अहम् ब्रह्म गजकारा ।।२।।
देखो अपना रूप अनादी, अनुभव ज्योति जगाके ।
जीव ईश का भेद निवारो, ब्रह्म ज्ञान को पाके ।
कहे टेऊँ परमानन्द पावो, ब्रह्म भवन में जाके ।
जहां काल का भय कच्छु नाहीं, ना है यह संसारा ।।३।।

राग भैरवी

सुनो सुनो तुम श्रद्धा धारे सन्त जनों की वानी ।

जिसके श्रवण करने से हो भेद भ्रम की हानी ।।टेक।।
सन्तजनों की बानी पवित्र, मन की मैल मिटावे ।
कर्म धर्म की राह बताकर, स्वर्ग धाम पहुंचावे ।
प्रेम सहित जो श्रवण करता, तांका दुःख नसावे ।
परमेश्वर का प्रेम बढ़ावे, पिला प्रेम का पानी ।।१।।
यह बाणी दी साची शिक्षा, शील संयम सिखलाती ।
जप तप वृत नेम सन्ध्या आदिक, सेवा मांहि लगाती ।
सम दम ज्ञान ध्यान रागा, समता मांहि समाती ।
जीव ब्रह्म को एक लखाकर, देवे पद निर्वानी ।।२।।
कहे टेऊँ सन्तनि की बानी, हृदय में तुम धारो ।
उस पर अमल करे तुम हरदम, अपना जन्म सुधारो ।
पूर्ण शान्ति पद को पाकर, आवागमन निवारो ।
इस बाणी को नाहिं भुलावो, यह है अमृत खानी ।।३।।

राग भैरवी

करो सत्संग प्रीतम प्यारा, बिन सत्संग नहीं निस्तारा ।।टेक।।
धरि श्रद्धा सत्संग कीजे, सुन शिक्षा कुमति हरीजे ।
भर प्रेम प्याला पीजे, करे तुम सेव पावो निज मेव ।
देखो हरिदेव अनन्त अपारा ।।१।।
सत्संग जहाज समाना, ले नाम की टिकट सयाना ।
चढ़ भव सिंधु से तरजाना, गुरु कप्तान करे बुद्धिमान ।

पाइ कल्यान कटो जम जारा ॥२॥

वहु नीच करे सत्संगा, भये जग में ऊच उतङ्गा ।
ज्यों जल गङ्ग मिल हो गङ्गा ।
रही निःसग करे सत्संग, लाईये हरि रङ्ग ।
पावो फल चारा ॥३॥

सत्संग को जानों प्रयागा, जो नावे सो बड़ भागा ।
कहे टेऊँ कर अनुरागा, कटे कुल पाप सर्व सन्ताप ॥
लखे निज आप लहो सुख सारा ॥४॥

राग भैरवी

रे मन तन का तज अभिमान, तन अभिमानी ।
महा अज्ञानी पावत नरक निदान ॥टेक॥

पाञ्च भूत का तन यह, तेरे रहने का स्थान ।
अहं बुद्धि तुम इस में धारे, भूला क्यों नादान ॥१॥
खट रस भोजन इस तन संग में, दुर्गन्ध होय महान ।
देख तिसे तुम करत ग्लानो, प्रत्यक्ष यह प्रमाण ॥२॥
हाड मास और मल का थेला, चाम लपेटे जान ।
सर्व द्वार से मैला निकसे, किस पर करत गुमान ॥३॥
कहे टेऊँ जो इस तन भीतर, साक्षी पुरुष सुजान ।
गुरु कृपा से ताँहि पछानो, लेकर आतम ज्ञान ॥४॥

राग भैरवी

ऊठो नर नीन्द अविद्या से, भजन भगवान का करना ।
तजे सब आस इस जग की, ध्यान इक ईश का धरना ।।टेक।।
मिली तुझ को मनुष्य देही, हरि के भजन हित प्यारा ।
भुलावो ना कभी हरि को, पकड़ ले तांहि के चरना ।।१।।
सर्व को काल संहारे, समझ ले तूं सज्जन मन में ।
निडर हो पाप मत करले, सदा तुम काल से डरना ।।२।।
जिन्हों से प्रीत तुम पाई, संगी नहीं अन्त वे होंगे ।
तजे नाता कुटुम्ब कुल का, प्रभु के शरण में पड़ना ।।३।।
कहे टेऊँ बन्धन तोड़े, करो नित सङ्ग सन्तों का ।
हरे अभिमान तन-धन का हिरदे में भाव को भरना ।।४।।

राग भैरवी

बता कर ज्ञान गुरु मुझ को, भ्रम संसा मिटाया है ।
ब्रह्म की ज्योति का दर्शन, सर्व घट में दिखाया है ।।टेक।।
दौड़ता था हमारा मन, रैन दिन भोग विषयों में ।
शब्द अभ्यास दे सद्गुरु, अचल मन को बनाया है ।।१।।
नाना प्रकार अविद्या से, जगत को देखता था मैं ।
ब्रह्म का ज्ञान गुरु देके, ब्रह्म एको लखाया है ।।२।।
भ्रम कर जीव को पहिले, ब्रह्म को अलग जानता था ।
दया कर भेद गुरु तोड़े, ब्रह्म से जीव मिलाया है ।।३।।

कहे टेऊँ गुरु ऊपर, करूं तन मन निछावर मैं ।
जिसी ने द्वन्द दुःख काटें, महा आन्द समाया है ॥४॥

राग भैरवी

लाल हीरा रत्न मोती, है गुरों के पास रे ।
जो जज्ञासु लेन चाहे, सो बने गुरु दास रे ॥टेक॥

महल माया कुटुम्ब काया, की तजे जो आश रे ।
मोह ममता लोभ लालच, जो करे सब नाश रे ॥१॥

लोक पुन परलोक सुख से, रहता जो यह निराश रे ।
त्याग भोगन को रहे जो, जगत माहीं उदास रे ॥२॥

वेद लोकन कुल लज्जा की, काट ले जो फांस रे ।
कहत टेऊँ पाय सोई, ज्ञान गुन की रास रे ॥३॥

राग भैरवी

काम करना था तुझे जो, आय के संसार में ।
आप उस को भूल गये, फंस मोह माया जाल में ॥टेक॥

राम ने निज रूप दीना, आप को कृपा करे ।
तांहि वृथा तुम गवांया, जगत के व्यवहार में ॥१॥

कर्म करके धर्म धरते, पार तरना था तुझे ।
आप उलटें पाप करके, बह गये भव धार में ॥२॥

सन्त गुरु के संग में रह, आप लखना था तुझे ।
आप उलटा खोय दीना, रूप निज अहंकार में ॥३॥
कहत टेऊँ सोच मन में, समय अब भी ना गया ।
साध संग हरि नाम जप कर, तन सफल उपकार में ॥४॥

राग भैरवी

आओ आओ हे सद्गुरु स्वामी ! रहो हमारे पास ॥टेक॥

इक क्षण दूर न होवो मुझ से, नैने करो निवास ।
मन मन्दिर यह अति सुन्दर है, तामें करिये वास ॥१॥
दो कर जोड़ करूं तुम आगे, वन्दन अर अर्दास ।
तन मन धन से सेवा, सेवक बन कर खास ॥२॥
प्रेमा भक्ति का पेग पिलाए, काटो यम की फास ।
निर्मल अपना नाम जपाओ, सद्गुरु बारह मास ॥३॥
कहे टेऊँ यह विनय सुनिये, पूर्ण करिये आस ।
दर्शन दे सब दुःख हरो तुम, हे सद्गुरु सुख रास ॥४॥

राग भैरवी

आये आये अब मेरे घर में, साधु सद्गुरु राम ॥टेक॥

सन्तन से मैं सद्गुरु पाया, सद्गुरु से श्रीराम ।
राम दर्स से मुक्ति पायी, तीनों को प्रणाम ॥१॥

दर्शन करके प्रसन्न होया, दर्द भये सब दूर ।
तन मन शीतल भया हमारा, पाया मन आराम ॥२॥
सन्त वचन सुन पाप गये सब, उपजा आत्म ज्ञान ।
कहे टेऊँ सब संसा मेटे, पाया पूरण धाम ॥३॥

राग भैरवी

प्यारे प्यारे यह दुनियां सारी, मुसाफर खाना जान ॥टेक॥
जगत मुसाफर खाने में सब, दो दिन के महमान ।
हरदम कोई रह न सकत है, यह निश्चय कर मान ॥१॥
मोह ममत ना राक्खो किससे, झूठा जग पहचान ।
ले आया नहीं ले जाएगा, धन सम्पति सामान ॥२॥
कुल कुटुम्ब भी ना है तेरा, जाँका करत गुमान ।
अन्तकाल में नाहीं छुड़ावत, जब ही जम ले प्रान ॥३॥
रावण जैसे चले गये, बहु बीर धीर बलवान ।
कहता टेऊँ स्थिर न रहे को, बिना एक भगवान ॥४॥

राग भैरवी

आओ आओ सब प्रेमी मिलकर, करो सदा सत्संग ॥टेक॥
सत्संग सुर तरू सम सब फलदे, कीजे धार उमङ्ग ।
पाप ताप सन्ताप नसावे, लावे आत्म रंग ॥१॥
नीच ऊँच नर केते तरगये, सुन सन्तन प्रसङ्ग ।

तुम भी तीन लज्जा को तोड़े, सत्संग करो निस्सङ्ग ॥२॥
सदा जगत में दुःख देता है, मूढ पूरुष का सङ्ग ।
तां को तज सन्तों के संग से, यह मन जीत कुरङ्ग ॥३॥
कहता टेऊँ सन्तों का सङ्ग, मेटे मस्तक अङ्ग ।
सन्तन के सत्संग से करले, भेद भ्रान्ति भङ्ग ॥४॥

राग भैरवी

मन पाप कर्म नहीं करना, हरिका नाम सुमरना ॥टेक॥
पाप कर्म का फल दुःख होगा, तांसे हरदम डरना ।
पुण्य कर्म का फल सुख होगा, यह निश्चय उर धरना ॥१॥
ऐसा कर्म करो ना जासे, लेखा होवे भरना ।
साध संगत की सेवा करके, सर्व दुःख को हरना ॥२॥
तन धन का अभिमान त्यागे, जीते जग में मरना ।
नाम हरि का हरदम सुमरे, भव सागर से तरना ॥३॥
तीन लज्जा को तोड़े जल्दी, जाओ गुरु की शरना ।
कहे टेऊँ ले आतमज्ञाना, जीवन मुक्ति बिचरना ॥४॥

राग भैरवी

मन ऐसा कर्म कमावो जांसे मुक्ति पावो ॥टेक॥
पाप करण से दुःख मिलत बहु, पापी कहे सब कोई ।
सूकर कूकर जोनी पावत, तांसे तुम हट जावो ॥१॥

कर्म सकामी से सुख सम्पति, कीर्ति जग में होवे ।
मगरकाल की फांस न टूटे, तामे चित्त न लावो ॥२॥
कर्म अकामी से बुद्धि निर्मल होवे आत्म ज्ञाना ।
सर्व वासना क्षय हो जासे, तांसे नेह लगावो ॥३॥
अहंता ममता तजकर हरदम, कर्म अकामी करिये ।
कहे टेऊँ हरि अर्पण करके, सहजे ब्रह्म समावो ॥४॥

राग भैरवी

तुम वृथा उम्र गवांयी, हरि भजन न कीना भाई ॥टेक॥
मात गर्भ में प्रतिज्ञा कीनो, तांहीं दिया बिसराई ।
माया के तुम रस में पड़कर, नहीं जपिया रघुराई ॥१॥
पहले बाल अवस्था सारी, खेलन माहीं बिताई ।
मूण्ढ रहा पुनि कुच्छ ना चेता, नहीं हरि भक्ति कमाई ॥२॥
यौवन में तुम मद के माते, भोगन से रति लाई ।
लागी निश्दिन नारी प्यारी, नहीं हरि कीर्ति गाई ॥३॥
बुढापन में आशा तृष्णा, ममता बहुत बढ़ाई ।
पराधीन हो दुःख को पाया, नहीं हरि से लिव लाई ॥४॥
तीन अवस्था वृथा खोई, मन में शान्ति न पाई ।
कहे टेऊँ अब भी तुम चेतो, ले हरि की शरणाई ॥५॥

❀ राग जिला ❀

परम प्यारी प्रान आधारी, मुरली सद्गुरु वाली है ॥टेक॥

जाहीं बजाकर मन मोहन भी, चालत चाल निराली है ।
जिस की तान सुनत ही सब की, होई मती मतवाली है ॥१॥
जग में साज बजत बहुते, पर इस की तान निराली है ।
जो जो सुनता सो वस होता, ज्यों मुरली प्रति व्याली है ॥२॥
कहे टेऊँ यह निर्गुण मुरली, अमृत रस की आली है ।
एक पलक नहीं भूलत मुझ से, आदि अन्त रक्खवाली है ॥३॥

राग जिला

गुरु मुख मन मुख दोनो केरे, लक्षण न्यारे न्यारे हैं ॥टेक॥
गुरु मुख गुरु संग हरि गुन गायके, मानुष जन्म सुधारे है ।
मनमुख माया का चिन्तन कर, दोनों लोक बिगारे हैं ॥१॥
गुरु मुख मन को निर्मल कर के, हरि का नाम पुकारे हैं ।
मनमुख मन मैले से निश्दिन, फीके वचन उच्चारे हैं ॥२॥
गुरु मुख जगत से मुक्ता होके, ब्रह्मानन्द गुजारे हैं ।
मनमुख जग बन्धन में बान्धा, भोगत कष्ट अपारे हैं ॥३॥
गुरुमुख गुरु की आज्ञा माने, मनमुख मन मति धारे हैं ।
कहे टेऊँ गुरुमुख का सङ्ग कर, जो भव सिन्धु से तारे हैं ॥४॥

राग जिला

सन्तन की यह रीति सनातन, सबको प्रेम पिलाते हैं ॥टेक॥
काम क्रोध मद ताप क्लेशा युक्ति साथ जलाते हैं ।

धर्म कर्म की नीति सिखाकर, सीधी राह चलाते हैं ॥१॥
जड़ चेतन की ग्रन्थी खोले, निज स्वरूप मिलाते हैं ।
जीव ईश का भेद मिटा कर, एक ब्रह्म दिखलाते हैं ॥२॥
आत्म का उपदेश बताकर, मन से जगत भुलाते हैं ।
कहता टेऊँ द्वन्द दूर कर, सम की सेज सुलाते हैं ॥३॥

राग जिला

एक अचम्भा हमने देखा, आवत अचर्ज भारी रे ।
मात पिता को सुत ने जनिया, जाया पूत कुँवारी रे ॥टेक॥
एक नगर भूमि बिन देखा, जां में रंग अपारी रे ।
तासु नगर एक धाम न देखा, रहत बहुत नर नारी रे ॥१॥
अजा कसाई को गहि मारा, छुरी सीस तां डारी रे ।
पकड़ बाज को चिड़िया मारा, मारी मूश मंझारी रे ॥२॥
पाहन तरते पानी मांहीं, तूम्बा डूबत धारी रे ।
पानी बिन इक नौका चलती, अग्नि जारत वारि रे ॥३॥
पिङ्गला पर्वत ऊपर चढिया, ठूंठ बजावत तारी रे ।
अन्धा देखहिं बहिरा सुनहिं, गूंगे बत उच्चारो रे ॥४॥
अर्थ इसी का जो जन जाने, सो विद्वान विचारी रे ।
कहे टेऊँ वह मेरा स्वामी, तां को वन्द हमारी रे ॥५॥

राग जिला

हम गीत सनातन गायेंगे, नित ध्वजा धर्म झुलाएंगे ॥टेक॥

धर्म सनातन ईश चलाया, राम-कृष्ण ऋषि मुनि मन भाया ।
पूरव पुण्य से हमने पाया, लग्न इसी से लाएंगे ॥१॥
धर्म सनातन आदि हमारा, जिसके अश्रय अनन्त अपारा ।
वेदों ने इस भान्ति पुकारा, तिसको नाहीं भुलाएंगे ॥२॥
धर्म सनातन को हम धारे, भेद भ्रान्ति भ्रम निवारे ।
ऊँचे स्वर से कह जयकारे, सोते जीव जगाएंगे ॥३॥
सर्व धर्म का है यह स्वामी, सर्व व्यापक है सुख धामी ।
कहे टेऊँ दे मुक्ति मुदामी, तां को सीस नवाएंगे ॥४॥

राग जिला

जिस काज लिये यह जन्म धरा ।
सो कार्ज अब तक नाहि किया ॥टेक॥
भोगन पीछे निश्दिन धाया, साध सङ्गत में ना कब आया ।
प्रेम सुधा रस नाहीं पिया ॥१॥
पापन में मन कीन मलीना, जपतप संयम कर्म न कीना ।
हाथों से ना दान दिया ॥२॥
मूर्ख तोहि भया अभिमाना, संत वचन नहीं सुनिया काना ।
नाम हरी का नाहि लिया ॥३॥
कहे टेऊँ तो लाज ना आई, दुर्लभ मानुष देह गंवायी ।
पाया आतम नाहि पिया ॥४॥

राग जिला

जे सुख को तुम चाहत हो, तो सन्तन का सत्संग करो ।।टेक।।
जो सुख है सत्संगत माहिं, सो सुख स्वर्ग लोक में नाहिं ।
भावे वैकुण्ठ जा बिचरो ।।१।।
सन्त समागम सुर तरू भारा, पूर्ण कार्ज करते सारा ।
सद्गुण ले भण्डार भरो ।।२।।
साध संगत की करके सेवा, देखो प्रत्यक्ष आत्म देवा ।
जन्म मरण का दुःख हरो ।।३।।
कहे टेऊँ सुन वचन हमारे, साध संगत भवसागर तारे ।
निश्चय यह मन माहिं धरो ।।४।।

राग जिला

रे मन प्यारा कर विचारा, छोड़ जगत की झूठी आशा ।।टेक।।
समल वृक्ष के फल को जोवे, जैसे सूआ मोहित होवे ।
पुनि पुनि आवत प्रेम वढ़ावत, फूटे फल तब जाय निराशा ।।१।।
तैसे जग का देख निज़ारा, मोहित होवे मूण्ढ गंवारा ।
खाली जावत बहु पछतावत, झूठा जग का जान तमाशा ।।२।।
मात पिता सुत धन परिवारा, अन्त काल को दे न सहारा ।
तां को त्यागो अब हीं जागो, प्रभु मिलन की राक्खो प्यासा ।।३।।
कहे टेऊँ तुम श्रद्धा धारे, जाओ पूर्ण गुरु के द्वारे ।
आत्म ध्याए शान्ति पाए, अगम देश में करले वासा ।।४।।

राग जिला

रे मन देखो कर वीचारा, स्वप्नमय है सब संसारा ॥टेक॥
माता स्वप्ना ताता स्वप्ना, भैन स्वप्न सुत भ्राता स्वप्ना ।
विछुड़न स्वप्ना मिलना स्वप्ना, स्वप्नमय है सब परिवारा ॥१॥
वैठन स्वप्ना धावन स्वप्ना, पीवन स्वप्ना खावन स्वप्ना ।
देवन स्वप्ना लेवन स्वप्ना, स्वप्नमय है सब व्यवहारा ॥२॥
मगता स्वप्ना दाता स्वप्ना, मूर्ख स्वप्ना ज्ञाता स्वप्ना ।
श्रोता स्वप्ना वक्ता स्वप्ना, स्वप्नमय है सब विस्तारा ॥३॥
कहे टेऊँ सब स्वप्ना जानो, इक आत्म ही सत् पहचानो ।
आत्म जानत स्वप्ना नाशत, वेद मुनियों करत उच्चारा ॥४॥

राग जिला

हे प्रभु ! प्यारे ! प्राण अधारे, कब तुम दरस दिखाओगे ।
प्रेम सच्चे का प्याला मुझको, कब तुम आन पिलाओगे ॥टेक॥
मार्ग तेरा देख देख कर, आँखे मेरी तरस रही ।
अपना दर्शन मोहि दिखा कर, कब तुम प्यास बुझाओगे ॥१॥
तुम बिन खान पान नहीं भावे, नैंने नीन्द न आती है ।
दीन बन्धु कब कृपा कर के, अपने साथ मिलाओगे ॥२॥
प्रीतम तुम बिन और न कोई, मेरे दुःख को दूर करे ।
साजन मेरे मन अन्तर की, कब तुम पीड़ मिटाओगे ॥३॥

कहता टेऊँ नाथ तुम्हारा, पल पल नाम पुकारत हूँ ।
टेर तुम्हारी सुन कर स्वामी, कब तुम कण्ठ लगाओ गे ॥४॥

राग जिला

मैं डूबत था भवसागर में,
गुर नाम की नाव चढ़ाय दिया ॥टेक॥
मैं पाप कर्म को करता था,
जग जंगल मांहि विचरता था ।
नित मोह ममत में मरता था,
गुर सबसे मोहि छुड़ाय दिया ॥१॥
इस मन में दोष अपारा था,
पुनि पांचो चोर विकारा था ।
उर महा अज्ञान अन्धारा था,
गुर ज्ञान से सर्व हटाय दिया ॥२॥
कहे टेऊँ और न जानत था,
मैं अपने को तन मानत था ।
निज आत्म को ना पछानत था,
गुरु आत्म लाल लखाय दिया ॥३॥

राग जिला

काहें को तुम चिन्ता करते, प्रभु पालन हारा है ॥टेक॥

मात गर्भ जहिं रक्षा कीनी, सो अब देवन हारा है ।
आप बिसार दिया है उसको, उसने नाहिं बिसारा है ॥१॥
चौरासी लख को वह पालत, किस को भूख न मारा है ।
कैसे आप लजावेगा, जहिं नाम विश्वम्भर धारा है ॥२॥
कहता टेऊँ कर विश्वासा, दीन-बन्धु दातारा है ।
धीर्ज धारे हरि को स्मरो, जामें क्षेम तुम्हारा है ॥३॥

❀ राग बसन्त ❀

ऋतु ऋतु में है रङ्ग साहिब का, बसन्त ऋतु रंगवारी रे ॥टेक॥
सूखे तरु भये पत्र अपारा, बन बन फूले बाग फुलारा ।
फूल रही फुलवारी रे ॥१॥
बसन्त ऋतु का देख निज़ारा, रिलमिल भँवरे करत गुञ्जारा ।
सुगन्ध ले सुखकारी रे ॥२॥
बसन्त ऋतु को सब जन गावत, सुर नर मुनि जन के मन भावत ।
मुझ को लागत प्यारी रे ॥३॥
बसन्त ऋतु है बहुत रसाली, कहे टेऊँ भये सन्त सुखाली ।
जाऊँ बलि बलिहारी रे ॥४॥

राग बसन्त

सद्गुरु साहिब सन्त मिलाया, जागिया भाग हमारा जी ॥टेक॥
नित अवतारी पर उपकारी, कर्म भ्रम की काटत जारी ।
लेकर ज्ञान कटारा जी ॥१॥

द्वैत विना जे सन्त विदेही, प्रकट नाम सुनावहिं सेई ।
हरत अज्ञान अन्धारा जी ॥२॥
जो घर बिछुड़ा सो घर पाया, हर सन्तो को सीस नवाया ।
भव सागर जन तारा जी ॥३॥
कहे टेऊँ पुण्य पूर्व फलिया, सन्त सज्जन मन मेली मिलिया ।
वर्षे अमृत धारा जी ॥४॥

राग बसन्त

वसन्त की ऋतु है सुखदायी, भँवरों के मन भाई रे ॥टेक॥
भँवरा जावत गुलस्ताना, होवत फूलों पर मस्ताना ।
तन की सुधि विसराई रे ॥१॥
वसन्त ऋतु की देख बहारी, चारों तर्फ भई हुबकारी ।
पांचो ऋतु शर्माई रे ॥२॥
वसन्त ऋतु अमृत को सींचे, फूले तन मन बाग़ बग़ीचे ।
जहाँ तहाँ सुगन्धि छाई रे ॥३॥
वसन्त ऋतु की महिमा भारी, कहे टेऊँ मुझ लागत प्यारी ।
ताँ पर मैं बलि जाई रे ॥४॥

राग बसन्त

सन्तों के संग होरी खेलो रे, पीवो प्रेम प्याला रे ॥टेक॥
जांके पीवत होय बहारी, दिन दिन बढ़ती जाय खुमारी ।

होय मन मतवाला रे ॥१॥
श्रद्धा की तुम केंसर करिये, अत्तर अम्बीर श्रेष्ठ गुण धरिये ।
लाओ ज्ञान गुलाला रे ॥२॥
कहे टेऊँ यह होरी गाये, ब्रह्मानन्द में वृति मिलाये ।
पावो आनन्द विशाला रे ॥३॥

राग बंसत

विरह बसन्त मेरे घर आये, होया मँगल चारा रे ॥टेक॥
वाजे बन्सी सङ्ख सितारा, वाजे मृदङ्ग चङ्ग चौतारा ।
जांझन का झन्कारा जी ॥१॥
रिल मिल सखियां हरिगुन गाया, सुरति नृति ने आनन्द पाया ।
भूल गया वँहवारा जी ॥२॥
मन मंदिर में भया प्रकाशा, अविद्यातम का भया बिनाशा ।
होया जय जयकारा जी ॥३॥
कहे टेऊँ मोहि दर्शन दीना, दर्शन कर मैं सब दुःख छीना ।
पाया सूख अपारा जी ॥४॥

राग बंसत

श्वास श्वास से जप जज्ञासु, इक अक्षर अविनाशी रे ॥टेक॥
जिससे होया यह जग सारा, ताँका होय प्यासी रे ॥१॥
जिससे चारों वेद बने है, सो तुम जप सुखरासी रे ॥२॥

जिससे यन्त्र मन्त्र सब निकले, तांका हो अभ्यासी रे ॥३॥
कहे टेऊँ तहिं निश्दिन ध्याये, हो अमरापुर वासी रे ॥४॥

राग बंसत

श्री राम नाम को रटना रे, जम फांसी कटना रे ॥टेक॥

राम साथ आराम बिराजे, देखो राम बुलाइये ।
राम से विष विश्राम होय है, देखो राम मिलाइये ।
हरिस्मरण से दुःख घटना रे ॥१॥
भाव किसी से भी तुम जग में, राम रटो दिन राति ।
राम तुम्हारे पाप हरेंगे, यह गुन तिस में जाति ।
हरि स्मरण से नहीं हटना रे ॥२॥
समय समय अनसाधन बदले, मुक्ति देने वाले ।
राम नाम ना कवहुँ बदले, समझ ले मतिवाले ।
हरि स्मरे बाज़ी खटना रे ॥३॥
कहे टेऊँ जे चाहो मेरा, भव से हो निस्तारा ।
तो सन्तों के सङ्ग में रह कर, स्मरो राम उदारा ।
जड़ पापों की तुम पटना रे ॥४॥

राग बंसत

घर मेरे सद्गुरु आया रे, बहु आनन्द छाया रे ॥टेक॥
मिल मिल सखियां देओ वधाई, सद्गुरु चरण पधारे ।

आज सफल भये कार्ज मेरे, गुरु दर्शन से सारे ।
मैं देख देख हर्षाया रे ॥१॥

सेवक के घर गुरु का आना, भाग्य की नीशानी ।
विघ्न नशावे पुण्य वढ़ावे, दे गुण मङ्गल खानी ।
अब सर्व दुःख मिटजाया रे ॥२॥

आज द्विस पल पहर घड़ी, धन्य धन्य है भाग्य हमारे ।
मन मन्दिर में रोशन होया, बाजे ढोल नग़ारे ।
मैं गीत खुशी के गाया रे ॥३॥

कहता टेऊँ हरि कृपा से, सद्गुरु दर्शन दीना ।
जप तप संयम दान स्नाना, सर्व सफल मम कीना ।
मैं परमानन्द को पाया रे ॥४॥

* राग तिलंग *

चलिये साधों देश अमर घर, जन्म मरण मिट जावत फेरा ॥टेक॥

चरण कमल सद्गुरु को ध्याओ,
मूल कमल से मूल बन्धावो ।
गुण गणेश को तहां मनाओ,
लिङ्ग कमल अज जान बसेरा ॥१॥

नाम कमल से नाम चलाए,
विश्व व्यापक विष्णु पाए ।
हृदय में शिव शङ्ख बजाए,

सहज धुनि सुन साँझ सवेरा ॥२॥
कण्ठ कमल सरस्वती प्यारी,
वहां विराजे हंस विचारी ।
त्रिभरणा के घर ज्योति उज्यारी,
निरञ्जन का नित हरो अन्धेरा ॥३॥
इड़ा पिङ्गला सुष्मिना नाड़ी,
भंवर गुफा सुन वीन सतारी ।
सुन सकड़ शान्ति अपारी,
पीले प्याला अमृत केरा ॥४॥
कहे टेऊँ कोई कला धारे,
चलिया ऊपर दशम द्वारे ।
दिन नहीं रजनी जहिं रिणु कारे,
बिन भूमि पा ब्रह्म का डेरा ॥५॥

राग तिलंग

दिव्य रूप दर्शन गुरां के निजारे,
देखा मेला कुम्भ का गंगा के किनारे ॥टेक॥
योगी वैरागी त्यागी वैरागी,
रागी अनुरागी हरि हर पुकारे ॥१॥
सन्यासी उदासी प्रेम प्रकाशी,
आकाशी वनवासी नंगे थे हजारे ॥२॥

ब्रह्मचारी पूजारी आर्य्य अचारी,
संसारी उदारी करत बहु भंडारे ॥३॥
भेष पन्थ बहुते जड़ चेतन पूजते,
सन्त महन्त वक्ते अखण्ड ज्ञान उच्चारे ॥४॥
कहे टेऊँ कांहीं ऐसा मेला नाहीं,
देखे जो जन तांहीं तिसे भाग भारे ॥५॥

राग तिलंग

देही मन्दिर अति सुन्दर, अजब हरि ने बनाया है ।
रक्खे दस द्वार शुभ ता में, सर्व देवनि सुहाया है ॥टेक॥
परस्पर पांच तत्व मेले, सत्तर का जोड़ जोड़ा है ।
त्वचा का चून लेपन दे, पवन खम्भा लगाया है ॥१॥
इन्द्रिय चोदह रखी खिड़की, प्रेरक देवता कीने ।
तहां दिल कोठड़ी रच कर, वहां आसन लगाया है ॥२॥
अवस्था तीन के मांहीं, करत हैं खेल नित नाना ।
असङ्ग सबसे रहत सोई, यही वेदन बताया है ॥३॥
कहे टेऊँ लखे तांको, गुरु के सङ्ग से कोई ।
बड़े हैं भाग तिस नर के, जिसने दर्स पाया है ॥४॥

राग तिलंग

जगत के काम सब झूठे, मुझे अब त्याग करना है ।

सचा इक नाम ईश्वर का, सदा मन मांहि धरना है ।।टेक।।
तजे परिवार सुत दारा, महल मन्दिर रत्न मोती ।
धरे शिर भेष बैरागी, सदा मन साथ लड़ना है ।।१।।
विषय की वासना त्यागे, रहो गंगा किनारे पर ।
शब्द गुरु देव का स्मरे, जगत का मोह जरना है ।।२।।
तजे सङ्ग मूढ पुरुषों का, रहो सत्संग में हरदम ।
सुनो उपदेश सन्तों का, भ्रम अरु भेद हरना है ।।३।।
कहे टेऊँ लज्जा तोड़े, निसंग निर्वार हो सब से ।
चढ़ो गुरु ज्ञान के वेड़े, जगत से पार तरना है ।।४।।

राग तिलंग

लिखा जो भाग तेरे में, अवश्य होगा बन्दा सोई ।।टेक।।
धरन पानी गुफा नभे में, छिपाओ आपको बन में ।
चाहे सुर नर करे रक्षा, अवश्य होगा बन्दा सोई ।।१।।
लिखो यन्त्र करो तन्त्र, पढो पुन मन्त्र वेदों के ।
चाहे ओषद्धि करो कितनी, अवश्य होगा बन्दा सोई ।।३।।
कहे टेऊँ करम गतिका, मिटे ना लेख यत्नों से ।
दुःखी हो या सुखी हो तुम, अवश्य होगा बन्दा सोई ।।४।।

राग तिलंग

तुम हो भगवन दीन दयाला,
काट कर्म अब करो निहाला ।।टेक।।

साईना तारा सदना कसाई,
नामे की धेनु जिवाई ॥१॥
दान द्रोपदी क्या तुम दीना,
शर्म सभा में तुम रख लीना ॥२॥
गनका अजा मेल पाप कमाया,
कर्म कटे तिंहि मुक्त कराया ॥३॥
भेट सुदामा क्या ले आया,
काट कङ्गाली महल बनाया ॥४॥
आदि जुगां जुग आकर स्वामी,
तारे पापी क्रोधी कामी ॥५॥
मेरी भी हरि विनय सुनीजे,
कहे टेऊँ निज दर्शन दीजे ॥६॥

राग तिलंग

प्रभु लीनी अब ओट तुम्हारी, देख भयानक भव यह भारी ॥टेक॥
तुम हो दाता दीन दयाला, मैं हूँ दुखिया दीन कङ्गाला ॥१॥
बहुत जन्म मै भ्रमित आया, यत्न किया कुच्छ सुख ना पाया ॥२॥
कर्म उपासना कीनी भारी, टूटी नाहीं जम की जारी ॥३॥
कहे टेऊँ अब सुन भगवन्ता, अभय दान दे करो निश्चिन्ता ॥४॥

राग तिलंग

साजन सुख है राम भजन में, ना सुख सुन्दर मंदिरों मांही ।
ना सुख त्रिया पुत्रों मांही, ना सुख भाया मित्रों मांहो ।
ना सुख राग रत्न में ॥टेक॥

ना सुख शाहनशाही अन्दिर, ना सुख मान बड़ाई अन्दिर ।
ना सुख पढ़न पढ़ाई अन्दिर, ना सुख देश रटन में ॥१॥

ब्रह्मा विष्णु शङ्कर लोका, तामें रञ्चक सुख न विलोका ।
तीन भवन में भरिया शोका, ना सुख चिर जीवन में ॥२॥

सर्व त्याग गुरु शरणी आवे, मन थिर कर जो हरिगुन गावे ।
कहे टेऊँ सो सुख को पावे, पढ़ देखो वेदन में ॥३॥

राग तिलंग

साधो ! राम वसे हर रंग में, राम रंग बिन रंग न खाली ।
रंग २ में लालन की लाली, देख २ भक्ति भई मतवाली ।
झूम रहा झर झङ्ग में ॥टेक॥

जेते रंग इस जगत मंझारे, रामरंग से शोभत सारे ।
तिस बिन सकले रंग असारे, पढ देखो प्रसंग में ॥१॥

चाँद सूर्य में चमके सोई, दामनि में भी दमके सोई ।
सब ज्योतनि में झमके सोई, झलकत नाना नंग में ॥२॥

देखत नैंनो से दीदारा, बोलत मुख से वचन अपारा ।

सुनत शब्द श्रवण से सारा, फैल रहा अंग अंग में ॥३॥
सागर लहिरों के भो अन्तर, झूल रहा है राम निरंतर ।
कहे टेऊँ ले तिसका मंत्र, स्मरो सद्गुरु संग में ॥४॥

राग तिलंग

तुम हो ब्रह्म स्वरूप, जीवपने का भाव मिटावो ॥टेक॥
जन्म मरण है तन के धर्मा, षट उर्मी पुनि वर्ण आश्रमा ।
नहीं तुम सुंदर कुरूप, देह अध्यास को वेग हटावो ॥१॥
नाम रुपमय यह संसारा, जड़ परिणामी दुःख भय सारा ।
तजे नाम अरु रूप, अस्ति भांति प्रिय मांहि समावो ॥२॥
तुम है अखंड अजर अविनाशी, आत्म चेतन आनंद राशी ।
असंग एक अरूप, उलटि आपने अतंर आवो ॥३॥
कहे टेऊँ निज रूप पछानो, पांचो भेद भ्रांति मानो ।
आदि धाम अनूप, सद्गुरु के प्रसादे पावो ॥४॥

राग तिलंग

स्मरले नाम ईश्वर का, जगत नाता सकल हरके ।
वनो वासी अमर घर के, जन्म मरण मिटाओ जी ॥टेक॥
बैठ सत्संग हरवारी, सफल करले उम्र सारी ।
विश्व में देख गिरधारी, किसी को ना सताओ जी ॥१॥

गुरु से ज्ञान गम लीजे नाश अज्ञान तम कीजे ।
सर्व संश्य भ्रम छीजे, मुक्ति का गैल पाओ जी ॥२॥
सदा संतोष मन धरके, हरि की आस कर के ।
भक्ति अर भाव उर भरके, हरि से हेत लाओ जी ॥३॥
कहे टेऊँ कहा मानो, सच्चे स्वरूप को जानो ।
उत्तम गुण को हृदय आनो, सकल अवगुण मिटाओ जी ॥४॥

राग तिलंग

सुन ले प्रभु प्यारे, यह है विनय हमारी ।
धरि नाथ हाथ मुझ पर, मैं हूँ शरण तुम्हारी ॥टेक॥
भव सिन्धु बहा जाता, कोई नहीं बचाता ।
करले तुम पार सागर, पकडे भुजा बिहारी ॥१॥
ताकत नहीं है तन में, नहीं भाव भक्ति मन में ।
होगा उद्धार कैसे, चिन्ता मुझे है भारी ॥२॥
बचपन गया खेलन में, यौवन विषय रसन में ।
कीना न शुभ कर्म को, वृथा उम्र गुजारी ॥३॥
बहु पतित तुम उधारे, अवगुण नहीं निहारे ।
कहे टेऊँ तार मुझ को, कृपा करे मुरारी ॥४॥

राग तिलंग

कैसे ध्याऊं तुझे कैसे मैं पाऊं, मुझे बताओ ॥टेक॥

या होवां ग्रहस्थी चित्त उदारी, दया धीर्ज सत्य वृत धारी ।
तीर्थ नाऊ वा यज्ञ कराऊं ॥१॥
या होवां साधु निज संयासी, घरको छोड़ बनूं बनवासी ।
जटा बढ़ाऊं वा मूंड मुण्डाऊं ॥२॥
या होवां पण्डित कर्माचारी, ठाकुर पूजू हो पूजारी ।
भोग लगाऊं वा घण्टी बजाऊं ॥३॥
कहे टेऊँ सो करूं सद्वारी, जिस में हरी हो रूचि तुम्हारी ।
मौन रहूँ वा हरिगुन गाऊं ॥४॥

राग तिलंग

मन किसको दिल न दुखाना, यह ईश्वर का स्थाना ॥टेक॥
गंगा यमुना करले तीर्थ, भावें दे बहु दान पदार्थ ।
दिल रञ्जाने से सब व्यर्थ, यह संत करत वक्षाना ॥१॥
दिल रञ्जाने जैसा भारा, पाप न कोई जगत मंझारा ।
तांते इससे करो किनारा, यह कहते वेद पुराना ॥२॥
जड़ मंदिर पूजत पूजारी, हरि मन्दिर दे दुःख भारी ।
क्यों तेरी मन है मति मारी, कुच्छु समझत नहीं नादाना ॥३॥
जो हरि मंदिर दिल को सेवे, हरि ठाकुर तिंहि दर्शन देवे ।
कहे टेऊँ सो सब फल लेवे, पुनि होवे पुरुष महाना ॥४॥

राग तिलंग

प्रभु मेरा अर्ज अघावो, सब जन के कष्ट मिटाओ ॥टेक॥

दुःख सागर में जीव अपारे, डूब रहे न लगे किनारे ।
ऊँचे स्वर से तोहि पुकारे, अब तिनको आन तराओ ॥१॥
शोक अग्नि से जीव विचारे, रैन दिवस ही जलते सारे ।
रोदन कर सब तोहि पुकारे, अब तिनकी तप्त बुझाओ ॥२॥
इस जगत रूपी जंगल मंझारे, भूल पड़े है जीव गवांरे ।
राह न सूझत जिन्हे मुरारे, अब तिनको राह लगाओ ॥३॥
कहे टेऊँ सुन सत्-कर्तारि, थर थर कम्पत जीव तुम्हारे ।
तुम बिन कोई ना रखवारे, अब आकर उन्हे बचाओ ॥४॥

राग तिलंग

क्यों जग से प्रीति लगाते, ओ बंदे ! सब तुझे छोड़ जाएंगे ॥टेक॥

माया इकट्ठी करने कारण, पाप करते बहु भाई ।
भोग रसन को भोगत भोगत, ज़रा लाज नहीं आई ।
क्यों वृथा जन्म गंवाते ॥१॥
देख देख जिस सुन्दर तन को, करते हो शृङ्गारा ।
हाड्ड मास का तेरा तन वो, होगा इक दिन छारा ।
क्यों झूठी देह सजाते ॥२॥
जगत पदार्थ झूठे हैं सब, जिन्हें देख हर्साया ।
झूठे हैं सब साक सम्बन्धी, जिन से नेह लगाया ।
ये किससे नाहिं निभाते ॥३॥
कहे टेऊँ तुम भूल न जाना, मेरा यह उपदेशा ।

राम भजन तुम अबहिं करले, जासे मिटहिं कलेशा ।
यह संत वेद बतलाते ॥४॥

राग तिलंग

अपनी मौज बनावन कारण, साङ्ग बनाया मैं वो मैं ॥टेक॥

ब्रह्मा होकर जगत बनाए, पांच तत्व गुण तीन मिलाए ।
रंग रचाया मैं वो मैं ॥१॥
बाज़ीगर बन बाजी लाए, बे खुदी वाली बीन बजाए ।
नाच नचाया मैं वो मैं ॥२॥
राज बनकर राज कमाए, माल ख़ज़ाना सेन सजाए ।
हुकम चलाया मैं वो मैं ॥३॥
पण्डित बनकर पुस्तक लीना, वृत नेम को स्थित कीना ।
कर्म कमाया मैं वो मैं ॥४॥
टेऊँ राम निज नाम धराए, सब के अन्दर ज्योति समाए ।
आप छिपाया मैं वो मैं ॥५॥

राग तिलंग

जो कुच्छ तुम यह देख रहे हो, सो सब खेल तुम्हारा है ॥टेक॥

तुम ही खेल बनाया सारा, तुम ही देखन हारा है ॥१॥
तेरे होते सब कुच्छ होवे, तुझ बिन नहीं संसारा है ॥२॥
तेज तुम्हारे से प्रकाशत, अग्नि रवि शशि तारा है ॥३॥

सब के अन्दर तू ही रमिया, तू ही सब से नियारा है ॥४॥
कहता टेऊँ तीन लोक में, तेरा ही दीदारा है ॥५॥

राग तिलंग

मानुष देही अमोलक पाई, हरि का नाम उच्चारो रे ॥टेक॥
साध संगत की सेवा कर के, अपना जन्म सुधारो रे ॥१॥
काम क्रोध मद लोभ निवारे, गुरु का वचन विचारो रे ॥२॥
सद्गुरु का सत्ज्ञान पाए, संसा भ्रम निवारो रे ॥३॥
कहे टेऊँ गफलत को त्यागे, अपना आप सम्भारो रे ॥४॥

राग तिलंग

मानुष देह अमुल को पाए, हरि हृदय नहीं ध्याया रे ॥टेक॥
धर्म कर्म नहीं कीना कोई, वृथा जन्म गवांया रे ॥१॥
धन दारा सुत सम्पति मांहीं, अपना आप बन्धाया रे ॥२॥
देवन को भी दुर्लभ यह तन, भागों से तू पाया रे ॥३॥
कहे टेऊँ अब चेत प्राणी, करले जन्म सजाया रे ॥४॥

राग तिलंग

देश छोड़ पर देश में आए, साचा वणज विहाना रे ॥टेक॥
ऊठ मुसाफर जागो जल्दी, नीन्द न कर नादाना रे ॥१॥
इस जग की बाज़ार मञ्झारे, सत्संग खुला दुकाना रे ॥२॥

सन्त जनों की सेवा करके, हरि का दर्शन पाना रे ॥३॥
कहे टेऊँ सद्गुरु प्रसादे, पावो पद निर्बाना रे ॥४॥

राग तिलंग

सांग पहन कर शाहनशाही, क्यों तुम भटका खाते हो ॥टेक॥
सांग धार कर शेरों का, क्यो स्यालों से डर जाते हो ॥१॥
सांग पहन कर अवधूतन का, क्यों धन में लपटाते हो ॥२॥
सांग बनाकर मुर्दे केरा, क्यों मुख बात चलाते हो ॥३॥
कहे टेऊँ धर भेष फकीरी, क्यों तुम ढोंग बनाते हो ॥४॥

राग तिलंग

मैं बालक तुम मात पिता गुर, हर दम मेरी सार करो ॥टेक॥
मैं हूँ पापी तुम हो पावन, पाप सर्व सँहार करो ॥१॥
तीन ताप में जलता हूँ मैं, मुझ को ठंढा ठार करो ॥२॥
मैं गुण हीना तुम गुण खानि, मम उर गुण भण्डार भरो ॥३॥
डूबत हूँ भव सागर में, कहे टेऊँ अब पार करो ॥४॥

राग तिलंग

अगम देश में अलख बिराजे, नहीं वहाँ जगत पसारा है ॥टेक॥
नहीं वहाँ ब्रह्मा नहीं वहां विष्णु, नहीं वहाँ शिव का द्वारा है ॥१॥
नहीं वहाँ सूर्य नहीं वहाँ चन्दा, नहीं वहाँ दामन तारा है ॥२॥

नहीं वहाँ भूमि नहीं अग्नि आकाशा, नहीं वायु जल धारा है ॥३॥
नहीं वहाँ नरक स्वर्ग नहीं देवा, नहीं वहाँ अंग अकारा है ॥४॥
कहे टेऊं नहीं तीन काल तँह, नहीं त्रिगुण विस्तारा है ॥५॥

❋ राग हुसैनी ❋

मेरे मन राम स्मर अविनाशी, जांके स्मृत सब दुःख नाशे ।
टूटे यम की फासी ॥टेक॥
राम नाम को सन्तन स्मरे, पाई आनन्द राशी ।
जन्म मरण का फेरा मेटे, अमर देश भये वासी ॥१॥
राम नाम का स्मरण कर बहु, जगते भये उदासी ।
गोपीचन्द भरथरी पीपा, बन गये वन के वासी ॥२॥
राम नाम के स्मरण से ही, पाप पुञ्ज हो नाशी ।
कहे टेऊँ हरि के स्मरण बिन, यमपुर होवे हासी ॥३॥

राग हुसैनी

प्रभु ने अपनी कृपा धारे, आदि जुगां जुग निजं भक्तन के ।
आकर दुःख निवारे ॥टेक॥
नाम देव हित गऊ जिवा कर, लाज बचाई प्यारे ।
सैने सदने का दुःख मेटे, तांके काज संवारे ॥१॥
भक्त प्रहलाद का कष्ट निवारा, हो नरसिंह मुरारे ।
द्रोपदी की लाज रक्खी हरि, देकर चीर अपारे ॥२॥

जाट धने का दुःख हर लीना, सांवल खेत सुधारे ।
कबीर का हरि शान बढ़ाया, खोले अखण्ड भण्डारे ॥३॥
कहता टेऊँ श्रवण देके, सुनिये सन्त उदारे ।
जो यह साक्षी साची है, तो आयेंगे मम द्वारे ॥४॥

राग हुसैनी

इक हो प्रेम प्रभु को भाया, जाति वर्ण कुल कर्म न देखा ।
प्रेम के हाथ विकाया ॥टेक॥

प्रेम अटल जब केवट कीना, राम देख मुस्काया ।
जिन चरणो को योगी चाहत, से निज चरण धुलाया ॥१॥
प्रेम भीलनी का जब देखा, रघुवर तब घर आया ।
प्रेम जटाऊ का लख हरि ने, अपने धाम पठाया ॥२॥
प्रेम देख सुग्रीव का हरि ने, अपना मित्र बनाया ।
प्रेम पवन सुत ऐसा कीना, रघुपति कण्ठ लगाया ॥३॥
प्रेम विभीषण का जब देखा, तब हरि राज दिलाया ।
कहे टेऊँ यह प्रेम हरिका, भाग बड़े किस पाया ॥४॥

राग हुसैनी

साधो ! इस विधि पूजा कीजे ! ऊठत बैठत सोवत जागत,
सद्गुरु शब्द पढ़ीजे ॥टेक॥

दया सर्व पर कर भण्डारी, वीर धर्म ठहराओ ।

सुरताँ जोगिरण को जगाए, अनुभव दीप जगाओ ।।१।।
स्थित करके आज विश्वासा, आत्म दर्शन करीए ।
ब्रह्म बिचारी करो अचारी, ध्यान उसी का धरीए ।।२।।
नौ राता नौ द्वारे जागी, खोलो दशम द्वारा ।
देवी आत्म शक्ति का तुम, करिले ताहिं दीदारा ।।३।।
कहे टेऊँ इस विधि पूजा से, देवी प्रसन्न होवे ।
मुक्ति भुक्ति शक्ति देके, जन्म मरण दुःख खोवे ।।४।।

राग हुसैनी

सद्गुरु मुझ को भेद बताओ, मैं मूर्ख कुच्छ जानत नाहीं,
भिन्न भिन्न कर समझाओ ।।टेक।।
मैं हूँ कोन कहां से आया, होगा फिर कहिं जाना ।
किस ने मोहि बनाया जग में, सद्गुरु दे यह ज्ञाना ।।१।।
कौन जन्मता कौन मरत है, कोन सुख दुःख को पाता ।
काल किसी को कहते है जो, तीन लोक को खाता ।।२।।
जीव कौन है ब्रह्म कौन है, जगत रूप किया लहिये ।
कैसे बनिया किसने बनाया, कृपा कर यह कहिये ।।३।।
कौन रूप है मन का जिसने, सारा जग भ्रमाया ।
कहे टेऊँ यह शङ्का मेटो, शरण तुम्हारी आया ।।४।।

राग हुसैनी

मेरे मन ! छोड़ मलीन अभिमाना, सन्त-ग्रन्थ सब पुरान पुकारे,

सुनिये दे निज काना ॥टेक॥

प्रान प्यारे साथी चल गये, तुम भी चलने हारा ।
दो दिन के है रहने वाले, जीव सकल संसारा ॥१॥
जबहि जग में जन्म लिया तुम, साथ कच्छू नहीं लाये ।
धन परिवार को बहुत बढ़ाया, अन्त काम नहीं आये ॥२॥
कहे टेऊँ अब कर विचारा, सद्‌गुरु शरणी जाओ ।
लेकर तांसे आत्म ज्ञाना, परम मुक्ति को पाओ ॥३॥

❀ राग कोहियारी ❀

यह तन तेरा होसी खाक मसाना ।
लहिर सागर ज्यों आना जाना ॥टेक॥

बीज धनुष ज्यों मृग जलमाया, तरुवर बादल धूम्र छाया ।
स्टेशन पर पल घड़ी ठिकाना ॥१॥
खेल मदारो ज्यों संसारा, आदित्या ओला उड़हिं पारा ।
मोर नखट पत्ते बून्द न ठाना ॥२॥
मात पिता सुत बन्धु लुगाई, साथ चले ना धन इक पाई ।
सूखे वृक्ष ज्यों पंछी उड़ाना ॥३॥
पापी जग में पाप कमावे, जाकर नरके दुःख को पावे ।
तांते भूल न पाप कमाना ॥४॥
धर्मी पुण्य कर स्वर्ग जावे, ज्ञानी शुद्ध स्वरूप समावे ।
फिर न होवे उसका आना ॥५॥

कहे टेऊँ तोड़े तीनो पर्दा, गुरु भक्ति का करले सौदा ।
तन मन धन का तजि अभिमाना ॥६॥

राग कोहियारी

प्रेम ने मुझ को वान्ध लिया है, ब्रह्म केरे वन्दखाने मइखाने॥टेक॥

जैसे पतंग दीप अनुरागी, नृति त्यों गुरु मूर्त लागी ।
गुरु को गोविन्द जाने धरे ध्याने ॥१॥
सुनके नाद कुरङ्ग तन भूला, तैसे शब्द श्रुति मिलभूला ।
मिल हरि सुख माने अमृत पाने ॥२॥
हंस अनल जिम सार सुजागी, तैसे वृति विवेक हि रागी ।
लाल पाया तन छाने रहा सुखाने ॥३॥
कहे टेऊँ कर जोड़ पुकारे, ऊगा सहस्र भान उज्जारे ।
पाया पद निर्बाने ब्रह्मज्ञाने ॥४॥

राग कोहियारी

फिठ पगड़ी जुठ जामा पाकर, पाप सर्व मैं धौया,
सुख घर सोया ॥टेक॥

लोक निन्दा की नाव बनाए, बद्नेकी का भार चढ़ाए ।
पार द्वन्द से होया, सुख घर सोया ॥१॥
पाए गिला कागल में छांगा, छोड़ा लोकनि का आसांगा ।
हरि आरामी होया, सुख घर सोया ॥२॥

खिटपिट को मैं बान्धी धोती, महिने ताने के कर मोती ।
सुन्दर हार प्रोया, सुख घर सोया ॥३॥
कहे टेऊँ मैं भया निराला, खुद मस्ती का पीकर प्याला ।
तीन लजा को खोया, सुख घर सोया ॥४॥

राग कोहियारी

सहसे साज बजे घट भीतर, मधुर मधुर झन्कारा ।
सुनले प्यारा ॥टेक॥
घिण्ड घड़ियाला नरसिंह भेरी, बाजत नाद नग़ारा ।
सुनले प्यारा ॥१॥
तबला सारङ्गी सुरन्दा बाजे, चङ्ग उपङ्ग चौतारा ।
सुनले प्यारा ॥२॥
बीन सुरीली बेहद बाजे, अनहद का धुनिकारा ।
सुनले प्यारा ॥३॥
कहे टेऊँ ले गुरु से युक्ति, साज सुरीले सारा ।
सुनले प्यारा ॥४॥

राग कोहियारी

बाज़ीगर इक बाज़ी पाई, अजब रक्खा इस्रारा,
बल बल हारा ॥टेक॥

पर्दे अन्दर रङ्ग रचाया, बहु विधि मृदंग ताल बजाया ।
खेले खेल अपारा ॥१॥
प्रकट नाना खेल दिखावे, खेलन वाला नजर न आवे ।
अचर्ज है यह भारा ॥२॥
जिस पर गुरु की कृपा होवे, टेऊँ सो बाज़ीगर जोवे ।
बाज़ी से हो न्यारा ॥३॥

राग कोहियारी

मोहन मेरे घर में आए मुरली मधुर बजाए, रास रचाए ॥टेक॥
सब सखियों में शोभाधारी, ऊग्या भान गई अन्धारी ।
मिलकर मङ्गल गाए ॥१॥
सहसें साज़ बजन सुर मंडल, अनुभव अखियां ज्ञान के कुण्डल ।
अनहद नाद बजाए ॥२॥
सर्गुण में जो निर्गुण निरक्षा, रूप में रूप अरूप सो परक्षा ।
परिक्षे आप लखाए ॥३॥
कर जोड़े कर कहता टेऊँ, अन्दर ओऽहं बाहिर सोऽहम् ।
साक्षी बन सुख पाए ॥४॥

राग कोहियारी

देह मन्दिर में देव बिराजे, साक्षी सजरण हारा सत्कर्तारा ॥टेक॥
तीन अवस्था तीन देह से, रहता है नित न्यारा ॥१॥

जाग्रत स्वप्न सुषोप्त मांहीं, खेलत खेल अपारा ॥२॥
रूप रेख कच्छू रंग न उसका, पांच कोष से पारा ॥३॥
कहे टेऊँ मैं गुर प्रसादे, देखा तिह दीदारा ॥४॥

राग कोहियारी

मानुष जन्म पवित्र पाया, माँस मच्छी मत खाना,
समुझ सयाना ॥टेक॥
जेजन जग में माँस अहारी, ते जाय नरक निदाना ॥१॥
रस के कारण घात करत जे, ते नर मूढ अजाना ॥२॥
माँस मनुष्य का नाहि अहारा, दैतों का है खाना ॥३॥
कहता टेऊँ माँस का खण्डन, करते वेद पुराना ॥४॥

राग कोहियारी

देखा जग में सन्त उदारी, सार ग्राही सत्विचारी ॥टेक॥
सच्च ही देवे सच्च ही लेवे, सच्च ही देखे सच्च ही सेवे ।
सम दम आदिक षटगुणधारी ॥१॥
अपने शिर पर दुःख सहारहिं, सब जीवों के कष्ट निवारहिं ।
स्वार्थ बिन से पर उपकारी ॥२॥
अति कृपालु कृपा करहिं, जन्म मरण दुःख को वे हरहिं ।
मात पिता ते अति हितकारी ॥३॥

कहे टेऊँ से ब्रह्म ज्ञानी, रहते आत्म अन्तर ध्यानी ।
जाऊं तिन पर मैं बलिहारी ।।४।।

राग कोहियारी

हरि का भजन कर भाई, हरि बिन तेरा कौन सहाई ।।टेक।।
जब हि जम आ चोट चलावे, मात पिता तब नाहिं छुडावे ।
काम न आवे लड़का लुगाई ।।१।।
यह दुनियाँ है खाक की ढेरी, अन्तकाल ना होवे तेरी ।
क्यों तुम इस से प्रीति लगाई ।।२।।
मनुष्य जन्म दुर्लभ जग जानो, चौरासी से ऊँचा मानो ।
स्मरो इसमें हरि सुखदायी ।।३।।
कहे टेऊँ तूं समुझ प्यारा, भजन बिना नहीं होय उधारा ।
वेद पुरान साख सुनाई ।।४।।

❁ राग सोरठ ❁

मोहि भूल गया संसार, सुन्दर मुरली सुनके ।।टेक।।
चारण चंग वजाया जब हीं, राय दियाच दिया शिर तब हीं ।
सुनके सुरन्देतार, छोड़ा सुख राजनि के ।।१।।
तक्षक तज बिल भूल रहा है, जोगी आगे भूल रहा है ।
मुरली सुन सुरदार, मन्त्र आज्ञा मनके ।।२।।
मुरली सुनके मोहे हरिजन, सिद्ध सादक पुन सुरनर मुनिजन ।

त्याग दयी तन सार, मृग सुनि नाद धुनिके ।।३।।
मधुर मुरली सुनके भूचर, चर अचर अरु मोहे नभचर ।
अमृत रस की धार, धरी मुख मोहन के ।।४।।
शब्द मुरली वेद बखाने, कहे टेऊँ को सन्त पछाने ।
पाए गम गुरु द्वार, अगम अनहद झुनके ।।५।।

राग सोरठ

सफल करले श्वाँस रे ! तुम हरि भजन से ।।टेक।।
मोक्ष द्वारे मानुष्य तन में, ज्ञान करो प्रकाश ।।१।।
अविद्या तम है अति दुःखदायी, ताका करले नाश ।।२।।
लेखा यम का तुरन्त निवारे, पाओ निर्भय वास ।।३।।
कहे टेऊँ जिस कारण आया, कार्ज कर वह रास ।।४।।

राग सोरठ

धरिले हरिका ध्यान रे ! तुझे शान्ति मिलेगी ।।टेक।।
हृदय में तुम हरि बसाओ, जीभ से कर गुन गान ।।१।।
आँखों से हरि दर्शन करिये, सुनले हरियश कान ।।२।।
पांवों से चल सत्संग जावो, हाथों से दे दान ।।३।।
कहे टेऊँ गुर नाम स्मरले, श्वाँसों श्वाँस सुजान ।।४।।

राग सोरठ

रे मन ! अब ऊठ जागरे ! तुझे हरि मिलेगा ।।टेक।।

मानुष्य तन में राम नाम जप, खोलो अपना भाग ॥१॥
साध संगति में शान्ति पाए, तृष्णा का कर त्याग ॥२॥
झूठी प्रीति जान जगत की, धारो मन वैराग ॥३॥
कहे टेऊँ उर श्रद्धा धारे, सद्गुर के पद लाग ॥४॥

राग सोरठ

धीरे धीरे पग धार रे! तुम गिर ना जाओ ॥टेक॥
हरि का मार्ग वहुत कठिन है, चलिये आप सम्भार ॥१॥
इस मार्ग में वहुत विघ्न है, कीर्ति कञ्चन नार ॥२॥
इस मार्ग में अभिमानी गिरते, ताँ ते तज अहंकार ॥३॥
कहे टेऊँ चल सोच समझ कर, हरि के गैल मंझार ॥४॥

राग सोरठ

गुरुजी मुझे अपने चरन लगाओ ॥टेक॥
अविद्या को तम है उर माहिं, सत्य असत्य मोहि सूझत नाहिं ।
ब्रह्म ज्ञान की ज्योति, हृदय माहिं जगाओ ॥१॥
सर्व पदार्थ है दुःख दायी, तामें सुख न देखा राई ।
इन्ही ठगे सब लोक, मुझ को नाहिं ठगाओ ॥२॥
बुद्धि वस्त्र है मैला भारी, साबुन नाम लाय सुखकारी ।
ऊजल करके ताहिं, ब्रह के रङ्ग रंगाओ ॥३॥

कहे टेऊँ तुम हो दातारा, मैं हूँ मंगता माँगन हारा ।
देके निर्भय दान, भ्रम के भूत भगाओ ॥४॥

राग सोरठ

सद्गुरु मुझ पर कृपा धारो, इस विधि होवे मन हमारो ॥टेक॥

माटी कंचन एक समाना, नारी नर का रहे न भाना ।
होय न कब मन मांहि, रंचक मारो थारो ॥१॥
स्तुति निन्दा सम हो जावे, वैरी मीत नज़र न आवे ।
नीच ऊंच के मांहि देखू, प्रभु प्यारो ॥२॥
हर्ष शोक पुनि मैं तू नाशे, मान अमान न सुख दुःख भासे ।
होवे मुख के मांहि हरदम, ओऽम उच्चारो ॥३॥
कहे टेऊँ कब वे दिन होंगे, सुख से समकी शैय्या सोंगे ।
भासे सब जग मोहि, पूर्ण ब्रह्म पसारो ॥४॥

❀ राग खम्भाट ❀

अजब तमाशा लाया हरि ने, अजब तमाशा लाया,
मैं देख देख विस्माया ॥टेक॥

फुरने का यह बना पसारा, ना कच्छू आया जाया ॥१॥
जो कुच्छ देखत सो कच्छू नाहिं, स्वप्ने ज्यों दर्शाया ॥२॥
ज्ञानी ध्यानी खोजत हारे, नेति नेति कर गाया ॥३॥
कहता टेऊँ कहत न आवे, अद्भूत खेल खिलाया ॥४॥

राग खम्भाट

लग गयी इश्क अक्ल दी चोट, मजहबी आशक से लड़न्दे ।।टेक।।

इशिक की उलटी बेरङ्ग बाजी, इशिक में घिड़न्दे गोहंर गाज़ी ।
तोड़ कुफर दे कोट, घायल इश्क अन्दर घिड़न्दे ।।१।।
शूली पर मन्सूर चढ़ाया, बुलाशाह नूं कत्ल कराया ।
आश्क से अणमोट, शिरदा सांगा ना करन्दे ।।२।।
भक्त कबीर को बहुत सताया, पाई संगल जल माहिं बहाया ।
बाणे माहिं घोट, शाह बुलावल नूं पीड़न्दे ।।३।।
आशक टेऊँ रहत उजाला, मज़हबी है नित मन का काला ।
पकड़ इशक दी ओट, आश्क चाढ़ी पै चढन्दे ।।४।।

राग खम्भाट

मुझे है प्यास इक तेरी, और कच्छू ना सुहाता है ।।टेक।।
बदन तो है इधर मेरा, मगर मन पास है तेरे ।
दर्द में नैन रो रो के, रक्त जल को बहाता है ।।१।।
अग्नि तेरे विरह की जब, जलाती है जिगर मेरा ।
निकल तब नीर नैनों का, उसी को जा बुझाता है ।।२।।
जिसी क्षण याद आते हो, उसी क्षण सूझ ना रहती ।
तजे मन ख्याल दुनियां का, हरि ! तुझ में समाता है ।।३।।
कहे टेऊँ सुनो स्वामी, करूं पीऊ पीऊ पपीहे ज्यों ।
तुम्हारे दरस हित मनुवा, चकोर ज्यों चिल्लाता है ।।४।।

राग खम्भाट

मिले जो भाग से कुच्छ भी, शुक्र उस पर मनुष्य करले ॥टेक॥

मिले जो ताज शाही का, जगत में नरक भी तुमको ।
पड़े मंगना कभी भाँवे, शुक्र उस पर मनुष्य करले ॥१॥

मिले जो सेज फूलों की, तुझे आराम के खातिर ।
धरनि पर हो शयन भांवें, शुक्र उस पर मनुष्य करले ॥२॥

मिले जो खान पीने को, मधुर भोजन सुन्दर वस्त्र ।
रहो भूखा नग्न भांवें, शुक्र उस पर मनुष्य करले ॥३॥

कहे टेऊँ सुनो प्यारे, खुशी ग़म ना कभी करना ।
मिले सुख वा तुम्हें दुःख को, शुक्र उस पर मनुष्य करले ॥४॥

राग खम्भाट

अगरि ना राम को पाया, और पाया तो क्या फायदा ।
जरा ना प्रेम रस पीया, और पीया तो क्या फायदा ॥टेक॥

ब्रह्म से जिह अलग करके, फसाया जीव कोटी में ।
अगरि न नफस को मारा, और मारा तो क्या फायदा ॥१॥

बदन के मैल को तुमने, सफा धोया बहुत बारी ।
मगर दिल को नहीं धोया, और धौया तो क्या फायदा ॥२॥

नदी तालाब सर सागर, तरे तुमने बहुत बारी ।
मगर भव सिन्ध ना तरिया, और तरिया तो क्या फायदा ॥३॥

देव मन्त्र पितृ मन्त्र प्रेत मन्त्र, बहुत जपिया ।
मगर गुरु मन्त्र ना जपिया, और जपिया तो क्या फायदा ॥४॥
कहे टेऊँ यत्न करके, सदा तुम और को खोजा ।
अगर आत्म नहीं खोजा, और खोजा तो क्या फायदा ॥५॥

राग खम्भाट

चौरासी का चक्कर फिरके, अमोलक जन्म पाया है ॥टेक॥

किये शुभ कर्म पूर्व में, मिली तिस कर मनुष्य देही ।
कमाया काल्ह का खाते, अबी नहीं कच्छु कमाया है ॥१॥
मिला तो द्वार मुक्ति का, बन्धाया आप अपना तुम ।
पले पाया न कच्छु फायदा, उलट नर तन गंवाया है ॥२॥
कुटुम्ब के मोह में फस कर, करे बहु पाप पालत हो ।
जिसीने ये जन्म दीना, उसी को क्यों भुलाया है ॥३॥
कहे टेऊँ समय सारा, बिताया भोग विषयों में ।
बिगाड़ा काज सब अपना, शर्म ना तोहि आया है ॥४॥

राग खम्भाट

पती से प्रेम का नाता, निभाना नारि को चाहिए ।
गुनीजन ग्रन्थ सब गाता, निभाना नारी को चाहिए ॥टेक॥

गयी सीता गहन वन में, धरे ज्यों भेष मुनियों का ।
तजे ज्यों भोग दुनियां का, निभाना नारि को चाहिए ॥१॥

पती ब्रह्म, पती विष्णु, पती है रूप शङ्कर का ।
समुझ तंहि रूप ईश्वर का, निभाना नारि को चाहिए ॥२॥
पती पिङ्गला अन्धा भांवे, विकारी मूक हो रोगी ।
समझ तो भी परम योगी, निभाना नारि को चाहिए ॥३॥
कहे टेऊँ कपट त्यागे, पति वृत धर्म में रह कर ।
सर्व दुःख द्वन्द को सहकर, निभाना नारि को चाहिए ॥४॥

❋ राग मारू ❋

ख़ाक अन्दर घर तेरा, तू स्मर नाम सवेरा ॥टेक॥
मात पिता सुत ख़ाक पछानो, ख़ाक रूप सब धन्धा जानो ।
ख़ाक कुटुम्ब कुल देरा ॥१॥
काया माया ग्रही भोगी, पण्डित जोशी जंगम जोगी ।
ख़ाक में पावन फेरा ॥२॥
ख़ाक मौलवी हाफिज़ हाजी, ख़ाक पीर पेग़म्बर काजी ।
ख़ाक सर्व का घेरा ॥३॥
ख़ाक देवता दानव सारे, राजा प्रजा ख़ाक प्यारे ।
ख़ाक है तेरा मेरा ॥४॥
कहे टेऊँ सब ख़ाक पसारा, ख़ाक माहिं गुरु करत उज्यारा ।
नासे भ्रम अन्धेरा ॥५॥

राग मारू

बन्दे भजन बन्द क्यों करिये ॥टेक॥

बन्द किया हरणाकुश राजा, राम प्रह्लाद स्मरिये ।
लाज प्रह्लाद की नरसिंह राखी, हरणाकशप विदरिये ॥१॥
वैर राम से राखा रावण, गर्व कुटुम्ब पर धरिये ।
तिस रावण घर दीप न बाती, कूकां कर कर मरिये ॥२॥
हरि से बेमुख कौरव कसां, पापो में जे पड़िये ।
पल में नष्ट हो गये सारे, करिये का फल भरिये ॥३॥
आदि अन्त सत्नाम संगी है, तांते तांहि उच्चरिये ।
कहे टेऊँ चढ़ नाम की नौका, भव सागर से तरिये ॥४॥

राग मारू

जगत मुसाफिर खाना, रे मन ! किसका यह न ठिकाना ॥टेक॥
धर्मशाला में लोग हज़ारे, आकर रहते दिन दो चारे ।
सब आखिर करत पयाना ॥१॥
साँझ समय ज्यों पंछी सारे, बैठ बिरच्छ पर रैन गुज़ारे ।
उड़ जाते होय विहाना ॥२॥
जैसे देख लगा अखाड़ा, लोग जुड़े पल माहिं अपरा ।
जब टूटे होय खाना ॥३॥
कहे टेऊँ तुम जल्दी जागो, अब हीं हरि स्मरण में लागो ।
इस जग का मोह मिटाना ॥४॥

राग मारू

दूर तुम्हारा देश, अब तो करो तय्यारी ॥टेक॥

दिन भया अब खुला दुकाना, शुभ कर्मो का वण्ज विहाना ।
त्यागे लोभ लबेश ॥१॥
जाग मुसाफिर बहु तुम सोये तीन अवस्था व्यर्थ खोये ।
श्वेत भये हैं केश ॥२॥
जब से जग में जन्म ले आया, तब से तुमने बहु दुःख पाया ।
मेटो ताप क्लेश ॥३॥
कहे टेऊँ सद्गुर प्रसादे, पावो आत्म भवन अनादी ।
जामें दुःख नहीं लेश ॥४॥

❀ राग सारंग ❀

आज मेरे घर भलि तुम आये, देख देख रङ्ग रत्तियां रे ॥टेक॥
दर्शन तेरे दिल को मोहिया, मेरे मन में आनन्द होया ।
भूल गई सब मतियां रे ॥१॥
मोहनी मूर्ति जुग जुग जीवो, इक पल मुझ से दूर न थीवो ।
प्रानो के हो पतियां रे ॥२॥
छोड़ न जाओ मारत बैरी, कौन रक्खे पत्त तुझ बिन मेरी ।
तुम हो मेरी गतियां रे ॥३॥
कहे टेऊँ कर जोड़ अर्दासा, हरदम करले हम घर वासा ।
तेरा गुन गावतियां रे ॥४॥

राग सारंग

जप राम नाम मन जागी ! जागे सो बड़ भागी ॥टेक॥

जागे मीना चाहत जल को, जागे सींप चाहत बादल को ।
नाग कुरंग सुन रागी ॥१॥
जागे पंछी अनल आकेशे, जागे चकोर चन्द्र प्रकाशे ।
चक्रवी पति हित लागी ॥२॥
जागे सुनार सोना निरखे, जागे सराफ़ हीरा परखे ।
पाँवो पछाने पागी ॥३॥
कहे टेऊँ त्यों जागहिं हरिजन, हरिहित जागहिं सुर नर मुनिजन ।
जागहिं नित वैरागी ॥४॥

राग सारंग

रिम झिम कर हरवार बादल बरसे ॥टेक॥
बादल बनकर बरसण आया, आज सखी मम भवन सुहाया ।
बिजली करे चिमकार ॥१॥
चौदिश होयी अति हरयाली, अवनि भयी अति उज्याली ।
चमन खिली गुलज़ार ॥२॥
बुल बुल पपीहा नाचत मोरा, कोयल मैना गूंजत भौंरा ।
मधुर करे झनकार ॥३॥
सरवर नदीयां नाला भरिया, कहे टेऊँ सब काज सरिया ।
होई जय जय कार ॥४॥

राग सारंग

सुन्दर सावन मास, सफल कर सारा ॥टेक॥

मानुष्य तन यह सावन आया, पुण्य प्रतापे तूने पाया ।
व्यर्थ खोय न तास ॥१॥
दया धर्म का जल वरसाये, ब्रह्म ज्ञान की गर्जन लाए ।
देवो छाया वास ॥२॥
प्रेम भक्ति के जल को अञ्चे, बुद्धि भूमि में तांको सिञ्चे ।
हरा करे गुण घास ॥३॥
सावन को जिस सफल किया, कहे टेऊँ तिस पाया पीया ।
मेटे जम का त्रास ॥४॥

❀ राग पूरब ❀

पूरब देश का मैं हूँ वासी, पूरब में मेरा स्थान ॥टेक॥
पूरब देश सम देश न दूजा, पूरब है सब ते प्रधान ॥१॥
पूरब देश में भेद न कोई, पूरब का हे ऊंचा शान ॥२॥
पूरब देश में तिम्र नहीं है, पूरब में प्रकाशत मान ॥३॥
पूरब देश में नहीं को मरता, पूरब नित अविनाशी जान ॥४॥
पूरब देश में ग़मु ना कोई, कहे टेऊँ मोद महान ॥५॥

राग पूरब

कृपा कर गुरु मोहि सुनाओ, भूमि नभ अभ्यासा जी ॥टेक॥
भूमि का स्थान कहाँ है, नभ का कहां निवासा जी ॥१॥
भूमि नभ का रूप कौन है, करे सर्व प्रकाशा जी ॥२॥

भूमि नभ अभ्यास करन से, कौन काज हो रासा जी ॥३॥
कहे टेऊँ कैसे उठि भूमि, जाय मिले आकासा जी ॥४॥

राग पूरब

सुनिये शिष्य अब ध्यान लगाके, भूमि नभ प्रसंगा रे ॥टेक॥
सुरति धरनि है शब्द आकाशा, यह है ज्ञान उतङ्गा रे ॥१॥
सुरति शब्द का देश अगम है, जंह न काल का दङ्गा रे ॥२॥
श्रुति शब्द चैतन मय जामें, माया का नहीं संगा रे ॥३॥
सुरति शब्द अभ्यास करन से, जम की छूटत जंगा रे ॥४॥
गुरु कृपा से सुरति जाकर, मिलत शब्द के रङ्गा रे ॥५॥
कहे टेऊँ शिष्य शंका मेटो, सुनकर यह सत्संगा रे ॥६॥

* राग कामोल *

चालो हंसा मान सरोवर, तांके तट पर रहना रे ॥टेक॥
अपनी चाली नित ही चलिये, बगों संग ना बहना रे ॥१॥
मुख से मीठी बानी बोलो, कटु वचन मत कहना रे ॥२॥
धर्म तुम्हारा मोती खाना, मच्छली को मत गहना रे ॥३॥
कहता टेऊँ दूध पियो नित, पानी को मत छुहना रे ॥४॥

राग कामोल

साजन मुझ को आन मिलावे, है को ऐसा प्यारा रे ॥टेक॥

तन मन की भेट धरे मैं, दास बनूं तिस द्वारा रे ॥१॥
विरह अग्नि में तन मन जलता, जैसे जरत अंगारा रे ॥२॥
पल पल में उठि मार्ग देखूं, बिन देखे न करारा रे ॥३॥
कहे टेऊँ जिस पल पिय देखूं, तिस पल पर बलिहारा रे ॥४॥

राग कामोल

मोह नीन्द में सब जग सोया, जागत ब्रह्म ज्ञानी रे ॥टेक॥
जग स्वप्ने को सत्य समझ कर, सोय रहा अज्ञानी रे ॥१॥
ज्ञानी जगत को असत्य समझता, द्दष्टा आपहिं जानी रे ॥२॥
हानि लाभ और हर्ष शोक कर, रोवत तन अभिमानी रे ॥३॥
कहता टेऊँ द्वन्दवाद में, रहते सम विज्ञानी रे ॥४॥

राग कामोल

मनुष्य काहे को तू आयारे, जग में जिसने जन्म दिया है,
तिसको नाहिं ध्याया रे ॥टेक॥
मात गर्भ में उलटे थे जब, हरि से बोल बन्धाया रे ॥१॥
बाहिर निकसे ताहि बिसारा, मोहि लिया तुझ माया रे ॥२॥
पांच तत्व की देह देख के, निज स्वरूप भुलाया रे ॥३॥
कहे टेऊँ हरि भजन बिना तू, जम के हाथ विकाया रे ॥४॥

राग कामोल

सद्गुरु मुझ पर कृपा करके, अपना दास बनाओ जी ॥टेक॥

और किसी की मन नहीं आशा, अपनी सेव लगाओ जी ॥१॥
माह ममत के बन्धन तोड़े, अपने साथ मिलाओ जी ॥२॥
तुम से मिलना जे नहि देवहि, वे सब विघ्न विलाओ जी ॥३॥
कहता टेऊँ अपने सङ्ग में, हरि का नाम जपाओ जी ॥४॥

राग कामोल

तुम बिन सद्गुरु मेरा जग में, और न को रक्खवारा है ॥टेक॥
तुम ही सद्गुरु मात पिता सम, पालन पोषण हारा है ॥१॥
मैं हूँ बालक मूढ अज्ञानी, तेरा मोहि सहारा है ॥२॥
जे जन शरन तुम्हारी आये, तिनकों तुमने तारा है ॥३॥
कहे टेऊँ मोहि पार उतारो, भारी भवजल धारा है ॥४॥

राग कामोल

साजन मुझ से आन मिलो अब, दर्शन की मुझे प्यासा है ॥टेक॥
दिवस दिवस इक युग सम बीते, पल पल जानू मासा है ॥१॥
तुम बिन सारे जग के नाते, जानत मैं जम फाँसा है ॥२॥
साजन तुमरे दर्श बिना यह, दुःखिया मेरा स्वासा है ॥३॥
कहे टेऊँ निज दर्शन दीजे, यह मेरी अर्दासा है ॥४॥

राग कामोल

साजन मुझ को छोड़ न जाओ, साथ रहो तुम प्यारा जी ॥टेक॥
अवगुन देवर न मोहि त्यागो, यह है अर्ज हमारा जी ॥१॥

जैसे चाहो तैसे करहों, मैं हूँ दास तुम्हारा जी ॥२॥
तुम बिन स्वामो रह न सकूं मैं, ज्यों मच्छली बिन वारा जो ॥३॥
कहे टेऊँ इक पल नहीं जीऊं, तुम हो प्रान अधारा जी ॥४॥

राग कामोल

गुरु मुख मन मुख हंस काक के, लक्षण सन्त बताते हैं ॥टेक॥
हंसा मान सरोवर रहता, कौए पोखर जाते हैं ॥१॥
हंस रैन दिन मोती चुगता, कौए दुर्गन्ध खाते हैं ॥२॥
हंसा मधुरी बोली बोलत, कौवे कड़ुवा गाते हैं ॥३॥
हंसा सूधी चाल चलत है, कौवे टेढे धाते हैं ॥४॥
कहे टेऊँ कौए दुःख देते, हंस सर्व सुख दाते हैं ॥५॥

❋ राग कल्याण ❋

हंसा मान सरोवर जाऊं, साचा मोती है बहु तामें,
चुन चुन के नित खाऊं ॥टेक॥
यह तो सरवर मैला सारा, कीचड़ से बहु भरिया भारा ।
तेरा हो न निभाऊं ॥१॥
वायस बगलों की यह टोली, तेरी ताँसे बनत न बोली ।
भाईयों से गुण गाऊं ॥२॥
देखन में ये रंग रगीले, भीतर में है बहुत कटीले ।
इन संग दुःख न उठाऊं ॥३॥

कहे टेऊँ ये संग है झूठा, हंसो का संग अजब अनूठा ।
तांसू नेह लगाऊं ॥४॥

राग कल्याण

अगर चाहो परम मुक्ति, शरण गुरुदेव की पड़ना ।
तजे तुम तीन लाजों को, भजन भगवान का करना ॥टेक॥
नवाए शीश सद्गुरु को, करो कर जोड़ के सेवा ।
गुरु से नाम ले स्मरो, तजे मन के सभी फुरना ॥१॥
जगत को झूठ तुम जानो, गुरु का नाम सत् मानो ।
बैठ गुर नाम बोहथ में, तुरन्त भव सिन्धु से तरना ॥२॥
करे सत्संग सन्तों का, सुनो सद् वाक्य वेदों का ।
धरे उर ज्ञान आत्म का, मलिन अहंकार को हरना ॥३॥
कहे टेऊँ सज्जन मेरे, रहो तुम राम के रंग में ।
जपे नित नाम ईश्वर का, हरो अपना जन्म मरना ॥४॥

राग कल्याण

माई मैं सद्गुरु पूर्ण पाया, तन मन धन दे भेट गुरां को,
ले हरि नाम ध्याया ॥टेक॥
दर्शन गुरु का है सुख दायी, देख देख दुःख जाया ॥१॥
गुरु को वार वार कर वन्दन, चरन कमल चित्त लाया ॥२॥
गुरु की सेवा करे दिन राति, मन के पाप मिटाया ॥३॥

गुरु का शब्द स्मर घट मांहिं, धुनिमें ध्यान लगाया ॥४॥
कहे टेऊँ गुरु ज्ञान प्राए, सहज स्वरूप समाया ॥५॥

राग कल्याण

माई मैनूं सद्गुरु अलख लखाया ।
सात द्विप नव खण्डों मांहिं, एक ब्रह्म दर्शाया ॥टेक॥
अस्ति भाति प्रिय निज स्वरूपा, नाम रूप में पाया ॥१॥
अमर अनादी अज अविनाशी, जहां धूप नहीं छाया ॥२॥
कहता टेऊँ गुरु प्रसादे, सहजे तांहिं समाया ॥३॥

राग कल्याण

हरि कृपा से सद्गुरु पाया, जिसने मैनूं अलख लखाया ॥टेक॥
गुरु को भेटा देके तन मन, सर्वस्व अपना करके अर्पण ।
हरिका ध्यान लगाया ॥१॥
गुरु को वार वार कर वन्दन, अपना सीस धरे गुर चरन ।
मन का मान हटाया ॥२॥
गुरुघर की नित करके सेवा, पाया चार पदार्थ मेवा ।
आवागमन मिटाया ॥३॥
कहे टेऊँ गुर सैन लखाई, ब्रह्म ज्ञान की ज्योति जमाई ।
पांचो भ्रम नसाया ॥४॥

राग कल्याण

करो आरती सद्गुरु चरना, जिस कृपा ते भव जल तरना ।।टेक।।

सद्गुरु चरने ध्यान लगाए, अहंता ममता रोग मिटाए ।
हृदय के दुःख हरना ।।१।।

गुरु मन्त्र का कर अभ्यासा, देखो दम में अजब तमाशा ।
ध्यान उसी का धरना ।।२।।

गगन मण्डल में अनाहत बाजे, तां का सुन्दर सुन आवाज़े ।
मिटो मन के फुरना ।।३।।

कहे टेऊँ सद्गुरु प्रसादी, लाए सुन में सहज समाधी ।
आत्म दर्शन करना ।।४।।

राग कल्याण

बन्दा तुम को लाज न आय, वृद्ध भए नाम न जपते ।
रुचि रुचि विषय कमाई ।।टेक।।

टूट गयी दातों की पक्ति, मन्द भई जठरा अग्नि शक्ति ।
तो भी चने चबाइ ।।१।।

सत्तर वर्ष की ऊम्र तुम्हारी, तो भी विषय वासना धारी ।
ले ले कुश्ते खाय ।।२।।

धर के सारे मित्र प्यारे, गाली दे दे तोहि निकारे ।
फिर भी जाते धाइ ।।३।।

भोग भोग के यौवन खोया, अजहूँ मन सन्तोष न होया ।
दिन दिन दूनी चाइ ॥४॥
कहे टेऊँ तुम अब भी चेतो, भजन करो है अवसर जेतो ।
गुरु चरने चित्त लाइ ॥५॥

राग कल्याण

गुरु मुख गुर चरने मन लाइ, लेकर गुरु से नाम हरिका ।
हृदय माँहि ध्याइ ॥टेक॥
सफल करो यह मनुष्य चोला, स्मरे गुरु का शब्द अमोला ।
मन को शान्त बनाइ ॥१॥
निस्कामी हो सेव कमाओ, निर्मल अपना चित्त बनाओ ।
पाप न मैल मिटाइ ॥२॥
गुरु भक्ति को हृदय धारो, आज्ञा गुरु की कबहूँ न टारो ।
गुरु के गुण नित गाइ ॥३॥
कहे टेऊँ ले गुरु से ज्ञाना, पाओ आत्म सूख महाना ।
भव सिन्धु से तर जाइ ॥४॥

राग कल्याण

बुरा है ख्याल नर तेरा, और का दोष ना कोई ॥टेक॥
अरी दस शीस रघुवर को, विभीषण ने मित्र माना ।
विभिषण राज मरा रावण, राम का दोष ना कोई ॥१॥

कृष्ण को कंस अरि समझा, मित्र समझा उग्रसेन ने ।
कंस मूआ भक्त मुक्ता, कृष्ण का दोष ना कोई ॥२॥
रवी को अरि उल्लू जाने, मनुष्य जाने सज्जन तां को ।
उल्लू अन्ध हो मनुष्य रोशन, रवी का दोष ना कोई ॥३॥
कहे टेऊँ सुनो प्यारा, जोई जिस भाव से देखे ।
तिसी को फल मिले तैसा, किसी का दोष ना कोई ॥४॥

राग कल्याण

चरण पकड़ गुरु का, स्मरण कर मनसा ॥टेक॥
दर्शन गुरु के द्वेत बिनाशे, बिनस बिनस सँसा ॥१॥
गुरु की वाणी अमृत धारी, धारि धारि दमसा ॥२॥
गुरु का नाद अनाहत बाजे, बाज बाज बरसा ।३॥
गुरु का ज्ञान परस घट मांहि, परस परस परसा ॥४॥
कहे टेऊँ सद्गुरु प्रसादे, तत्व तत्व दर्शा ॥५॥

राग कल्याण

प्यारे सत्संग में चल आइये, बैठ सत्संग अमृत पीजे ।
भाव भक्ति गुण गाईये ॥टेक॥
दर्शन पाए प्रसन्न होवो, चोट न यम की खाइये ॥१॥
मान त्यागे सेव कमाओ, मन का मैल मिटाइये ॥२॥
श्रद्धा धारे सन्त चरण की, धूलि मस्तक लाइये ॥३॥
कहे टेऊँ सन्तन के संग में, परमानन्द पद पाइये ॥४॥

❀ राग कंसों ❀

मिली अब संग सन्तों के, वचन सत का ध्याया है ।
सच्चा स्वरूप सद्गुरु का, वदन मेरे समाया है ॥टेक॥
सन्तों गुण शील सुखदायी, संयम श्रद्धा सुमति पाई ।
कहा जो वेद के मांहि, धर्म धीर्ज मैं पाया है ॥१॥
भया वैराग सुख रासी, जगत देखा सर्व नासी ।
कटे जग मोह की फाँसी, सफल जीवन बनाया है ॥२॥
अगम निज देश में रहिया, छिप गई रैन दिन भैया ।
अब डर काल का गैया, नगर निर्भय बसाया है ॥३॥
शिवोऽहं सर्व का स्वामी, कहे टेऊँ सुख निधामी ।
भया स्वरूप आरामी, सब दुःख द्वन्द जाया है ॥४॥

राग कंसों

किये कर्तूत पशुवों के, मनुष्य होया तो क्या होया ।
पदार्थ और सब पाए, हरि न पाया तो क्या होया ॥टेक॥
वृक्ष देखन में सुन्दरे, नहीं छाया नहीं गन्धरे ।
नहीं फल फूल नहीं पत्रे, वृक्ष होया तो क्या होया ॥१॥
सरोवर जल बिना जैसे, धनी है पुण्य बिना तैसे ।
बिना दीपक मन्दिर कैसे, सुन्दर होया तो क्या होया ॥२॥
कून्चर ज्यों नीर में नहावे, निकस बाहिर मट्टी पावे ।
अन्तर की मैल ना जावे, गंगा नहाया तो क्या होया ॥३॥

कहे टेऊँ बहुत पढ़के, दुनियां के लोभ में लटिके ।
बिना गुरु ज्ञान के भटके, पढ़ा होया तो क्या होया ॥४॥

राग कसों

कहे कोई दिवाना है, कहे कोई सुजाना है ।
नहीं है काम लोगों से, मुझे हरि ही ध्याना है ॥टेक॥
सुना उपदेश गुनियां का, वचन सत् वेद मुनियां का ।
तजा व्यवहार दुनियां का, अभी हरि गीत गाना है ॥१॥
मुझे पहिले न सुधि होई, उम्र रस भोग में खोई ।
किया शुभ कर्म ना कोई, अबी करना कल्याणा है ॥२॥
जपे सत्नाम सद्गुरु का, धरे पुनि ध्यान इक हरि का ।
पता लेके अमर घर का, परम आनन्द पाना है ॥३॥
कहे टेऊँ कटे जाली, चलूंगा हंस की चाली ।
खुदी से दिल करे खाली, ब्रह्म से मन मिलाना है ॥४॥

राग कसों

अगर है आश आनन्द की, जाओ गुरु देव की शरणा ।
अभय ज्ञाना ले आत्म का, सर्व भय दुःख को हरना ॥टेक॥
तजे तुम लोक की लाजा, करो अपना तुरंत काजा ।
बजे सिर काल का बाजा, उठो दम देर ना करना ॥१॥
अभी हरि मिलन की वारी, तजे ग़फलत करो तय्यारी ।

जपे गुरु नाम निर्धारी, हरि का ध्यान मन धरना ॥२॥
अटल विश्वास उर धारे, गहो गुरु ज्ञान को प्यारे ।
भ्रम सँसा सभी टारे, तुरन्त भव सिन्धु से तरना ॥३॥
मिटाए मोह तन केरा, बसाओ ब्रह्म का डेरा ।
कहे टेऊँ कटे फेरा, जगत मुक्त हो चरना ॥४॥

राग कसों

यह संसारा जान असारा, मेरे मन आत्म ध्यान धरो ॥टेक॥
झाग सलिल मारू स्थल पानी, ताँसे ना किस प्यास बुझानी ।
मेरे मन ताँकी आस हरो ॥१॥
मरकट अग्नि बादल छाया, स्वप्न पदार्थ के सम भाया ।
मेरे मन तुरन्त त्याग करो ॥२॥
पाञ्च विषय रस जान विनाशी, ताँसे हरदम होय उदासी ।
मेरे मन भूल न ताँहि परो ॥३॥
कहे टेऊँ सत्मार्ग चालो, आदि अपना रूप सम्भालो ।
मेरे मन भव सिन्धु, पार तरो ॥४॥

राग कसों

सन्त पधारे धाम हमारे, प्रीतम होया जय जय कार ॥टेक॥
निर्मोही नित परम विरागी, राम भजन में अति अनुरागी ।
प्रीतम आये परम उदार ॥१॥

वहुत जन्म के पुण्य विकासा, दर्शन प्रसन्न भया हुलासा ।
प्रीतम होया आनन्द अपार ॥२॥
हृदय अन्दर भया प्रकाशा, भ्रम अन्धेरा सर्व विनाशा ।
प्रीतम देखा दिव्य दीदार ॥३॥
कहे टेऊँ सुन तिन की वानी, आत्म पद में सुरति समानी ।
प्रीतम पाया शान्त भण्डार ॥४॥

राग कसों

अगर तुम मोक्ष को चाहो, करो शुभ काम को जल्दी ।
तजे सब काम दुनियां के, रटो हरि नाम को जल्दी ॥टेक॥
जगत की छोड़ आशा को, ममत की तोड़ पाशा को ।
गही गुन ज्ञान राशा को, पावो विश्राम को जल्दी ॥१॥
कुटुम्ब का छोड़ के नाता, रहो हरि रंग में राता ।
गही गुरदेव से ज्ञाता, पावो घनश्याम को जल्दी ॥२॥
प्रभु की शरण में जाके, अखण्ड धुनि शब्द की लाके ।
हरि के गीत नित गाके, पावो आराम को जल्दी ॥३॥
कहे टेऊँ स्मर पल पल, हरो कलि काल की कल कल ।
बुझाए जीव की जल जल, पावो सुख धाम को जल्दी ॥४॥

राग कसों

तू मेरा रखवारा सद्गुरु, तू मेरा रखवारा ।
तुम हो मात पिता गुर मेरा, मैं हूँ वाल तुम्हारा ॥टेक॥

तुम हो दाता दीन दयालू, मैं हूँ मांगन हारा ।
नवधा भक्ति ज्ञान ध्यान गुण, देवो भजन भण्डारा ॥१॥
तुम हो पावन पतित उद्धारन, मैं हूँ पापी भारा ।
तुमरी ओट गही मैं निश्दिन, पाप करो प्रहारा ॥२॥
तुम हो सुख का सागर स्वामिन्, मैं हूँ अति दुःखियारा ।
कृपा कर के विघ्न हरो सब, करिये काज हमारा ॥३॥
भवसागर में डूबत हूँ मैं, कोई न तारण हारा ।
कहे टेऊँ अब बाँह पकड़ गुर, कीजे भव से पारा ॥४॥

राग कसों

काटो कष्ट हमारा प्रभु जी ! काटो कष्ट हमारा ।
जन मन रञ्जन भवभय भञ्जन, है यह विरद तुमारा ॥टेक॥
भक्तन पर जब भीड़ पड़त है, तब धारत अवतारा ।
निज भक्तन की रक्षा करते, दुष्टन को संहारा ॥१॥
हिरणाकश्यप प्रहलाद भक्त को, दीना दुःख अपारा ।
नरसिंह रूप धरा तुम ने, हिरणाकश्यप को मारा ॥२॥
द्रोपदा को बीच सभा में, दीना चीर हज़ारा ।
कौरव का कुल नाश कराया, कंस के प्राण निकारा ॥३॥
कहे टेऊँ मैं और त्यागे, लीना तव आधारा ।
कलूकाल के कठिन समय में, मेरा हो रखवारा ॥४॥

राग कसों

करो कृपा गुरु मुझ पर, शरण तेरी मैं आया हूँ ।
सच्चा तुम हो मित्र सद्गुरु, शरण तेरी मैं आया हूँ ॥टेक॥
जगत में को नहीं मेरा, सिर्फ आधार है तेरा ।
हरो भव काल का फेरा, शरण तेरी मैं आया हूँ ॥१॥
भयानक देख भव भारी, डरत है जान यह सारी ।
करो अब वेग रखवारी, शरण तेरी मैं आया हूँ ॥२॥
कपट छल पाप बहु कीना, नहीं शुभ कर्म चित्त दीना ।
भक्ति गुण ज्ञान से होना, शरण तेरी मैं आया हूँ ॥३॥
कहे टेऊँ दया कीजे, भ्रम की पाश कट लीजे ।
अभय का दान मुझ दीजे, शरन तेरी मैं आया हूँ ॥४॥

राग कसों

करो सत्संग सन्तों का, यही है सार संसारे ॥टेक॥
बहु विधि कर्म यज्ञ दाना, वृत तप नेम जप नाना ।
करो प्रियाग इस्नाना, नहीं सत्संग सम सारे ॥१॥
चन्दन शशि शीत जग मांहि, उभय सत्संग सम नाहिं ।
सदा सेवो सज्जन तांहि, सर्व संसा भ्रम टारे ॥२॥
श्रद्धा से देव सब सेवे, जोई फल देव तिंह देवे ।
वही सत्संग से लेवे, अटल विश्वास जो धारे ॥३॥
कहे टेऊँ सत्य मानो, यही निश्चय हृदय आनो ।

बोहथ जग साधु संग जानो, तुरत भव सिन्धु से तारे ॥४॥

राग कसों

लिखा जो लेख पूर्व का, समुझ सो अवश्य होता है ।
मुफ्त फर्याद तू करके, वृथा क्यों वक्त खोता है ॥टेक॥
देखो रघुनाथ अवतारी, वलि रावण महाभारी ।
कर्म रेखा न किस टारी, धर्म के तात रोता है ॥१॥
सनो शंकर किया पाया, भिक्षा मंग मंग टुकर खाया ।
डेरा शमशान में लाया, हरि अहि सेज सोता है ॥२॥
कर्म ही जीव को प्रेरे, दसों दिश में सदा फेरे ।
सभी सुर नर मुनि टेरे, कर्म का जगत बोता है ॥३॥
कहे टेऊँ समुझ धारे, सदा प्रसन्न रहो प्यारे ।
कर्म को भोगते सारे, मिले जो बिज बोता है ॥४॥

❀ राग पहाड़ी ❀

दाता गुरु जी दान देवो, हरि भक्ति मुक्ति गुण ज्ञान देवो,
मुझ निर्गुण नाम लखावो ॥टेक॥
मैं हूँ लोहा कीट अज्ञानी, तुम गुर पारस मृङ्ग ज्ञानी ।
मेरा जन्म मिटावो ॥१॥
मैं अपराधी अधम अधीना, तुम गुर पावन तीर्थ चीना ।
मेरा पाप नसावो ॥२॥

मैं हूँ निर्गुण कर्म कङ्गाला, तुम गुरु सुरतरु दीन दयाला ।
दे गुण दोष हटावो ॥३॥
कहे टेऊँ कर जोड़ अरदासा, तुम हो सद्गुरु स्वयं प्रकाशा ।
अनुभव ज्योति जगावो ॥४॥

राग पहाड़ी

सद्गुरु बोले सुन रे चेला, साधु कहावन सुगम नहीं है ।
साधन काम दुहेला ॥टेक॥
सेवा स्मरण निशदिन करना, काटन भूख का वेला ।
ताँते समुझो पाँव सु धरना, आतप शीत सहेला ॥१॥
लोक निन्दा को सिर पर सहना, जग में चरत अभेला ।
तीन लज्जा को तोड़ के चलना, भवते रहन अकेला ॥२॥
पाँच विषय की आस न करनी, इन्द्रियां जीत रहेला ।
अन्तर आत्म चिन्तन करना, है यह अद्भुत खेला ॥३॥
कहता टेऊँ कठिन फकीरी, यह ना गैल सुहेला ।
जीव ईश की कटे उपाधी, करन ब्रह्म से मेला ॥४॥

राग पहाड़ी

भाग जागे भाग जागे, आज हमारे ! मन मेली सन्त सज्जन
धाम पधारे, बलि बलि जाऊँ बलिहारे ॥टेक॥
सन्तन का दर्शन सुखदायी, वेदनि जांकी महिमा गायी ।
दुःख दर्द निवेरे ओ प्रीतम ! करत सुखारे ॥१॥

सन्त जगत में ज्ञान के दात्ते, राम रंग में निस्दिन रात्ते ।
अखंड ज्ञान उच्चारे ओ प्रीतम ! भ्रम निवारे ॥२॥
सन्त वचन मोती सम जानो, कहे टेऊँ चुन हृदय आनो ।
पावो भक्ति भण्डारे ओ प्रीतम ! मुक्ति द्वारे ॥३॥

राग पहाड़ी

मन दर्शन कर अपना, गुर ज्ञान के नैनों से ।
निज आतम को लखना ॥टेक॥
तन मिथ्या जड़ सारा, यह रूप नहीं तेरा ।
तू इन से है नियारा ॥१॥
दिल दर्पण में देखो, तुम अन्तर मुख होके ।
निज आत्म को पेखो ॥२॥
नट साङ्ग धरे जैसे, त्यों खेल करे आत्म ।
फिर जैसे को तैसे ॥३॥
कहे टेऊँ तज भ्रान्ति, है स्वाँग सभी झूठे ।
लखि निर्मल निज क्रान्ति ॥४॥

राग पहाड़ी

शरण ले राम की भाई, वही भवसिन्ध तारेगा ।
सर्व सुख राम के शरणे, राम तुम को उधारेगा ॥टेक॥
तजो तुम और की आशा, करो मन राम भरवासा ।

शरण पालक बृद उसका, वही दर्द दुःख टारेगा ॥१॥
तजे जो ईश आधारा, भरोसा लेत संसारा ।
इहां ऊँहा दुःखी होकर, योनि चौरासी धारेगा ॥२॥
हरि की शरणी जो पड़ते, रक्षा तिसकी हरि करते ।
कहे टेऊँ सो तेरा भी, जन्म फेरा निवारेगा ॥३॥

राग पहाड़ी

आओ मिलकर सभी प्रेमी, हरि के गीत गाओ जी ।
मिली दुर्लभ मनुष्य देही, उसे ना मुफ्त गंवाओ जी ॥टेक॥
जिसी कारण मनुष्य चोला, मिला तुम को अति सुन्दर ।
तजे गफलत करो सोई, सफल यह तन बनाओ जी ॥१॥
गर्भ अन्दर किया तुम ने, हरि से कौल है जोई ।
वचन वह याद कर अपना, उसी को ना भुलाओ जी ॥२॥
नहीं कच्छू जीभ घिसती है, नहीं कच्छू मोल लगता है ।
तजे शंका भजो हरि को, सभी सुख साज पाओ जी ॥३॥
हरि गुन गान करना जी, यही कलि में भजन साचा ।
कहे टेऊँ सर्व त्यागे, हरि से हेत लाओ जी ॥४॥

राग पहाड़ी

आत्म घर के मांहि रे मन ! शान्ति पाओ ॥टेक॥
जो है आदि धाम तुम्हारा, सूर्य चन्द्र से अति उज्यारा ।

वृति लगाओ तांहि, कबहुं नाहिं भुलाओ ॥१॥
अपने घर में सुख है जैसा, तीन लोक में ना सुख तैसा ।
इत उत भटको नाहि, अपने घर में आओ ॥२॥
बहुत जन्म से हो तुम भूला, सहते आये हो बहु शूला ।
अब दुःख सहते कांहि, निज घर चित्त ठहराओ ॥३॥
कहे टेऊँ तज सर्व उपाधि, अपने घर में लाए समाधि ।
ब्रह्मानन्द है जांहि, ताँ में सहज समाओ ॥४॥

राग पहाड़ी

जब गोविन्द के गुन गाओगे, तब भगवत के मन भाओगे ।
जब हृदय हरि बसाओगे, तब जम की चोट न खाओगे ॥टेक॥
जो राम नाम गुन गाता है, सो भवसागर तर जाता है ।
जब लग्न हरि से लाओगे, तब जीवन सफल बनाओगे ॥१॥
जो अहनिशं राम को रटता है वो जम की फांसी कटता है ।
जब हरि में सुरति समाओगे, तब सकले पाप मिटाओगे ॥२॥
कहे टेऊँ जो हरि जपता है, सो तीन ताप नहीं तप्ता है ।
जब परमेश्वर को ध्याओगे, तब सर्व सुखो को पाओगे ॥३॥

राग पहाड़ी

सन्तों के दर का दर्बान हो जा, सेवा भाव करके ।
निर्मान हो जा ॥टेक॥

सन्त हरि में भेद नहीं है, सन्त हरि का रूप सही है ।
वेद पुरानों का वाक्य यही है, श्रद्धा से गुण पाए ।
गुणवान हो जा ॥१॥
सन्त ब्रह्म का ज्ञान बताते, सोए हुये जीवों को जगाते ।
भेद भ्रम अज्ञान मिटाते, तू भी ज्ञान लेके ।
ज्ञानवान हो जा ॥२॥
सन्त कृपा कर मोक्ष दिलाते, कहे टेऊँ बिछुड़े को मिलाते ।
मुए दिलों को तुरन्त जिलाते, सन्तों से मिलके तू ।
भगवान हो जा ॥३॥

राग पहाड़ी

साध संगत के द्वार शान्ति पाओ रे ॥टेक॥
साध संगत में बैठ प्यारा, संत वचन सुन कर विचारा ।
संसा सकल निवार, शान्ति पाओ रे ॥१॥
साध संगत की करके सेवा, पाए पूर्ण आत्म देवा ।
लेखा यमका वार, शान्ति पाओ रे ॥२॥
साध संगत है गंग समाना, तामें डुबकी मार सुजाना ।
पापन मैल उत्तार शान्ति, पाओ रे ॥३॥
साध संगत की बड़ी बडाई, कहे टेऊँ सब सन्तन गाई ।
तामें श्रद्धा धार, शान्ति पाओ रे ॥४॥

राग पहाड़ी

मोक्ष मन्दिर का द्वार, मनुष्य चोला है ॥टेक॥

योनि चौरासी से अधिकाई, मनुष्य देह भगवत को भाई ।
सब का यह सर्दार, मनुष्य चोला है ॥१॥
मनुष्य तन को सब सुर चाहत, सन्त ग्रन्थ भी महिमा गावत ।
आनन्द का अगार, मनुष्य चोला है ॥२॥
मनुष्य कर्म धर्म को करता, सब साधन को हृदय धरता ।
भक्ति का भण्डार, मनुष्य चोला है ॥३॥
मनुष्य तन में आप पछानो, टेऊँ भेद भ्रम को मानो ।
ज्ञान ध्यान गुलज़ार, मनुष्य चोला है ॥४॥

राग पहाड़ी

भज ले बन्दे भगवत को, भगवत ने तुझ को,
दिया मनुष्य चोला ॥टेक॥
मात गर्भ में हरि सिमरण का कौल किया,
माया में तुम फसकर, उसको भूल गया ।
अब भी हरि को याद करो,
काहे गंवाते अपना स्वांस अमोला ॥१॥
निश्दिन तेरे सिर पर काल पुकारत है,
बड़े बड़े बलवानों को यह मारत है ।
जो इससे तुझे बचना है,
श्रद्धा से जपले हरि का नाम अडोला ॥२॥
कहे टेऊँ यह दुनियां सारी फानी है,
क्यों तुम इससे ममता ठानी है ।

छोड़ ममत को ध्यान धरो,
सद्गुरु से ले उपदेश कट भ्रम भोला ॥३॥

राग पहाड़ी

हमारा तुम्हारा एक रूप प्यारा, ज्यों जल तरङ्ग ।
नहीं है न्यारा ॥टेक॥
अहै काष्ठ सब तरु ज्यों लोह, सश्तर वसन जान सूत्र ।
मट्टी घट अपारा ॥१॥
भूषण कुल कञ्चन है, चिन्ग कुल अग्नि है ।
शिला शैल सारा ॥२॥
मिठाई पताशा शक्कर की पैदाइशा, बदल हिम सताशा ।
ज्यों रवि उज्यारा ॥३॥
टेऊँ तोड़ मेदा किया निश्चय भेदा, ब्रह्म जीव अभेदा ।
कहे वेद चारा ॥४॥

राग पहाड़ी

राम नाम मुख बोल रे प्रीतम प्यारे ॥टेक॥
राम नाम का स्मरण करके, सगले पाप मिटाओ ।
परम पवित्र नाम प्रभु का, प्रेम उसी से पाओ ।
पीले प्रेम पियाला करले, हृदय उजाला हरले जगत जंजाला ।
अविद्या ताला खोल रे ॥१॥
राम नाम का स्मरण करके, ऋधि सिधि नवनिधि पाओ ।

कल्प ब्रच्छ है नाम हरि का, शरण उसी की आओ ।
प्रभु कृपा धारे तुम्हारे कार्ज संवारे, सब दुःख दर्द निवारे ।
दर्शन दे अनमोल रे ॥२॥
राम नाम का स्मरण करके, भव सिन्धु से तर जाओ ।
परम जहाज़ा नाम हरि का, तां पर तुम चढ़ जाओ ।
निश्चय पूर्ण राक्खो, प्रेम से हरि २ भाखो अमृत रस को चाखो
जन्म न जग में रोल रे ॥३॥
कहे टेऊँ हरि स्मरण करके, तर गये अधम अनारी ।
विदुर सुदामा कुवजा कर्मा, तर गयी गोतम नारी ।
अजा मेल सधन कसाई, गनका सेना नाई शबरी मीरा बाई ।
हरि ने किए सब कौल रे ॥४॥

राग पहाड़ी

बलिहारि मिलिआ मुझ को, सन्त सुधीर जी ।
मेरे मन की मिट गई पीर जी, धन धन भाग हमारे ।
आगई दिल को धीर जी ॥टेक॥
लक्षण सुनो तांके नर नारी, पूर्ण से है पर उपकारी ।
आज मिलिया शान्ति शरीर जी ॥१॥
नित अवतारी पुरुष उदारी, इन्द्रीय जीत हैं उपशम धारी ।
आज मिलिया गुणी गहीर जी ॥२॥
धीरज धारी धर्म अचारी, वेद न वेता वर विचारी ।

आज मिलिया ज्ञानी गम्भीर जी ॥३॥
कहे टेऊँ से वीर विज्ञानी, तिन पर जाऊं मैं कुर्बानी ।
आज मिलिया असली फकीर जी ॥४॥

राग पहाड़ी

सुनिए मन मेरा ! स्मरण की कर कार रे ।
गाफ्ल गफ्लत में न गुज़ार रे ।
निशिदन हरिनाम ध्याए, पाओ मोक्ष द्वार रे ॥टेक॥
भोगन से तुम करे किनारो, अपने मन में उपशम धारो ।
भोग दुःख का जान अगार रे ॥१॥
जिसको कहते मेरा मेरा, अन्तकाल सो है नहीं तेरा ।
कर देखो दिल में विचार रे ॥२॥
यह जग जान मुसाफिर खाना, जीव सर्व तामें महमाना ।
रहना तुझ को दिन दो चार ॥३॥
कहता टेऊँ सुनले प्यारे, सद्गुरु के अब जाओ द्वारे ।
अपना करले वेग उधार रे ॥४॥

राग पहाड़ी

देखो अपना आप सुन ले मेरे मन ॥टेक॥
पूरन गुरु की शिक्षा पाए, बैठ अकेला ध्यान लगाए ।
जप ले जाप अजाप ॥१॥

पाञ्च तत्वों का तन यह नाशी, इनका दृष्टा तुम अविनाशी ।
सब जग के हो बाप ॥२॥
आना जाना तुझ में नाहीं स्थित हो तुम अपने माहीं ।
लगे न तोहि सन्ताप ॥३॥
कहे टेऊँ सो रूप तुम्हारा, नाम रूप का जो आधारा ।
जां मंहि पुण्य न पाप ॥४॥

राग पहाड़ी

हे दीना नाथ दयाल शरण मैं आया तेरी ।
जान आपना बाल, लज्जा हरि राखो मेरी ॥टेक॥
दुष्टों ने आ मुझ को घेरा, काज बिगाड़त अब हरि मेरा ।
रक्षा करो रखपाल दूर हो जावन वेरी ॥१॥
सर्व कला तू समर्थ स्वामी, आदि पुरुष हो अन्तर यामी ।
बनकर काल कराल, कला हरो दुश्मन केरी ॥२॥
शरणागत को शरणी दीजे, पूर्ण मेरा कार्ज कीजे ।
करूणा निधि कृपाल दर्शन दे ना कर देरी ॥३॥
दुःख हरो मम दीन त्राता, शान्ति सुख दे हे सुख दाता ।
हरले विघ्न विशाल, कहे टेऊँ सुन टेरी ॥४॥

राग पहाड़ी

राम नाम जप श्रद्धा से, राम भवसागर तारे ।
कटें दुःख भारी ॥टेक॥

राम नाम की नौंका मांहीं चढले तू,
भवसागर से सहजे पार उतर ले तू ।
मोक्ष धाम को तुम पावो,
दुःख नहीं है जामें सदा सुखकारी ॥१॥
राम नाम का अमृत अहनिश पीजिये,
जीवन मुक्ति होकर जग में जीजिये ।
जन्म मरण का दुःख हरो,
फेर न आवो कबहुं गर्भ मंझारी ॥२॥
राम नाम बिन और न मुख से बोलिए,
राम नाम को हृदय अन्दर तोलिए ।
राम नाम में चित्त लाए,
दर्शन करले हरि का जो हितकारी ॥३॥
कहे टेऊँ जग भीतर साधन जेते हैं,
राम नाम के स्मरण सम नहीं तेते हैं ।
तांते सब तज राम भजो जां के,
स्मरण से आयु सफली हो सारी ॥४॥

राग पहाड़ी

तारो हे सद्गुरु तारो, मुझे भव से उबारो ।
दुःख दर्द निवारो ॥टेक॥
भव सिन्धु में हम डूब रहे हैं, मच्छ कच्छ के बहु दुःख सहे हैं ।

भुजा पकड़ के निकारो हे सद्‌गुरु तारो ॥१॥
सद्गुरु तेरी शरन मैं आया, भवजल धारा मोहि डराया ।
दया की दृष्टि धारो हे सद्‌गुरु तारो ॥२॥
जिस पर सद्गुरु दया तुम्हारी, टेऊँ तरहिं सो भव भारी ।
मुझ को नाहिं बिसारो हे सद्‌गुरु तारो ॥३॥

राग पहाड़ी

जिसी ने मनुष्य तन दीना, उसी को याद करले ।
जिसी ने बुद्धि बल धन दीना, उसी का नाम स्मरले ॥टेक॥
भजन बिन भगवान के, यह जीवन वृथा जान तू ।
सन्त शास्त्र कहत है सब, निश्चय करके मान तू ।
सफल जीवन बनाने को, हरि का ध्यान धरले ॥१॥
पहन को वस्त्र दिया जिस, खान को भोजन दिया ।
धरन पानी अग पवन, नभ चन्द्र रवि रोशन दिया ।
उसी प्रभु के गुन गाके, भव सिन्धु पार तरले ॥२॥
जिसकी कृपा से सदा तुम, कहे टेऊँ सुख पात हो ।
बैठ महलों में हमेशा, फूले नाहिं समात हो ।
उसी हरि की शरन लेके, सर्व दुःख द्वन्द हरले ॥३॥

राग पहाड़ी

करो सत्संग सदा सन्तों के द्वार जा करके ।
हृदय में प्रेम पा करके ॥टेक॥

श्रद्धा मन धारो यही, सन्त हरि रूप सही ।
सेवा करो शिर नवा करके ॥१॥
भोग विषयों से हटो, सन्त सङ्ग नाम रटो ।
पावो सुख मन मिला करके ॥२॥
सन्तों से ज्ञान सुनो, तां को हृदय में गुनो ।
चलो यह लाभ उठा करके ॥३॥
कहे टेऊँ शरण गहो, परम आनन्द लहो ।
जन्म मरण को मिटा करके ॥४॥

राग पहाड़ी

मेरी रसना ऊँचे स्वर बोलो, श्रीराम नारायण हरी हरी ।
श्रीराम नाम रस मीठे की तू, पीले अमृत ज़री ज़री ॥टेक॥
श्रीराम नाम तेरी लाली है, श्रीराम बिना तू काली है ।
श्रीराम नाम तेरी भाली है, श्रीराम बिना तू खाली है ।
श्रीराम नाम तेरी शोभा है, तू राम स्मर हर घड़ी घरी ॥१॥
रस विषयों के लेते लेते तुम आयु बहुत गंवायी है ।
अफसोस मुझे आता है, कच्छ शान्ति न तूने पायी है ।
अब भोगन के रस छोड़ सभी, इक हरि रस में रह पड़ी परी ॥२॥
छोड़ निन्दियां चुगली कटु वचनां, छोड़ तात पराई छल रचना ।
छोड़ झूठा बोलन पर हँसना, छोड़ गाली देना तू रसना ।
छोड़ जग के झूठे बातन को, कर बात राम की खरी खरी ॥३॥

श्रीराम स्मरे ना रसना, इक कोड़ी तिसका मुल्ह नाहिं ।
उस जिह्वा को तिल तिल कट दीजे, कूकर कौवों मुख माहिं ।
कहे टेंऊँ ऐसे वेद कहें, तुम देखो पुस्तक पढ़ी पढ़ी ॥४॥

राग पहाड़ी

सद्गुरु बोले सुन रे चेला, साधु कहावन जीवत मरना ।
सौदा समुझी कीजे ॥टेक॥

पहले अपना आप गंवाए, श्रद्धा से सिर दीजे ।
पांव धरे पीछे नहीं हटना, दम पैं कदम धरीजे ॥१॥
इक दिवस का काम नहीं है, अन्तक रहत रहीजे ।
सुख दुःख आदिक में सम रहना, निर्भय ज्ञान गहीजे ॥२॥
आठो याम एकान्ती रहिए, अजपा जाप जपीजे ।
अष्ट कमल पर आसन करना, अनहद नाद सुनीजे ॥३॥
कहता टेऊँ काया अन्दर, अपना आप लखीजे ।
तुरिया से भी होय अतीता, अगम देश लख लीजे ॥४॥

राग पहाड़ी

गुरु है हमारा प्रभु का प्यारा,
. धरे सीस तां पग करूं मैं जुहारा ॥टेक॥

ज्ञानी ध्यानी अभय दान दानी,
कहे ब्रह्मवाणी हरत भ्रम सारा ॥१॥

त्यागी विरागी निजात्मरागी,
श्रुति के सुजागी रहत निर्विकारा ॥२॥
करूणा कर कृपालु दीनन पर दयालु,
करत शिष्य निहालु लगावत न वारा ॥३॥
टेऊँ ब्रह्मरूपा सदा शिव स्वरूपा,
अनामी अरूपा अखंड है अपारा ॥४॥

राग पहाड़ी

करो तुम राम नाम व्यापार ॥टेक॥
और धंधे सब झूठे जानो, राम नाम को सत् कर मानो ।
छोड़ सब व्यवहार ॥१॥
और धंधो में दुःख भरा है, राम नाम में सुख धरा है ।
मन में देख विचार ॥२॥
और धंधे जड़ हैं नहीं कायम, राम नाम चेतन है दायम ।
देवे शान्ति भण्डार ॥३॥
कहे टेऊँ भज राम प्यारे, जो भव सिन्धु से पार उत्तारे ।
कहते वेद पुकार ॥४॥

❀ राग पीला ❀

हरि नाम जपो तुम प्यारा, जो भवजल तारण हारा ॥टेऊँ॥
नाम जपे भव तरिया पीपा, नाभा नापा नामा छीपा ।
दादू तरे पिञ्जारा ॥१॥

वालमीक दो भील चण्डाला, भक्त सुदामा तरे कङ्गला ।
भया अजामेल पारा ॥२॥

तरे कबीरा सैना नाई, जाट धना सदना कसाई ।
पुन रविदास चमारा ॥३॥

कहे टेऊँ हरि नाम उच्चारे, उधरे नीच ऊँच नर सारे ।
पाया हरि दीदारा ॥४॥

राग पीला

जे दान अभय के दानो, से साधु ब्रह्मज्ञानी ॥टेक॥

काम क्रोध नहीं लोभ अहम्ता, हर्ष शोक नहीं करते ममता ।
सर्व गुणों की खानी ॥१॥

पूर्ण तिनकी कहनी बहनी, योग युक्ति युत राखत रहनी ।
बोलत अमृत बानी ॥२॥

हार जीत नहीं वैरी मीता, करत सहारा आत्तप सीता ।
नांगा से निर्बानी ॥३॥

जग में रहते जीवन मुक्ता, ब्रह्म नेष्ठी ब्रह्म श्रोता ।
धीर्जवान ध्यानी ॥४॥

कहता टेऊँ परम उदारी, सगुण रूप हैं नित अवतारी ।
अनुभव घर के थानी ॥५॥

राग पीला

तुम साध संगति में आओ, नित गोविन्द के गुन गाओ ।।टेक।।

मनुष्य चोला दुर्लभ पाया, गाफल भोगों मांहि गंवाया ।
अब तो सफल बनाओ ।।१।।

सन्तों का संग निश्दिन करिये, श्रद्धा से हरि नाम स्मरिये ।
मन को नाहि डुलाओ ।।२।।

साध संगत की सेवा कीजिए, तन मन धन की भेटा दीजिए ।
ममता मोह मिटाओ ।।३।।

सन्त वचन धर मन में प्यारा, कहे टेऊँ होवे निस्तारा ।
फेर जन्म नहीं पाओ ।।४।।

राग पीला

दिल को मिलाओ दीन दयाल से, दीन दयाल से ।
गोबिन्द गोपाल से ।।टेक।।

संग न करना कव भोग कराल से,
प्रीत लगाओ सन्त मराल से ।।१।।

जीते जुदाई करो जगत जंजाल से,
नेह निभाओ नित हरि प्रति पाल से ।।२।।

जीत करो जन मन बैताल से,
सहज समाओ निज स्वरूप विशाल से ।।३।।

कहता टेऊँ तोड़ो लेखा जम काल से,
वृत्ति लगाओ तुम ब्रह्म अकाल से ॥४॥

राग पीला

दर्शन तेरे की प्रभु मुझ को प्यास है ॥टेक॥

प्रेम आवेश आवे, नैनों से नीर जावे ।
और न स्वाद भावे, तुमरी ख्वाइश है ॥१॥
प्रेम तेरे की पीरा, लागत जैसे तीरा ।
मोहि न आवे धीरा, मनुवा उदास है ॥२॥
डूबते को तीर जैसे, प्यासे को नीर जैसे ।
बालक को क्षीर जैसे, तैसे अभिलाश है ॥३॥
कहे टेऊँ पञ्छी होवां, उड़ कर दर्शन जोवां ।
तन मन के दुःख खोवां, यही मन आश है ॥४॥

राग पीला

अमरापुर के योगी आया, जुग जुग जीव उबारा ॥टेक॥
क्षमा सम सन्तोष विचारी, परमार्थ से पर उपकारी ।
प्रेमिन किया पुकारा, तब धार लिया अवतारा ॥१॥
दानी जत सत धीरज धारी, बाहिर भीतर भजन भण्डारी ।
ज्ञान अमर फल सारा, नित करते सन्त अहारा ॥२॥
बिन भूमि जिन बाग़ लगाया, चारों साधन चमन बनाया ।

पुष्प गुणन गुलजारा, उपदेश हुआ हुवकारा ॥३॥
अष्ट कमल परआसन किया, अमर देश को देख सुलिया ।
पाया दिव्य दीदारा, तनि देखा अगम अपारा ॥४॥
कहे टेऊँ कर जोड़ पुकारे, भाग जगे घर आये हमारे ।
लेखा जम निवारा, तव होया जय जय कारा ॥५॥

राग पीला

सन्त सज्जन घर आया, मैं मिल कर मंगल गाया ॥टेक॥

दो कर जोड़ करे प्रणामा, तन मन भेट धरे धन धामा ।
ले हरि नाम ध्याया ॥१॥
सन्तों को मैं करके सेवा, देखा अन्तर आत्म देवा ।
मुक्ति पदार्थ पाया ॥२॥
सन्तों की मैं सुन कर बानी, पाया पूरन पद निर्बानी ।
जन्म मरण दुःख जाया ॥३॥
कहे टेऊँ धन भाग हमारे, आज मेरे घर सन्त पधारे ।
उर में आनन्द छाया ॥४॥

राग पीला

गुरुमूर्त मन धारो, तुम गुरु का नाम उच्चारो ॥टेक॥

पहले गुरु को तन मन धन दे, पीछे गुरु से नाम रत्न ले ।
स्मरो नाहिं बिसारो ॥१॥

नैन कान मुख को बन्द करके, अन्तर मुख हो नाम स्मर के ।
तां का अर्थ विचारो ॥२॥
इड़ा पिङ्गला सुष्मिना नाड़ी, इनसे स्मरण कर सद्वारी ।
खोलो दसम द्वारो ॥३॥
कहे टेऊँ हरि स्मरण कीजे, अमर प्याला भर भर पीजे ।
आवागमन निवारो ॥४॥

❀ राग मांझ ❀

सत्संग में चलो तुम, श्रद्धा धरे प्यारा ।
श्रवण कर वचन को, मन में करो विचारा ॥टेक॥
सत्संग के वचन से, अज्ञान नाश होवे ।
पावन अभेद ज्ञाना, उपजे रिदे मंझारा ॥१॥
संसार रोग भारी, सब जीव को लगा है ।
सत्संग की दवा से, मिट जात रोग सारा ॥२॥
व्यवहार पुन परमार्थ, सत्संग मांहि सिद्ध होय ।
सुरतरु समान, सत्संग फल देत है अपारा ॥३॥
भव सिन्धु माहि जानो, सत्संग दृढ़ नौका ।
कहे टेऊँ ताहिं चढकर, पल तरो उदारा ॥४॥

राग मांझ

सब का भला करो तुम, होगा भला तुम्हारा ।
तेरे उद्धार का है, साधन यही उदारा ॥टेक॥

लाखों उपाय करके, तेरा बुरा करे को ।
तो भी करो सदा, तुम तिसका भला प्यारा ॥१॥
करना भला भले से, करना बुरा बुरे से ।
यह है मता जगत का, आगम निगम उच्चारा ॥२॥
माने न कोय माने, शशि सूर्य को जगत में ।
तो भी सदा सर्व पर, इक रस करे उज्जारा ॥३॥
सब कर्म में उत्तम है, करना भला सर्व का ।
कहे टेऊँ मनुष्य चोला, उपकार बिन असरा ॥४॥

राग मांझ

भगवान का भजन कर, हर काल में प्यारा ।
हरि भजन बिन जगत में, वृथा जन्म तुम्हारा ॥टेक॥
हरि भजन बिन जगत में, जीवन असार तेरा ।
बिन पूंछ सीङ्ग पशु जिम, फिरता करे अहारा ॥१॥
संसार धर्मशाला, सब जीव हैं मुसाफ़िर ।
इस में न थिर रहोगे, ममता तजो गंवारा ॥२॥
हरि भजन बिन तरन का, और न उपाय कोई ।
तांते करो भजन तुम, वेदन यही पुकारा ॥३॥
हरि भजन सत् जगत में, सब काम और झूठे ।
कहे टेऊँ भजन करले, मानो वचन हमारा ॥४॥

राग मांझ

साक्षात इस विश्व को, हरिका स्वरूप जानो ।
इस बात में जरा भी, संशय कभी न आनो ॥टेक॥
जगदीश और जगत में, रञ्चक न भेद कोई ।
हरि जगत जगत हरि, है वेदन यही बखानो ॥१॥
तन माहिं अंग नाना, फिर भी शरीर इक है ।
त्यों जगत जीव नाना, इक ब्रह्म ही पछानो ॥२॥
किसी एक अंग सेवा, समझो शरीर को सा ।
तिम एक जीव सेवा, भगवान सेव मानो ॥३॥
कहे टेऊँ सोय देखे, यह विश्व हरि स्वरूपा ।
कृपा करे जिसी को, गुरु ज्ञान दे महानो ॥४॥

राग मांझ

विचार से करो तुम, कार्ज सभी सुजाना ।
कीर्ति रहे जगत में, होंगे सुखी निदाना ॥टेक॥
धन धाम पुत्र त्रिया, बहु मान में ना सुख है ।
विचार में सर्व सुख, देखो धरे ध्याना ॥१॥
जंगल बसो नगर में, अथवा रहो गगन में ।
विचार बिन मिले ना, शान्ति किसी मकाना ॥२॥
विचारवान सुखिया, सब देश में सर्वदा ।
विचारहीन दुःखिया, भांवे पढ़े पुराना ॥३॥

विचारवान का है, दर्जा बड़ा सर्व से ।
कहे टेऊँ तिस मनुष्य को, पूजे सकल जहाना ॥४॥

राग मांझ

भगवान पर हमेशा, विश्वास धर प्यारा ।
निश्चय भला करेगा, प्रभु सदा तुम्हारा ॥टेक॥
दिलगीर होय दुःख में, भगवान ना भुलाओ ।
धीर्ज धरे हृदे में, ले राम का सहारा ॥१॥
समर्थ सर्व व्यापक, कृपा निधान जोई ।
जहिं तहिं रक्षा करे सो, हर काल के मंझारा ॥२॥
विश्वास है जिसी को, बेड़ा डुबे न तिस का ।
विश्वास से ज़हर भी, अमृत भया उदारा ॥३॥
प्रहलाद कर यकीना, प्रकट किया हरि को ।
कहे टेऊँ कष्ट तांके, नरसिंह ने निवारा ॥४॥

राग मांझ

ए ! ईश ! तेरी कुदरत किसी से, लिखी न जाये ।
योगी यति ज्ञानी ध्यानी, न पार पाये ॥टेक॥
कैसे बनाई धरनी, जल व्योम पवन अग्नि ।
अनमोल वन पहाड़ा, कर्तार किम उपाये ॥१॥
यह चन्द्र सूर्य तारे, क्यों कर बनाये सारे ।
रङ्गा रंगी सुन्दर किम्, पञ्छी पशु बनाये ॥२॥

है जग में जीव जेते, भिन्न भिन्न बनाया तेते ।
रङ्ग रूप चिह्न न्यारे, किस रीति से रचाये ॥३॥
माटी में पवन पाया, चेतन करे चलाया ।
किस को फन्दे फसाया, किसके बन्धन छुड़ाये ॥४॥
तुम होय निरांकारा, कैसे किया अकारा ।
यह देख तेरी लीला, अचरज में सर्व आये ॥५॥
पड़दा सभी उठाओ, ना आपको छिपाओ ।
कहे टेऊँ कष्ट हरले, अपना दर्स दिखाये ॥६॥

राग मांझ

सुनो दीना नाथ प्रभु ! अर्ज यह हमारा ।
अभय दान देह, और गंगा का किनारा ॥टेक॥
चान्दनी की यामनी में, चमक रहे तारा ।
सुरसरी तट नाम जपूं, चलत ठंढी धारा ॥१॥
राज की न चाह मुझे, चहूँ सुत न दारा ।
चहूँ जंगल वास, करूं तत्व का विचारा ॥२॥
रहे नाहिं पाप ताप, द्वन्द दुःख सारा ।
चिन्त किसी की ना रहे, होय दिल बहारा ॥३॥
रैन दिवस चाह यही, दर्स हो तुम्हारा ।
और मुझे होत रहे, सन्त का दीदारा ॥४॥

कहे टेऊँ टेर यही, सुनो प्राण प्यारा ।
आदि मध्य अन्त रहे, तेरा ही सहारा ॥५॥

राग मांझ

जागो जागो सन्तों के संग से जागो, अपने स्वरूप में लागो ॥टेक॥

मनुष्य जन्म दुर्लभ संसारा, देवन को भी है यह प्यारा ।
इस में स्मरो सत्कर्तारा, पाओ पूर्ण मोक्ष द्वारा ।
भोग विषय से तुम भागो ॥१॥

अविद्या से तुम गाफल होया, चोरासी लख योनि में सोया ।
स्वास अमोलक वृथा खोया, अन्त समय में तुमने बहु रोया ।
अब तो अविद्या त्यागो ॥२॥

अन्तर की अखियां तुम खोलो, देखो आत्म राम अमोलो ।
कहे टेऊँ ना मन को डोलो, सन्तों से मिल शिवोऽहं बोलो ।
उर में धर अनुरागो ॥३॥

राग मांझ

करले करले हरि भजन सुखदायी, होवहिं अन्त सहायी ॥टेक॥

हरि भजन उर आनन्द भरता, मन की ममता चिन्ता हरता ।
जो जन हरि का स्मरण करता, सो जन भव सागर से तरता ।
ग्रन्थनि महिमा गायी ॥१॥

हरि भजन जमदूत हटावे, जन्म जन्म के पाप मिटावे ।
श्रद्धा से जो हरिगुन गावे, सो जन हरि के हृदय भावे ।
सन्तों ने साख सुनाई ॥२॥
हरि भजन हरि साथ मिलावे, कहे टेऊँ दुःख द्वन्द गलावे ।
सुख की सेजा माहिं सुलावे, अन्त में मोक्ष धाम दिलावे ।
यह गुर बात बतायी ॥३॥

* राग जोग *

प्रवल है अति हरि की माया, जिसने सब जग जीव भुलाया ॥टेक॥
केते शब्द स्पर्ष में बान्धे, केते रूप रसन में साधे ।
केते गन्द के वीच गलाया ॥१॥
केते काम क्रोध में जारे, केते लोभ मोह में मारे ।
केते मद के सिन्धु वहाया ॥२॥
केते योगी पण्डित ज्ञानी, केते त्यागी तपस्वी ज्ञानी ।
केते मुनिवर खाक मिलाया ॥३॥
कहे टेऊँ इस सब को लूटा, कोई इनसे विरला छूटा ।
जिसने गुरु का चरण ध्याया ॥४॥

राग जोग

सद्गुरु सुन यह अर्ज़ हमारो, मेरे सब ही दुःख निवारो ॥टेक॥
मैं हूँ पापी तुम हो पावन, पकड़ी प्रभु तुमरी दावन ।
पाप हमारे सब प्रहारो ॥१॥

चाह न चिन्ता मनमें व्यापे, पाञ्च क्लेशा ताप न तापे ।
कामादिक सब देत सहारे ॥२॥
बहुते अवगुण है मुझ माहीं, जिनहों की कुच्छ गिनती नाहीं ।
सद्गुण दे सब अवगुण टारो ॥३॥
कहे टेऊँ मैं शरण तुम्हारी, राखो प्रभु पैज हमारी ।
भुजा पकड़ भव सागर तारो ॥४॥

राग जोग

रे मन मेरा कर होशयारी, राम भजन की है यह वारी ॥टेक॥
मनुष्य देही पुण्य ते पाई, दुर्लभ मुनिवर वेदन गाई ।
हरी स्मरे करो सफली सारी ॥१॥
यूनि चराचर फिर फिर आया, जन्म मरण का बहु दुःख पाया ।
अब तो स्मरो हरी सुख कारी ॥२॥
ऐसा बेला नहीं फिर होवहिं, गुजर जायगा तब तुम रोवहिं ।
तांते जपले राम मुरारी ॥३॥
कहे टेऊँ गुरु शरनी लीजे, सन्तन के संग नाम जपीजे ।
जांते टूटे यम की जारी ॥४॥

राग जोग

ना तुम किसका ना कोई तेरा, भूलि करत क्यों मेरा मेरा ॥टेक॥
जन्म समे को साथ न लाया, यहां आय बहु मित्र बनाया ।

मोह महातम तुझ को घेरा ॥१॥
मात पिता सुत पुन परिवारा, जान मुसाफिर यह संसारा ।
कूच करेंगा सब तज डेरा ॥२॥
हृदय अन्दर उपशम धारे, देखो मेरा वचन विचारे ।
दूर करो तुम भ्रम अन्धेरा ॥३॥
कहता टेऊँ तुम अविनाशी, अंसग अलेपा है सुखराशी ।
सब सन्तों ने ऐसे टेरा ॥४॥

राग जोग

रे मन मेरा सत्संग करिये, जिससे तेरा कार्ज सरिये ॥टेक॥
सत्संग जानो नाव समाना, तां पर चढ़ ले तज अभिमाना ।
भव सागर से सहजे तरिये ॥१॥
सत्संग सम को साधन नाहिं, सब साधन है सत्संग माहिं ।
तां में जाकर भव दुःख हरिये ॥२॥
सत्संग सुरतरु चिन्तामणी सम, सेवन से दे सब सुख हर दम ।
पूर्ण निश्चय हृदय धरिये ॥३॥
सत्संग कर पाओ सुख रासी, कहे टेऊँ काटो यम फांसी ।
हो निर्भय किस से ना डरिये ॥४॥

राग जोग

रे मन मेरा होय निराशा, छोड़ जगत की झूठी आशा ॥टेक॥

जग की आशा है दुःखदायी, सब सन्तों ने साख सुनाई ।
सन्त वचन पर धरो विश्वासा ॥१॥
सात द्विप नव खंडो माहिं, रञ्चक सुख कहिं दीसत नाहिं ।
भलि देखो जा धरनि अकाशा ॥२॥
सब तज स्मरो अन्तर यामी, निर्भय निर्मल हो निश्कामी ।
जन्म मरण की मेटो त्रासा ॥३॥
कहे टेऊँ गुरु शरने जाओ, पूर्ण ब्रह्म ज्ञान को पावो ।
अपने घर में करले वासा ॥४॥

राग जोग

आत्म ज्ञान अमिरस पीवो, जावोगे ना यम के धाम ॥टेक॥
जांके पीवत मिटे प्यासा, जगे न रंचक जग की आशा ।
मिलहैं पूर्ण सुख विश्रामा ॥१॥
सद्गुरु का सत्शब्द उच्चारे, मनका फुरणा सब निवारे ।
देखो अन्तर आत्म राम ॥२॥
अहम्ता ममता मोह मिटावो, जीवन मुक्ति जग में पावो ।
होवहिं पूर्ण सबहिं काम ॥३॥
कहे टेऊँ लाई सहज समाधी, जीव ईश की छोड़ो उपाधी ।
करिये अनुभव घर आराम ॥४॥

राग जोग

सद्गुरु सागर के सम जानो, रत्न गुणो को धरता है ॥टेक॥

निर्मल दर्शन चन्द्र विकासे, मधुरा हरि का प्रेम प्रकाशे ।
जिस पीवत रङ्ग चढता है ॥१॥
ॐ शब्द संख पहचानो, सत्संग कल्प वृक्ष कर मानो ।
जांसे कार्ज सरता है ॥२॥
प्राणायाम ऐरावत हाथी, धर्मी विद्या लक्ष्मी साथी ।
जांसे सब अघ हरता है ॥३॥
काम धेनु हरि भक्ति राजे, अमृत आत्म ज्ञान विराजे ।
जो पीवे नहीं मरता है ॥४॥
जो जन इस सागर को सेवे, कहे टेऊँ सो सब फल लेवे ।
शरण पड़े भव तरता है ॥५॥

राग जोग

जे भव सागर तरना चाहो, सन्तों की लेवो शरना ॥टेक॥
पापों का जो बोझ उठाया, जे तुम चाहो तांहि गिराया ।
सन्त चरण पर शिर धरना ॥१॥
काम क्रोध मद मोह विकारा, जे तुम चाहो सर्व निवारा ।
सन्त वचन पर नित चलना ॥२॥
बल विद्या आयु सन्माना जे तुम चाहो सर्व बढ़ाना ।
सन्तों को वन्दन करना ॥३॥
चार पदार्थ नाम खज़ाना, जे तुम चाहो लेन सुजाना ।
सन्त सेव कर उर मरना ॥४॥

कहता टेऊँ सुनले प्यारा, जे तुम चाहो मुक्ति उदारा ।
सन्तन संग जीते मरना ॥५॥

राग जोग

रचना तेरी राम निराली, अन्त न कोई पावत है ॥टेक॥
इक क्षण में बहु जगत पसारा, उपजे बिनसे तोहि मंझारा ।
निगमा आगम बतलावत है ॥१॥
कोटि ब्रह्मा कोटि शंकर, कोटि विष्णु कोटि किङ्कर ।
महिमा कह हट जावत है ॥२॥
कोटि सूर्य कोटि चन्द्र, कोटि सुरगण कोटि इन्द्र ।
नेति नेति सब गावत है ॥३॥
कहे टेऊँ सब कह कह हारे, लीला तव अद्भुत कर्तारे ।
देख सभी विस्मावत है ॥४॥

राग जोग

वणज करण को आया जगमें, करलो नाम व्यापारा रे ॥टेक॥
और पदार्थ जग में जेते, मिथ्या क्षण भंग जानो तेते ।
दुःख को देवन हारा रे ॥१॥
राम नाम का सौदा जोई, सन्त हाट से मिलता सोई ।
उनसे ले वणजारा रे ॥२॥

यह सौदा न कबहुं खूटे, भांवे कितना निश्दिन लूटे ।
दिन दिन होत अपारा रे ॥३॥
जो यह सौदा लेवे प्यारा, कहे टेऊँ सो धन वणजारा ।
अपना कुल तहीं तारा रे ॥४॥

राग जोग

मन मूर्ख क्यों गर्व करत हो, इक दिन तू मर जावेंगा ॥टेक॥
भूतों से हरि गात बनाया, प्राण कला को पाय चलाया ।
प्राण गए गिर जावेंगा ॥१॥
जिस तन को तुम रस से पोषत, रेशम के बहु वस्त्र ओढ़त ।
अग्नि में सो जर जावेंगा ॥२॥
पाप कर्म से माया जोड़ी, अन्त साथ ना चलती कोड़ी ।
कर खाली कर जावेंगा ॥३॥
कहे टेऊँ सब सन्त पुकारे, अब भी साध संगत कर प्यारे ।
जांसे भव तर जावेंगा ॥४॥

राग जोग

मेरे मन मेरी मत माना, अपना छोड़ पसारा रे ॥टेक॥
फुरना छोड़ अफुर घर आओ, ब्रह्म भवन तज बाहिर न जाओ ।
बाहिर दुःख अपारा रे ॥१॥

पार ब्रह्म से होकर नियारे, कलना कल्पी बहु प्रकारे ।
जांका आर न पारा रे ॥२॥
भटक भटक बहु कल्प बिताए, अबलौं अपने घर नहीं आए ।
शर्म जरा नहीं धारा रे ॥३॥
कहे टेऊँ अब शान्ति धारे, अपने घर में आओ प्यारे ।
गुरु का ले आधारा रे ॥४॥

राग जोग

मेरे मन कर कपट न क़ासे, कपटी का मुँह काला रे ॥टेक॥
स्वार्थ हित जिन कपट कमाया, नाम बुरा कर तिन दुःख पाया ।
अन्त पड़े जम जाला रे ॥१॥
काल नेमी मारीच सुपनखा, कपट किया तिन फल को देखा ।
रावण निज कुल छाला रे ॥२॥
जयन्त पुन दुर्योधन राहु, कीन कपट मिलिया फल ताहु ।
लागा तिन घर ताला रे ॥३॥
कहे टेऊँ तुम कपट त्यागो, सन्त जनां के चरने लागो ।
अन्तर होय उज्याला रे ॥४॥

राग जोग

प्रभु मुझ से दूर रहो ना, आवो पास हमारे जी ॥टेक॥
तुझ बिन मेरा जीवन दुःखिया, एक पल नहीं होवत सुखिया ।
नैन रोय जल हारे जी ॥१॥

तारे गिन गिन रैन विताऊं, दम दम दर पर देखन जाऊं ।
थाके नैन निहारे जी ॥२॥
तुम बिन भावे ना शृँगारा, सर्व पदार्थ लागत खारा ।
विरह अग्नि तिन जारे जी ॥३॥
कहे टेऊँ जे यहां न आओ, कर कृपा निज पास बुलाओ ।
व्योग न सकूं सहारे जी ॥४॥

राग जोग

पूर्ण सद्गुरु देश अगम की, अद्भुत बात बताई रे ॥टेक॥
जहां न धरनी आकाश न पवना,
अग्नि उदक नहीं रवि शशि गवना ।
काल न देत दिखाई रे ॥१॥
जहां न ज्ञाता ज्ञेय न ज्ञाना,
भूत भविष्यत ना वर्तमाना ।
बन्ध मोक्ष नहीं राई रे ॥२॥
जहां न हर्ष शोक पुण्य पापा,
योग वियोग न ताप सन्तापा ।
जम की त्रास न काई रे ॥३॥
जहां न मन बुद्धि चित्त अहंकारा,
निर्गुण सगुण नहीं अवतारा ।
माया की नहीं छायी रे ॥४॥

और नहीं कुच्छ जामें भासे,
स्वयं रूप से सो प्रकाशे ।
वेद सके ना गाई रे ॥५॥
कहे टेऊँ सो देश हमारा,
तहां पहुंचे को सन्त सचारा ।
जिससे गुरु सहाई रे ॥६॥

राग जोग

गुरु कृपा से आज भई है, सुरति शब्द की शादी रे ॥टेक॥
श्रेष्ठ गुणों की चली बराती, बाजे नाद अनादी रे ॥१॥
रिल मिल सखियां मङ्गल गावे, रोम रोम अह्लादी रे ॥२॥
शब्द पति से सुरति दुलहनी, मिलगयी छोड़ उपाधी रे ॥३॥
प्राणायाम की डोली चढ़कर, नगर चले निज आदि रे ॥४॥
कहे टेऊँ कुल कार्ज होया, छूटी वाद विवादी रे ॥५॥

राग जोग

बादल अमृत धारा बर्से, पीवत चात्रक प्यारा रे ॥टेक॥
चात्रक जीवन बून्द स्वाँति, पीवत और न वारा रे ॥१॥
सागर सर सरता का पानी, लागे तांको खारा रे ॥२॥
अन्तकाल सिर करहिं न नीवां, ऊंचे चूंच पुकारा रे ॥३॥
कहे टेऊँ इस अटल नियम पर, जाऊँ मैं बलिहारा रे ॥४॥

राग जोग

सद्गुरु मिलिया पर्दा खुलिया, पाया आत्म ज्ञाना रे ॥टेक॥
सर्वं जगत आत्ममय भासत, भेद भ्रम सब माना रे ॥१॥
शत्रु मित्र पुन कञ्चन माटी, नीच ऊंच सम जाना रे ॥२॥
हर्ष शोक नहीं सुख दुःख व्यापे, नाहिं मान अपमाना रे ॥३॥
कहे टेऊँ गुरु कृपा से हम, पाया पद निर्बाना रे ॥४॥

राग जोग

देख जगत का रङ्ग न भूलो, जान कपट का जाला रे ॥टेक॥
इसी जाल में जोई फंसता, तां को मारत काला रे ॥१॥
मरकट पंछी केहर फंसकर, देखा दुःख विशाला रे ॥२॥
मृग करी अलि मीन पतङ्गे, पाया कष्ट कराला रे ॥३॥
कहे टेऊँ सो कबहुं न भूले, जांका गुरु रक्खवाला रे ॥४॥

राग जोग

मैं हूँ शाहन शाह, शाहन शाही सैर हमारा ॥टेक॥
अफुर अनादी वहदत मैं हूँ, फुरने करके कसरत मैं हूँ ।
मेरा सब उत्साह सूक्ष्म पुन, स्थूल पसारा ॥१॥
मेरे आगे माया नाचे, मम शक्ति ले रचना राचे ।
रचिया जग असगाह, देव दनुज नर लहर अपारा ॥२॥

मैं सब में हूँ सब से निराला, रहत आप में मैं मतवाला ।
मुझ को अनन्त अथाह, हर्ष शोक से मैं हूँ नियारा ॥३॥
कहता टेऊँ मैं सब घट हूँ, मैं की सूरत में प्रगट हूँ ।
मैं हूँ बेपरवाह सब पर, हुक्म चलावन हारा ॥४॥

राग जोग

दाता हैं इक राम, सर्व जीवन को देवन हारा ॥टेक॥
जो कुच्छ मंगना मांगो हरि से, भूल न मंगना दूजे दर से ।
प्रभु पूर्ण काम ॥१॥
सर्व जगत का प्रभु दाता, इतना देते अन्त न आता ।
देता आठों याम ॥२॥
परमेश्वर के अखुट खज़ाने, बिन मांङ्गे दे मन की जाने ।
सर्वज्ञ है सुख धाम ॥३॥
कहे टेऊँ तज दूजी आशा, स्मर हरि को स्वाँसऊं स्वाँसा ।
अलख पुरुष अभिराम ॥४॥

राग जोग

मेरे मन अब धीर्ज धार, प्रभु तेरे काज संवारे ॥टेक॥
धीरज धार धुरुने मनमें, स्मरण कीना जाकर बन में ।
निश्चल पद पाया निर्धार, ना घबराया विपद् मंझारे ॥१॥

धीरज भक्त प्रहलाद ने धारा, संकट में भी राम उच्चारा ।
धारे हरि नरसिंह अवतार, लीना अपना भक्त उबारे ॥२॥
हरिश्चन्द्र ने धीर्ज धारे, बेचा आप नारी सुत प्यारे ।
अपना धर्म न दीना डार, गाम सहित सुरलोक सुधारे ॥३॥
पाण्डवों ने मन धीरज कीना, महा कष्ट बन में सह लीना ।
तजा न कबहुं धर्म विचार, विपति हरि कृष्ण मुरारे ॥४॥
कहे टेऊँ जो धीर्ज धारे, प्रभु तांके दुःख निवारे ।
तिसकी होवे जय जय कार, यश सुख पावे जगत मंझारे ॥५॥

राग जोग

भक्ति से रीझे भगवान, भक्ति ही भगवत को भावे ॥टेक॥

ना हरि रीझे कर्म करण से, ना हरि रीझे पाठ पढ़न से ।
ना हरि रीझे देते दान, भांवे बहु विधि यज्ञ रचावे ॥१॥
ना हरि रीझे तीर्थ नहाते, ना हरि रीझे फल को खाते ।
ना हरि रीझे बन स्थान, भांवे पाञ्चो अग्नि तपावे ॥२॥
ना हरि रीझे देव अराधे, ना हरि रीझे मन्त्र साधे ।
ना हरि रीझे योग ध्यान, भांवे ऋद्धि सिद्धि बहुत दिखावे ॥३॥
ना हरि रीझे केश बढ़ाए, ना हरि रीझे मुण्ड मुंडाए ।
ना हरि रीझे करत वख्यान, भांवो लाखों लोक रीझावे ॥४॥
भक्ति बिना सब साधन फीके, भक्ति सहित लागत हरि नीके ।
टेऊँ कहते वेद पुरान, धन धन सो जो भक्ति कमावे ॥५॥

राग जोग

मेरे मन अब जपले राम, और जगत के काम विसारे ।टेक॥
काम जगत के कर कर भारी, खोये अपनी आयु सारी ।
नेक न पाया मन विश्राम, रो रो कर वहु जन्म गुजारे ॥१॥
काले केश पलट भये श्वेता, अबहुं तुमने मूढ न चेता ।
शर्म न तुझ को नमक हराम, खात हरि का और चितारे ॥२॥
सात वोस षट चार अठारह, सन्त सभा यह को न विचारा ।
सब से नीका है यह काम, राम भजन कर प्रीतम प्यारे ॥३॥
काम क्रोध मद मोह त्यागो, देवी सम्पत्ति में नित लागो ।
होय कुसंग से तुम उपराम, जन्म सफल कर सन्त द्वारे ॥४॥
भव सिन्धु के तरने का साधन, वेद कहा है नाम अराधन ।
तांते स्मरो हरिका नाम, कहे टेऊँ कर जोड़ पुकारे ॥५॥

राग जोग

सद्‌गुरु पै जाऊँ कुर्बान, अनुभव की जिस खिड़की खोली ॥टेक॥
जिस अमृत हित देव प्यासी, राज छोड़ भै भूप उदासी ।
सो अमृत गुरु कराया पान, तांके चरनन की मैं गोली ॥१॥
हरदम गुरु दर पानी भरऊँ, वर्तन माञ्जे ऊज्वल करहुं ।
तिस गुरु का होवहुं दर्वान, आत्म रंग रगो जिह चोली ॥२॥
देखा खोज इसी जग माहिं, उस वस्तु के सम को नाहिं ।
जो गुरु देना मुझ को दान, साथ सुनाई शिवोहं बोली ॥३॥

कहे टेऊँ त्रिलोक मंझारी, सद्गुरु सम को ना उपकारी ।
मेटे मोह ममत अज्ञान, दीनी आत्म लाल अमोली ॥४॥

राग जोग

गुरु पूजन का दिन है आज, श्रद्धा से गुरु पूजा करिये ॥टेक॥
गुरु पूजा का उत्तम दिहारा, सफल करो गुरु पूजे सारा ।
पावन पूजा का वे साज ॥१॥
गुरु पूजन से बढ़े ज्ञाना, सुख सम्पत्ति पावे सन्माना ।
पूर्ण प्रसन्न हो श्री महाराज ॥२॥
श्रीफल मिश्री भेट चढाओ, पुष्प सुगन्धि शिर छिटकाओ ।
सद्गुरु सब का है शिरताज ॥३॥
गुरु को पूजा राम कृष्ण ने, देव दनुज नर खग पशुगन ने ।
गुरु को पूजे सकल समाज ॥४॥
कहे टेऊँ जो गुरु को पूजे, सर्व ज्ञान तिसके मन सूझे ।
गुरु से सिद्ध हो सबहिं काज ॥५॥

राग जोग

मेरे मन जागो रे जागो ॥टेक॥
बहुत जन्म से सोये हो तुम, घोर नीन्द के माहिं ।
अब तो सन्त वचन को सुन के, अविद्या नीन्द त्यागो ॥१॥

जागन से सब भयता भागे, चोर न कोई लूटे ।
तन नगरी में निर्भय होके, आत्म में अनुरागो ।।२।।
भूलि किसी की आश करो ना, जग झूठा है यह सारा ।
हृदय अन्दर धर वैरागा, भोग विषय से भागो ।।३।।
कहे टेऊँ सब बन्धन तोड़े, जीवन मुक्ति पाओ ।
परमानन्द के प्राप्ति कारण, सद्गुरु के पद लागो ।।४।।

राग जोग

घघरिया फूटी रे फूटी ।।टेक।।

रंग रंगीली घाघर मेरी, लागत थी मुझ प्यारी ।
बहुत जन्म से शिर पर धारो, यत्न किये ना छूटी ।।१।।
डोरी बान्ध कर कूँए भीतर, जल भरने को भेजी ।
चलते चलते चोट लगी तिस, घोर शब्द कर टूटी ।।२।।
घाघर फूटी सुन कर सखियां, मिल कर देत बधाई ।
हर्ष भया सुन मेरे मन में, भली भयो जो फूटी ।।३।।
सन्त जनों की घाघर फूटी, टूटत आनन्द पाया ।
कहे टेऊँ मेरी भी फूटी, फेर कभी ना जूटी ।।४।।

राग जोग

हरिजन जागे रे जागे ।।टेक।।

जागी शंकर लाय समाधी, काम देव को जीता ।
जागी पवन पुत्र हनुमाना, राम चरण मे रागे ।।१।।

जागी अर्जुन श्याम सुन्दर को, स्वपने आसन दीना ।
जागी व्यास पूत जन्मत ही, वन में गये घर त्यागे ।।२।।
जागी रङ्क बङ्क जाना, सम कंचन और माटी ।
जागी नाम देव सब घट में, राम देव अनुरागे ।।३।।
जागी ध्रुव प्रहलाद भक्त ने, राम भजन नहीं छोड़ा ।
जागी पीपा साइना कबीरा, सन्त सेव में लागे ।।४।।
इत्यादिक वहु हरिजन जागे, आये हरि गुरु कृपा ।
कहे टेऊँ तिन के मुख देखत, दूरहि से जम भागे ।।५।।

राग जोग

हरि मैं तेरा हूँ तेरा ।।टेक।।

तन मन तेरा धन भी तेरा, बल बुद्धि वाणी तेरी ।
जो कुच्छ है सो सब होतेरा, ना कुच्छ इस में मेरा ।।१।।
तुम हो मालिक मैं हूँ मिलकियत, हरदम हूँ वश्य तेरे ।
जो जो काज कराओ मुझ से, सोई करूं बन चेरा ।।२।।
तुम हो नटवर मैं हूँ पुतली, हुकम डोरि में बान्धे ।
जैसे नाच नचाना चाहो, तैसे देवहूँ फेरा । ३।।
तुम हो चित्र बनाने वाले, मैं हूँ चित्र तुम्हारा ।
नाम रूप यश रंग ढंग यह, सब कुच्छ हरि तो केरा ।।४।।
आप अंगी मैं अंग हूँ तेरा, अलग सत्ता नहीं मेरी ।
कहे टेऊँ मैं कहने मात्र, सब तूं है मैं हेरा ।।५।।

राग जोग

बन्दा सो होगा जो होना ॥टेक॥

जो कुच्छु हरिने रचकर राखा, अवश्य बनेगा सोई ।
न्यून अधिक कुच्छ ना होवेगा, वृथा है तब रोना ॥१॥
जोय वना है सोय बनेगा, और नहीं कुच्छ होगा ।
इस में अपनी तर्क चलाना, है अवसर को खोना ॥२॥
हरि इच्छा है प्रबल जैसी, जीव इच्छा ना तैसी ।
यह विचारे राम भरोसे, पांव पसारे सोना ॥३॥
भोगे बिन ना भावी भागे, कितना भी बललावे ।
कहे टेऊँ हरि स्मरो तांते, बैठ सब्र के कोना ॥४॥

राग जोग

हरि रस मिठा है मीठा ॥टेक॥

जो जन चाखे सोई जाने, और न जाने कोई ।
तीन लोक में रस ना ऐसा, सन्तन लागे ईठा ॥१॥
आन रसों को जबहिं त्यागे, तबहिं यह रस आवे ।
रस छोड़े बिन रस ना आवे, निश्चय कर मैं ढीठा ॥२॥
ब्रह्मा किया विष्णु पीया, शङ्कर नारद पीया ।
सनकादिक जनकादिक पीया, देके विश्व रस पीठा ॥३॥

पीने से यह रस ना घटता, ना कब फीका होवे ।
अद्भूत महिमा है इस रस की, कहत वेद अनीठा ॥४॥
जां पर सद्गुरु कृपा धारे, पीवे हरि रस सोई ।
कहे टेऊँ सो पीकर मैंने, तोड़ा जम का चीट्ठा ॥५॥

राग जोग

साज ले गावे रे गावे ॥टेक॥

लेकर वीणा नारद गावे, शङ्कर लेकर डमरू ।
लेकर सितार शारद गावे, विष्णु शंख सुनावे ॥१॥
दिव्य साज ले सुरपति गावत, ले पुस्तक शुक व्यासा ।
शेष नाग भी सहस्र मुख से, सहस नाम धुनि लावे ॥२॥
लेकर मुरली मोहन गाया, गोपी गोप बुलाके ।
किन्नर गन्धर्व रिल मिल गावत, मृदंग मेघ बजावे ॥३॥
लेकर खंजरी गोरख गाया, मीरा ले करतारा ।
लेकर तम्बूर कबीर गाया, नामा झांझ झुनावे ॥४॥
सूरदास ले कञ्झिया गाया, तुलसी माला फेरी ।
ले रबाब मरदाने गाया, नानक नाम जापावे ॥५॥

लेकर ढोलक नरसी गाया, जयदेव ले चौतारा ।
ढोल बजाकर पीपे गाया, नाभा नूपर पावे ॥६॥
ऐसे जिन जिन हरिगुन गाया, तां पर मैं बलिहारी ।
दास टेऊँ भी ले यकतारा, गावत धूम मचावे ॥७॥

राग जोग

दीन दयाल वो भगवाना, बदला मुझ से ना चकुना ॥टेक॥
पावन सद बखशदा, कहते तुझ को वेद पुराना ॥१॥
केते पापी तुमने तारे, मैंने सुनिया अपने काना ॥२॥
कर्म धर्म को ना-मैं किया, राक्खो प्रभु अपना बाना ॥३॥
कहे टेऊँ हरि कृपा करके, दीजे मुझ को निर्भय दाना ॥४॥

राग जोग

आत्म धन है अचल हमारा, जांकी महिमा अपरम अपारा ॥टेक॥
जांको अग्नि जार सके नाहिं, ना तहिं शस्त्र छेदन हारा ॥१॥
जांको वायु सोशत नाहिं, डुबा सके ना जलकी धारा ॥२॥
जांको तस्कर लूट सके ना, लागत नाहिं जांको विकारा ॥३॥
कहे टेऊँ वह कबहुं न खूटे, खावे खर्चे जे युग चारा ॥४॥

राग जोग

भरे जाम जोगी, ब्रिह का पिलाया ।
भया देव दर्शन, जहिं मन भुलाया ।।टेक।।
धरे चौ साधन को, हरे भव वन्धन को ।
विकारों के बनको, विरह अग जलाया ।।१।।
धरनि यह बदन है, इन्द्रिय गण चमन है ।
देवीगुण सुमन है, सुगन्ध सरस लाया ।।२।।
खाया ज्ञान फल को, पीया प्रेम जल को ।
पाया ब्रह्म वलको, द्वन्द को गलाया ।।३।।
टेऊँ ताप जोई, गया सहज सेई ।
जो साक्षी स्नेही, सो मोहन मिलाया ।।४।।
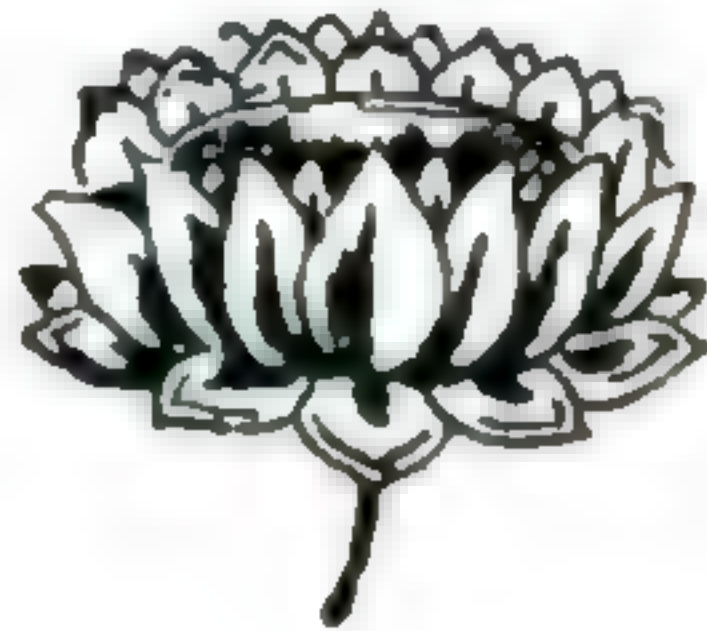
सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराजजी की आरती

ॐ जय गुरु टेऊँराम, स्वामी जय गुरु टेऊँराम
पर उपकारी जगत उद्धारी, तुम हो पूरन काम ॥ ॐ ॥
जब जब प्रेमिन निज हितकारण, तुम को पुकारा ॥स्वामी॥
तब तब गुरु अवतार धरे तुम, सब को निस्तारा ॥ ॐ ॥
प्रेम प्रकाशी मण्डलाचार्य, मंत्र साक्षी सत्नाम ॥स्वामी॥
धर्म सनातन के प्रचारक, नीति निपुण अभिराम ॥ ॐ ॥
देश विदेश में मण्डली लेकर, पावन दे उपदेश ॥स्वामी॥
आत्म रूप लखाया सबको, हरिया ताप क्लेश ॥ ॐ ॥
पूर्ण अचल समाधि तेरी, सिद्ध आसन ब्राजे ॥स्वामी॥
रूप मनोहर सुन्दर लोचन, देखत मन गाजे ॥ ॐ ॥
आत्म स्थिति वचन के पूरे, योगी इन्द्रयजती ॥स्वामी॥
परम उद्धारी धैर्य धारी, परम अगाधमती ॥ ॐ ॥
धन धन मात पिता कुल तेरा, धन तव साध सुजान ॥स्वामी॥
धन वह देश जहाँ तुम जन्मिया, धन तव शुभ स्थान ॥ ॐ ॥
सुरनर मुनिजन हरिजन गुनिजन, गावन गुन तुम्हरे ॥स्वामी॥
अन्त न पाय सके नर कोई, महिमा परम परे ॥ ॐ ॥
जो जन तेरी आरती गावे, पावे सो मुक्ति ॥स्वामी॥
साध संगति को हरदम दीजे, पूर्ण गुरु भक्ती ॥ ॐ ॥

छन्द — सर्व स्वरूपं आदि अनूपं भूमि भूपं भयभाना ।
अन्त न ऊपं छाय न घूपं काढत कूपं धर ध्याना ॥
रहसस्य रामं दायक धामं नित निष्कामं निर्बानी ।
पाद नमामं निशदिन शामं श्री टेऊँराम गुरु ज्ञानी ॥१॥

चावल चन्दन कुङ्ग कैसर फूलों की बरखा बरखाओ ।
नृसिह गोमुख भेरी बाजा तबलसुरदा झाँझ बजाओ ॥
भर भर दीपक पूर्ण घी से अगरबत्ती अरु धूप जलाओ ।
आरती साज करो बहु सुन्दर सद्गुरु की जयकार बुलाओ ॥२॥

प्रार्थना —आशवन्दी गुरु तो दर आयी तुझ बिन ठौर न काई ।
तुम हरि दाता तुम हरि माता, मेरी आश पुजाई ॥
पाय पलव में पेरे प्यादी, आयी हेत मझाई ।
तन मन धन अर्दास करे मैं, माँगत नाम सनेही ॥
नाम तुम्हारा साबुन कर मैं, धोंसा पाप सभेई ।
कह टेऊँ गुरु लोक तीन में, आवागवन मिटाई ॥३॥

छपी हुई पुस्तकें

श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ–

	मूल्य रु० पै०
कथा नचिकेता यमराज	० – ५०
अमरापुर वाणी हिन्दी	१ – १२
अमरापुर वाणी सिन्धी	१ – ००
अमरापुर वाणी गुरुमुखी	१ – २५
जीवन चरित्र	० – १०
स्वामी टेऊँरामजी के महिमा के भजन	० – २५
कवितावली-छंदावली	० – ६०
दोहावली	० – ५०
ब्रह्म दर्शनी	० – ३०
कथा चूड़ाला रानी को	१ – २५

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

१. स्वामी टेऊँरामजी महाराज अमरापुर, स्थान समीप जी. पी. ओ., जयपुर–राजस्थान।

२. स्वामी टेऊँरामजी महाराज प्रेम प्रकाश आश्रम, भूपत वाला, हरिद्वार।

३. स्वामी बसन्तरामजी प्रेम प्रकाश आश्रम, प्रेम प्रकाश मार्ग, दिल्ली गेट, अजमेर।

४. स्वामी माधवदासजी प्रेम प्रकाश आश्रम, आदर्श नगर, अजमेर।

५. स्वामी शान्तिप्रकाशजी प्रेम प्रकाश आश्रम, कल्याण कैम्प नं० ५, बाम्बे।

६. स्वामी चन्दनरामजी प्रेम प्रकाश आश्रम, १६ अग्रवाल कालोनी, पूना–२।

७. स्वामी जयप्रकाशजी प्रेम प्रकाश आश्रम, C/2 रूम नं० ३७–३८ मलका गंज कालोनी सब्जी मण्डी, दिल्ली–६।

८. स्वामी अर्जुनदेवजी प्रेम प्रकाश आश्रम, जमादार की गोठ, (लश्कर) ग्वालियर।

९. स्वामी टेऊँरामजी महाराज प्रेम प्रकाश आश्रम, श्रीपुरा कोटा।

१०. स्वामी हरिप्रकाशजी प्रेम प्रकाश आश्रम, मकान नं० ३३७७, गुलाबखाना गली, आगरा।

११. स्वामी ऊधवदासजी प्रेम प्रकाश आश्रम, ब्लाक नं० ६५०, सरदार नगर, अहमदाबाद।

१२. स्वामी जीवनमुक्तजी प्रेम प्रकाश आश्रम, खैरथल मण्डी, अलवर।

१३. श्री गागनदास जे० सचानन्दाणी प्रेम प्रकाश मण्डली, भाग्यानगर, सिटी लाइट सिनेमा के पीछे शिवाजी पार्क–५ दादर बाम्बे।

विजय आर्ट प्रिंटिंग प्रेस, जयपुर